बरसात और आवारा

द रेन, बीच कॉम्बर का हिंदी अनुवाद

सॉमरसेट मॉम

बरसात और आवारा

['दी रेन' और 'दि बीच कम्बर' का रूपान्तर]

●

सॉमरसेट मॉम

सोल एजेंट्स
कि ता ब म ह ल
इलाहाबाद, दिल्ली, बम्बई
१९५८

अनुक्रम

बरसात

सोने का समय हो रहा था। कल उठते ही जमीन दिखाई पड़ने लगेगी। डा० मैकफेल अपना पाइप जलाकर रेलिंग पर झुक, आकाश की ओर देखने लगे। दो वर्ष तक लगातार युद्ध में ही रहने के बाद वे घर लौट रहे थे। उनका घाव, जिसके भरने में काफी देर लग गई थी, अब अच्छा हो गया था। वे एपिया में कम-से-कम साल भर तक शान्ति से रह सकेंगे, उन्होंने संतोष की एक साँस ली। कुछ यात्री दूसरे दिन पेगो-पेगो उतरने वाले थे, इसलिए उन्होंने नृत्य का आयोजन किया था। डाक्टर के कानों में अभी तक प्यानो की कर्कश ध्वनि गूँज रही थी। उस समय डेक पर शान्ति थी। दूर पर उन्होंने अपनी पत्नी को डेविडसन परिवार के साथ बातें करते देखा। वे स्वयं भी उधर ही चल पड़े। उन्होंने अपना हैट उतारा, और लोगों के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गये। अब उनके चेहरे पर रोशनी पड़ रही थी। चेहरा, लाल झुर्रीदार और बाल लाल थे, जो उनके सिर के बीच के सफाचट हिस्से को छोड़ कर, सारे सिर पर बिखरे हुए थे। उनकी अवस्था चालीस की होगी। लम्बा, पतला शरीर, और चुचके चेहरे पर गर्व-भरा घाव। वे बहुत धीरे-धीरे ठहर-ठहर कर बोलते थे। उनकी बोली से कोई भी उनके स्काच होने का अन्दाज़ लगा सकता था।

डा० मैकफेल और डेविडसन परिवार की घनिष्ठता का कारण उनके स्वभावों की साम्यता न होकर, जहाज का लम्बा सफर था। डेविडसन पादरी थे। उन दोनों की मित्रता का सबसे बड़ा आधार यह था, कि दोनों ही उन सहयात्रियों को, जो अधिकतर पोकर और ब्रिज के खेलों में

मस्त रहते थे, हेय दृष्टि से देखते थे। श्रीमती मैकफेल को इस बात का अभिमान भी था कि जहाज पर सिर्फ वे ही लोग थे, जिनसे डेविडसन परिवार की मित्रता हुई थी। डाक्टर का दृष्टिकोण भी इससे भिन्न न था। डाक्टर कुछ संकोची थे, पर उन्हें वाद-विवाद में मजा आता था।

श्रीमती डेविडसन कह रही थीं, कि अगर हम लोग जहाज में न होते, तो उनके दिन ही न कटते, श्रीमती मैकफेल बोलीं—सचमुच वे कह रही थीं कि जहाज के लोगों में सिर्फ हम ही लोग ऐसे हैं, जिनसे वे मिलना चाहती हैं।

मेरी समझ में नहीं आता, कि पादरियों में क्या सुर्खाब के पर लगे होते हैं?

इसमें सुर्खाब के पर की क्या बात है? तुम्हीं सोचो, क्या उनका उन तमाम शराबियों और जुआरियों से घनिष्ठ होना अच्छा होता?

पर ईसू मसीह तो इतने एकान्त-प्रिय न थे, डाक्टर मैकफेल हँस कर बोले।

मैंने तुमसे कितनी बार कहा है, कि मुझे धार्मिक बातों में मजाक अच्छा नहीं लगता। कभी तुम्हें दूसरों में अच्छाइयाँ भी नजर आती हैं? न जाने कैसा स्वभाव है तुम्हारा?

डाक्टर ने अपनी पत्नी पर एक दृष्टि डाली, और चुप रह गये। इतने सालों के विवाहित जीवन में वे अच्छी तरह सीख चुके थे कि यदि शान्ति कायम रखनी हो तो अपनी पत्नी की आखिरी बात स्वीकार कर लेना ही श्रेष्ठ है। उन्होंने सोने के लिये कपड़े बदले, और ऊपर के अपने बर्थ पर जाकर लेट कर, कुछ पढ़ते हुए, नींद बुलाने का प्रयत्न करने लगे।

दूसरे दिन जब वे डेक पर गये, तो जहाज स्थल के करीब पहुँच रहा था। उन्होंने जमीन पर एक अनुरागभरी दृष्टि डाली। हरियाली से

ढकी हुई पहाड़ियाँ, और चाँदी की तरह चमचमाता हुआ बलुआ तट था, जो धीरे-धीरे ऊँचा होता गया था। मोटे-मोटे हरे-भरे नारियल के वृक्षों की कतार पानी के किनारे तक चली आई थी और जंगली सोमोन लोगों के पास के घर और छिट-पुट, बिखरे हुए सफेद, छोटे-छोटे गिरजे बीच-बीच में दिख जाते थे।

श्रीमती डेविडसन आ कर, उनके पास खड़ी हो गईं। उनके तमाम कपड़े काले थे, और गर्दन में एक सोने का लाकेट पड़ा हुआ था, जिसके बीचोबीच क्रास का चिन्ह था। श्रीमती डेविडसन का क़द छोटा था। अपने भूरे बालों को उन्होंने बड़े यत्न से सँवारा था और सुनहरे फ्रेम के चश्मे ने उनकी नीली आँखों को छिपा रक्खा था। उनके लम्बे चेहरे से जागरूकता टपकती थी। उनकी कर्कश आवाज उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी, जो कान में तन्तुओं को झिंझोड़-सा देती है।

आपको तो यह घर-सा ही लगता होगा ? डाक्टर मैकफेल ने मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए कहा।

मेरी जन्मभूमि के टापुओं का धरातल यहाँ से नीचा है। यह तो ज्वालामुखियों की भूमि है। वहाँ तक पहुँचने के लिए यहाँ से दस दिन का सफर करना होता है।

फिर भी कम-से-कम यह आपके लिये दूसरे मुहल्ले-सा तो है ही।

इसमें काफी अतिशयोक्ति है, फिर भी प्रशान्त सागर में दूरी का दृष्टिकोण ही अलग होता है, यह मैं मानती हूँ।

डाक्टर मैकफेल ने एक लम्बी साँस ली।

कितनी अच्छी बात है, कि हमें यहीं नहीं रुकना है, वे कहती गईं, लोग कहते हैं, कि यहाँ कार्य कर सकना असम्भव है! आते-जाते सभी जहाज यहाँ ठहरते हैं और यहाँ का जीवन काफी अशान्त रहता है। यहाँ के निवासी काफी बिगड़े हुए हैं। हमारे यहाँ यह बात नहीं है।

अपनी नाक पर मजबूती से ऐनक जमाते हुए उन्होंने कड़ी दृष्टि से उन हरे-भरे टापुओं को देखा।

डेविडसन का कार्य-क्षेत्र समोआ टापू के उत्तर के कुछ छोटे-छोटे टापुओं में था, जो एक-दूसरे से काफी दूर थे। इसलिये अक्सर उन्हें नावों से सफर करना पड़ता था। उनकी अनुपस्थिति में श्रीमती डेविडसन ही मिशन का काम सँभालती थीं। वहाँ के मूल निवासियों की अनैतिकता और बुराइयों पर वे इतने जोरदार ढंग से बातें करती थीं, कि भय उत्पन्न होने लगता था। अश्लीलता का उनका माप-दण्ड भी निराला था। पहले एक बार डाक्टर से उन्होंने कहा था—क्या आप जानते हैं कि जब हम पहले-पहल वहाँ पहुँचे थे, उस समय वहाँ के निवासियों के विवाह का ढंग, कितना भद्दा और अश्लील था? मैं आपसे तो कह नहीं सकूँगी, पर आपकी पत्नी को बता दूँगी। आप उनसे पूछ लीजियेगा।

इसके बाद उन्होंने देखा कि वे घंटों उनकी पत्नी से सिर जोड़ कर बातें करती रही थीं। रह-रहकर श्रीमती डेविडसन की उत्तेजना-भरी फुसफुसाहट उनके कानों में आ टकराती थी। उनकी पत्नी उत्सुक भाव से मुँह खोले, उनकी बातें सुन रही थीं। रात में अपने केबिन में आने पर, उनकी पत्नी ने उन्हें सब बताया था।

मैंने आप से क्या कहा था? दूसरे दिन श्रीमती डेविडसन डाक्टर से बोलीं—क्या आपने पहले कभी ऐसी बातें सुनी थीं? अब आप समझ गये होंगे, कि क्या आप से ये बातें मैं कह सकती थी।

श्रीमती डेविडसन बड़े गौर से डाक्टर के चेहरे को देख रही थीं, यह जानने के लिये कि आया उनकी बातों का मनचाहा असर उन पर हुआ या नहीं।

जब हमने पहले-पहल जाकर वहाँ की दशा देखी, तो हमारे दिल बैठ गये। क्या आप विश्वास करेंगे, कि किसी गाँव में एक भी सच्चरित्र

लड़की पा सकना असम्भव था? मैंने और मिस्टर डेविडसन ने इस पर खूब विचार किया, और इस नतीजे पर पहुँचे, कि सबसे पहले हमें वहाँ के निवासियों के नाचों को बन्द करना होगा। वहाँ के लोग नाच के पीछे पागल रहते हैं।

जब मैं युवक था, तो मुझे भी कम-से-कम नाच से नफरत न थी, डा० मैकफेल बोले।

यह तो मैं तभी समझ गई थी, जब कल रात आपने अपनी पत्नी से नाचने का प्रस्ताव किया था। मैं पति-पत्नी के साथ नाचने को बुरा नहीं समझती। फिर भी जब आपकी पत्नी ने आपकी बात स्वीकार नहीं की, तो मुझे खुशी ही हुई थी। ऐसी स्थितियों में यही बेहतर समझती हूँ, कि अलग ही रहा जाय।

कैसी स्थितियों में?

श्रीमती डेविडसन ने उन पर एक तीव्र दृष्टि डाली, और कोई उत्तर न दिया।

फिर गोरे लोगों की बात अलग है, वे कहती गईं—पर वहाँ भी मैं मिस्टर डेविडसन से सहमत हूँ जो कहते हैं, कि लोग किस तरह अपनी पत्नियों को दूसरे के बाहुओं में देखकर गवारा करते हैं, मेरी समझ में नहीं आता है। जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं तो अपने विवाह के बाद एक बार भी किसी नाच में सम्मिलित नहीं हुई। यहाँ के मूल-निवासियों का नृत्य अनैतिक है, और अनैतिकता फैलाने में सहायता करता है। पर ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद है कि हमने अपने क्षेत्र से इसकी जड़ खोद फेंकी है। आठ सालों से हमारे क्षेत्र में किसी ने नृत्य में भाग नहीं लिया।

अब जहाज बन्दरगाह में दाखिल हो रहा था। श्रीमती मैकफेल भी उन लोगों के पास आ गईं। जहाज की रफ़्तार धीमी हो चली थी।

बन्दरगाह काफी कुशादा था, और तीन तरफ जमीन से घिरा हुआ था, और उसके चारों तरफ हरी-भरी पहाड़ियाँ नजर आती थीं। सामने के एक बाग में वहाँ के गवर्नर का बँगला था। दो-तीन साफ-सुथरे बँगलों और एक टेनिस लान को पीछे छोड़कर, वे आगे बढ़ रहे थे। श्रीमती डेविडसन ने एक तरफ तीन सौ गज की दूरी पर एक पहाड़ी की ओर इशारा किया। यही जहाज उन्हें ऐपिया ले जाने वाला था। जहाज के रुकते ही, वहाँ के उत्सुक निवासियों ने उसे घेर लिया। कुछ उत्सुकतावश आये थे और कुछ सिडनी जाने वाले यात्रियों से चीजों की अदला-बदली करने के लिये। वे सेब, केले के बड़े-बड़े गुच्छे, कपड़े, घुँघचियों की माला और लड़ाई के जहाजों के खिलौने इत्यादि का आदान-प्रदान कर रहे थे। साफ-सुथरे और फैशनेबुल अमरीकन यात्री उनके बीच चहलकदमी कर रहे थे। कुछ अफसर भी इधर-उधर टहल रहे थे। जब तक उनका सामान उतारा जाता रहा, मैकफेल और डेविडसन भीड़ को देखते रहे। डाक्टर गौर से वहाँ के निवासियों को देख रहे थे। बहुत से बच्चों और जवानों के शरीरों पर जख्म थे। पहले-पहल उन्होंने फील-पाँव के रोगी यहीं देखे। अत्यधिक मोटे पड़ गये पैर या हाथ लिये, लोग फिर रहे थे। पुरुष और स्त्रियाँ, सभी लावा-लावा (दक्षिणी टापुओं के निवासियों के घास के बने लहँगे, विशेष वस्त्र) पहने हुए थे।

यह कितना वाहियात लिबास है, श्रीमती डेविडसन बोलीं—मिस्टर डेविडसन कहते हैं, कि लावा-लावा का इस्तेमाल कानूनन बन्द कर देना चाहिये। जो लोग सिर्फ कमर में घास का घाघरा लपेटे रहते हैं, उनसे नैतिक होने की आशा कैसे की जा सकती है?

डाक्टर ने माथे का पसीना पोंछते हुए कहा, 'पर यह यहाँ की जलवायु के अनुकूल है।'

अब वे जमीन पर थे। अभी सुबह ही थी, पर वहाँ गर्मी असहनीय

थी। चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा रहने के कारण पेगू-पेगू टापू हवा बन्द-सा था।

अपने टापुओं में, श्रीमती डेविडसन अपनी ऊँची आवाज में बोलीं—तो हमने लावा-लावा का इस्तेमाल करीब-करीब बन्द करवा दिया है। हाँ कुछ बूढ़े मनुष्य अवश्य अब भी पहन लेते हैं। औरतें तो सभी स्कर्ट पहनने लगी हैं और मर्द पैन्ट इस्तेमाल करने लगे हैं। अपनी पहली रिपोर्ट में मिस्टर डेविडसन ने लिखा था, कि यहाँ के निवासी तब तक सच्चे इसाई कभी नहीं हो सकते, जब तक दस साल की उम्र से अधिक के हर लड़के को पैन्ट पहनने को मजबूर न किया जायगा।

सहसा श्रीमती डेविडसन भूरे-भूरे भारी बादलों को देखने लगीं, जो धीरे-धीरे आसमान पर छाते जा रहे थे! कुछ बूँदें भी पड़ने लगीं।

हम साये में हो जायँ, तो अच्छा हो, उन्होंने कहा।

भीड़ के साथ भागते हुए, वे भी एक शेड में जा घुसे। अब मूसलाधार बारिश होने लगी थी। कुछ देर के बाद, मिस्टर डेविडसन भी वहीं आगये। डेविडसन में अपनी पत्नी की-सी सामाजिकता न थी, इसलिए अपना अधिक समय वे पढ़ने में ही लगाते थे। वे गुम-सुम प्रकृति के मनुष्य थे और लोगों से मिलने-जुलने से घबराते थे। उनका व्यक्तित्व भी असाधारण था। कद लम्बा, ढीलेपन से जुड़े अंग, बैठे हुए गाल, उभरी हड्डियाँ और मोटे होंठों वाला चेहरा। उनकी आँखें अन्दर धँसी हुई और काली थीं, जिनमें सदैव एक उदासीनता का भाव झाँका करता था। उनके हाथों की लम्बी उँगलियाँ उनकी शक्ति की परिचायक थीं। उनके बाल लम्बे थे। उनके तमाम व्यक्तित्व से एक दबी आग का आभास फूटा पड़ता था। संक्षेप में वे ऐसे व्यक्ति थे, जिनके साथ घनिष्ठता असम्भव थी।

वे एक बुरी खबर लेकर आये थे। टापू के कनका-वासियों में खतरनाक खसरे का रोग फैला हुआ था, और उस जहाज का एक खलासी

भी बीमार पड़ गया था, जो उन्हें ऐपिया ले जाने वाला था। बीमार खलासी अस्पताल में भरती कर दिया गया था। पर ऐपिया से तार आया था, कि तब तक उस जहाज को ऐपिया में न आने दिया जायगा, जब तक इसका विश्वास न हो जाय, कि जहाज के दूसरे खलासियों पर उस छुतहे रोग का असर नहीं हुआ है।

इसका मतलब यह है, कि हमें कम-से-कम दस दिन यहीं पड़े रहना पड़ेगा।

लेकिन मेरा फौरन ऐपिया पहुँचना जरूरी है, डाक्टर मैकफेल बोले।

पर चारा ही क्या है? अगर कुछ दिनों तक जहाज के लोगों में कोई और बीमार न पड़ा तो गोरे यात्रियों को जाने की आज्ञा मिल जायगी। यहाँ के निवासियों का सफर तीन महीने के लिये बन्द कर दिया गया है।

यहाँ कोई होटल है? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

डेविडसन हँस पड़े।

कोई नहीं।

तो हम क्या करेंगे?

मैं यहाँ के गवर्नर से मिल चुका हूँ। सुनते हैं, कि कोई व्यापारी किराये पर कमरा देता है। वर्षा बन्द होते ही हम वहाँ चलेंगे। तकलीफ या आराम का तो कोई सवाल ही नहीं है। अगर एक बिस्तर, और सिर पर साया मिल जाय, तो हमें अपने को भाग्यवान समझना चाहिए।

पर देर तक वर्षा के रुकने का कोई चिन्ह नहीं दिखा। अन्त में बर्साती पहन कर, छाते खोल कर, उन्हें रवाना होना ही पड़ा। सिर्फ कुछ अफसरों के घरों की एक छोटी-सी बस्ती थी। दो-एक गोदाम, पीछे नारियल के दरख्तों की कतार, मूल निवासियों की दो-एक बस्तियाँ—बस यही कुल कस्बा था। जहाँ उन्हें मकान मिलने की आशा थी, वह मुश्किल से पाँच मिनट का रास्ता था। वह एक दुमंजिला मकान था। ऊपर लोहे की छत

थी और दोनों तलों के सामने चौड़े-चौड़े बरामदे थे। मालिक हाल्फ वर्णसंकर था। उसकी पत्नी वहीं की निवासिनी थी, जो भूरे-भूरे बच्चों से घिरी रहती थी। नीचे के हिस्से में उसका एक गुदाम था। वह चमड़े और रुई इत्यादि का व्यापार करता था। जो कमरा उसने उन्हें दिखाया, उसमें एक टूटी चारपाई, तार-तार हो रही मच्छरदानी, एक चरमराती कुर्सी और एक हाथ धोने के बर्तन के अलावा कुछ न था। उन्होंने निराशा भरी दृष्टि से चारों ओर देखा। वर्षा थमने का नाम नहीं ले रही थी।

मैं सिर्फ उतना ही सामान खोलती हूँ, जितने के बिना काम न चलेगा, श्रीमती मैकफेल बोलीं।

जैसे ही वे एक बैग बन्द कर रही थीं, श्रीमती डेविडसन ने कमरे में प्रवेश किया। वे काफी सजग और प्रसन्न दिख रही थीं, जैसे वहाँ के उदासी-भरे वातावरण का उनके ऊपर कोई असर न हुआ हो।

अगर मेरी बात मानो, तो सुई-डोरा लेकर मसहरी की मरम्मत में लग जाओ, वर्ना रात में पलक झपकाना तक नसीब न होगा।

क्या इतने मच्छर हैं यहाँ? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

यही तो उनका मौसम है। जब तुम ऐपिया के गवर्नमेन्ट हाउस में किसी दावत में जाओगी, तो देखोगी कि भी समहिलाओं को एक खोल दिया जाता है, और वे अपना निचला धड़ उसमें डाल लेती हैं।

काश, थोड़ी देरी के लिये वर्षा रुक जाती। श्रीमती मैकफेल बोलीं—तो मैं अधिक उत्साह से इस जगह को रहने योग्य बनाती।

अगर इसका इन्तजार करोगी, तो इन्तजार ही करती रह जाओगी। पेगू-पेगू की वर्षा प्रसिद्ध है। यहाँ की पहाड़ियाँ और खाड़ियाँ अधिक-से-अधिक बादलों को आकर्षित करती हैं, और यहाँ हर समय वर्षा का समय रहता है।

श्रीमती मैकफेल हतबुद्धि-सी खड़ी, बेबसी से उनकी ओर देख रही थीं,

और दाँतों से होठ काट रही थीं। श्रीमती डेविडसन ने निश्चय किया, कि कमरे का इन्तजाम उन्हें ही करना होगा।

अच्छा, जरा मुझे सुई-डोरा दो। मैं तुम्हारी मसहरी अभी ठीक किये देती हूँ। तब तक तुम अपना सामान खोल कर ठीक-ठाक कर लो। इसके बात हम खाने पर बैठेंगे। डाक्टर, तब तक जरा देख लो, कि तुम्हारे भारी सामान ठीक से रखे हैं न? यहाँ के निवासी तो उन्हें वर्षा में डाल देने में भी संकोच न करेंगे।

डाक्टर ने अपनी बरसाती ली, और सीढ़ियों से नीचे उतर गये। दरवाजे पर मिस्टर हार्न कुछ लोगों से बातें कर रहे थे। उनमें एक दुबला-पतला, गंदा, सूखा-सा मनुष्य भी था, जिसे उन्होंने जहाज में कई बार देखा था। उसने डाक्टर को नमस्कार करके कहा—यह खतरनाक बीमारी भी क्या बेवक्त फैली। डाक्टर, आप को तो ठहरने की ठीक जगह मिल गई है न?

डाक्टर को इस तरह घनिष्ठता से सम्बोधित किया जाना बुरा लगा, लेकिन वह चुप रहे।

हाँ, ऊपर एक कमरा मिल गया है।

मिस थाम्पसन को आप जानते होंगे? वे भी आप वाले जहाज से ही एपिया जाने वाली थीं। वे भी यहीं ठहरेंगी और उस आदमी ने अपनी बगल में खड़ी हुई एक स्त्री की तरफ अँगूठे से इशारा किया।

उसकी अवस्था सत्ताइस साल की होगी। मोटा बदन था उसका। उसे असुन्दर नहीं कहा जा सकता था। उसने सफेद कपड़े पहन रखे थे और सिर पर एक चौड़ी, सफेद टोपी लगा रखी थी। उसके सफेद जूतों के ऊपर सूती मोजों के नीचे उसके मोटे, भरे-भरे टखने झलक रहे थे। उसने मुस्करा कर, डाक्टर की ओर देखा और कहा—देखा आपने? एक दर्बे-जैसे कमरे के लिए मुझसे डेढ़ डालर रोज माँग रहा है। उसकी आवाज तेज थी।

दूसरा मनुष्य हार्न से बोला—मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूँ, कि यह मेरी परिचित है। यह एक डालर से अधिक न देगी। तुम्हें उसे कमरा देना ही पड़ेगा।

चिकने और मोटे चेहरे वाला व्यापारी हार्न मुस्कराया। अगर ऐसी बात है, तो मैं जरा अपनी पत्नी से पूँछ लूँ। वह मान जायगी, तो मैं एक ही डालर ले लूँगा।

यह हथकंडे रहने दो, मिस थाम्पसन बोली—यह तय रहा कि मैं तुम्हें एक डालर रोज कमरे का दूँगी। इससे ज्यादा एक कौड़ी नहीं।

डाक्टर मुस्कराये। उसका मोल-तोल करने का सीधा ढंग उन्हें पसन्द आया। वे स्वयं मोल-भाव बिल्कुल नहीं कर पाते थे। मोल-भाव करने के बजाय वे अधिक दे डालना पसन्द करते थे। हार्न ने एक लम्बी साँस ली।

खैर, मिस्टर स्वान का ख्याल करके मैं माने लेता हूँ।

ठीक, मिस थाम्पसन बोलीं—अब अन्दर चलो और जरा मेरा बैग मँगवा लो। उसमें कुछ अच्छी शराब है। हम लोग एक-एक पेग लें। डाक्टर, आप भी आइये।

धन्यवाद, मुझे माफ कीजिये। मैं यह देखने जा रहा हूँ कि मेरा सामान ठीक से रख दिया गया या नहीं।

यह कहते-कहते डाक्टर वर्षा में ही बाहर निकल गये। मूसलाधार बारिश हो रही थी। बन्दरगाह धुँधला-सा दिखाई दे रहा था। उन्होंने वहाँ के कुछ निवासियों को नंगे बदन, सिर्फ लावा-लावा कमर में लपेटे चौड़े-चौड़े छाते लिये चलते देखा। वे बड़ी लापरवाही से धीरे-धीरे चल रहे थे। डाक्टर को देखकर, वे मुस्कराये और कुछ ने अपनी भाषा में उन्हें सलाम भी किया।

जब वे लौटे तो खाने का समय हो गया था। खाने का कमरा कुछ

बन्द-सा था। वहाँ मनहूसियत-सी बरस रही थी। बीच-बीच एक मोमबत्ती लटक रही थी। सभी लोग मौजूद थे। सिर्फ मिस्टर डेविडसन का पता न था। श्रीमती डेविडसन बोलीं—वे गवर्नर से मिलने गये हैं। उन्होंने उन्हें खाने पर रोक लिया होगा।

एक छोटी-सी देशी लड़की खाना खिला रही थी। अंत में हार्न स्वयं यह देखने के लिए आया कि उन्हें किसी और चीज की जरूरत तो नहीं है?

हम लोगों के साथ रहने वाले सभी लोग खाने पर नहीं हैं? डाक्टर ने पूछा।

उसने सिर्फ कमरा लिया है। अपने लिए खाना वह स्वयं तैयार करेगी। मैंने उसे नीचे के हिस्से में कमरा दिया है, ताकि आप लोगों को कोई असुविधा न हो।

क्या वह हमारे जहाज में थी? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

जी हाँ! वह दूसरे केबिन में थी। उसे एपिया में एक बैंक में नौकरी मिल गई है।

अच्छा!

हार्न के चले जाने पर डाक्टर बोले—यहाँ के मनहूसी-भरे वातावरण में खाते समय भी कमरे में बन्द रहना आसान न होगा।

वह दूसरे केबिन में थी? मुझे जरा भी याद नहीं कि वह कौन हो सकती है। श्रीमती डेविडसन बोलीं।

जहाज का एक कर्मचारी स्वान उसे यहाँ लाया है। उसका नाम मिस थाम्पसन है।

अच्छा, तो कल रात को स्वान के साथ जो औरत नाच रही थी वही?

वही होगी, डाक्टर मैकफेल बोले—बड़ी तेज लगती है वह।

पर यह कोई अच्छी चीज तो नहीं है। श्रीमती डेविडसन ने भौहें सिकोड़ कर कहा।

बातचीत का विषय बदल गया। सुबह ही से व्यस्त रहने के कारण वे लोग बुरी तरह थक चुके थे। खाना खत्म होते ही सब सोने चल दिये।

दूसरी सुबह को जब वे लोग उठे, तो उस समय भी भूरे-भूरे बालों ने आकाश को ढँक रखा था। पर इस समय वर्षा नहीं हो रही थी। वे लोग उस सड़क पर टहलने को चल दिये, जो खाड़ी के समानान्तर अमरीकनों ने बनवाई थी।

टहल कर लौटते ही, उन्हें मिस्टर डेविडसन मिले, जो अभी-अभी लौटे थे। वे बड़े झुँझलाये स्वर में बोले—हो सकता है, कि हमें पन्द्रह दिन यहाँ रुकना पड़े। मैंने गवर्नर से बहस की, पर वह यही कहता रहा, कि कुछ नहीं हो सकता।

मिस्टर डेविडसन फौरन अपने काम पर पहुँचना चाहते हैं, कह कर श्रीमती डेविडसन ने परेशानी-भरी दृष्टि से अपने पति को देखा।

बरामदे में तेज-तेज कदमों से टहलते हुए, वे बोले—एक साल से मैं बाहर हूँ। और मिशन का सारा कार्य देशी लोगों के हाथ में है। पता नहीं, उन्होंने क्या किया। मैं उनके विरुद्ध कुछ नहीं कहता। कुछ तो सच्चे अर्थों में इसाई हैं, जो अपनी भक्ति और विश्वास में हमारे यहाँ के इसाईयों को भी मात कर सकते हैं। पर उनमें उत्साह की बड़ी कमी है। वे एक बार कोशिश करेंगे, दुबारा करेंगे, पर सदैव नहीं कर सकते। जब मिशन किसी देशी पादरी के हाथ में होता है, तो वह चाहे जितना अच्छा क्यों न, पर उसकी लापरवाही से मिशन में बुराइयाँ आ जाती हैं।

कहते-कहते मिस्टर डेविडसन सीधे खड़े हो गये। उनकी लम्बाई और पीले चेहरे में चमकती बड़ी-बड़ी आखें मिल कर कभी-कभी उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली बना देती थीं। उनकी भारी गूँजती आवाज और जोश में बोलते समय के इशारे उनकी इमानदारी के प्रमाण थे।

वहाँ पहुँचते ही मैं फौरन काम में जुट जाऊँगा। अगर पेड़ सड़ गया हो, तो उसे काटकर जला देना ही बेहतर है। मैं सभी बुराइयों के कारणों को छाँट दूँगा।

शाम के खाने के बाद चाय पीकर जब वे लोग बैठे, तो महिलाएँ बुनने का काम करने लगीं, और डाक्टर मैकफेल ने अपना पाइप सुलगाया। उस समय मिस्टर डेविडसन ने टापुओं में अपने कार्य की विस्तृत व्याख्या करनी शुरू की।

जब हम यहाँ पहुँचे, तो यहाँ के लोगों में पाप-पुण्य का कोई एहसास ही न था। ये सभी बुराइयाँ करते थे, और वे बुराइयाँ समझते ही न थे। मेरे लिये सब से कठिन काम यही था, कि वे पाप को पाप समझने लगें।

मैकफेल को मालूम था, कि डेविडसन पाँच साल तक सोलेमन्स टापुओं में काम कर चुके थे। उनकी पत्नी चीन में मिशनरी का काम करती थीं। बोस्टन में दोनों की मुलाकात हुई, जहाँ वे एक मिशन कांफ्रेंस में आये हुए थे। दोनों के जीवन का उद्देश्य एक था, इसलिए जल्द ही वे विवाह-सूत्र में बँध गये। विवाह के बाद ही दोनों की नियुक्ति इन टापुओं में हुई, जहाँ वे बराबर मेहनत से काम कर रहे थे।

इस बातचीत के दौरान में एक चीज साफ हो गई। वह यह कि मिस्टर डेविडसन कभी हिम्मत न हारने वाले, साहसी व्यक्ति थे। वे मिशन के डाक्टरी विभाग में थे। इसलिए उन छोटे-छोटे टापुओं के समूहों में से (जिनमें उनका क्षेत्र था) किसी में भी किसी समय में उनका बुलावा आ सकता था और वर्षा के दिनों में दक्षिणी प्रशान्त सागर में ऐसे तूफान उठते हैं, कि ह्वेल के शिकार के बजरे भी सुरक्षित नहीं रहते। ऐसे समयों में अकसर डेविडसन नावों में ही चल पड़ते थे। बीमारी या दुर्घटना की खबर सुनकर, वे फौरन चल देने में कभी नहीं हिचकते थे। अक्सर श्रीमती डेविडसन उनके लौटने के सम्बन्ध में निराश हो जाती थीं, और समझ लेती थीं, कि तूफान ने उनका काम तमाम कर दिया होगा।

अक्सर मैंने इन्हें कितना रोका है, कि मत जाओ, या कम से कम तूफान रुक जाने दो, पर इन्होंने मेरी कभी नहीं सुनी। जब एक बार निश्चय कर लें तो इन्हें कोई नहीं रोक सकता। श्रीमती डेविडसन बोलीं।

अगर मैं स्वयं ईश्वर पर भरोसा न कर सकूँ, तो मैं किस मुँह से देशी लोगों को उपदेश दूँगा कि वे ईश्वर पर भरोसा करें? डेविडसन ने जरा जोर से कहा—वे जानते हैं कि जब अपनी तकलीफ में उन्होंने मुझे बुलाया है, तो यदि यह मनुष्य की शक्ति से परे नहीं है, तो मैं जरूर पहुँचूँगा और फिर क्या तुम समझती हो कि सर्वशक्तिमान ईश्वर उस समय मेरा साथ छोड़ देगा, जब कि मैं उसके ही काम के लिए जा रहा हूँ? जब उसकी मर्जी के बिना एक पत्ता तक नहीं हिल सकता तो क्या ये तूफान और समुद्री लहरें उसकी मर्जी के बिना कुछ कर सकती हैं?

डाक्टर मैकफेल कच्चे दिल के आदमी थे। जब लड़ाई के मोर्चे पर वे कठिन आपरेशन करते होते थे, तो अपने काँपते हाथ को साधने के प्रयत्न में उनके माथे से पसीना टपक-टपक कर उनकी ऐनकों के शीशों को धुँधला कर देता था। डेविडसन की ओर देखकर वे जरा-सा सिहर उठे।

काश, मैं भी कह सकता, कि मैं कभी भयभीत नहीं हुआ!

काश, तुम ईश्वर पर विश्वास कर सकते! पादरी ने कहा।

पता नहीं क्यों, पादरी के विचार अतीत के उन दिनों पर केन्द्रित हो रहे थे, जो उन्होंने अपनी पत्नी के साथ पहले-पहल इन टापुओं पर बिताये थे।

अक्सर मैं और मेरी पत्नी एक-दूसरे को देखते, और हमारी आँखें भर आतीं। दिन-रात हम धर्म-प्रचार में जुटे रहते थे, पर स्थित में कोई सुधार नहीं हो पाता था। अगर ये मेरे साथ न होतीं, तो शायद मैं कुछ कर न पाता। अकसर जब मैं निराश हो उठता था, तो ये मुझे दिलासा देती थीं, और फिर से हिम्मत बँधाती थीं।

श्रीमती डेविडसन नज़रें झुकाये, कुछ बुन रही थीं। उनका दुबला चेहरा कुछ तमतमा उठा। उनके हाथों में हल्का-सा कंपन आ गया, और उनका गला रुँध-सा गया।

कोई हमारी सहायता करने वाला न था। अपने सजातियों से हजारों मील दूर हम ऐसे लोगों के बीच पड़े थे, जिनके जीवन में प्रकाश की एक किरण तक न झाँकी थी। जब मैं निराश हो उठता था, तो ये अपना काम अलग रख देती थीं, और बायबिल उठा कर मुझे सुनाने लगती थीं। तब उन अलौकिक शब्दों से धीरे-धीरे आशा की नई किरणें मेरे हृदय में जगमगा उठती थीं और अन्त में ये पुस्तक बन्द करते हुए, कहती थीं— वे चाहें या न चाहें, हम उनकी आत्माओं को पाप से बचायेंगे और प्रभु हमारी मदद करेंगे! मुझमें एक नयी शक्ति आ जाती, और मैं बोल उठता— हाँ, ईश्वर की सहायता से मैं उनकी आत्माओं को शुद्ध करने में अवश्य सफल हूँगा!

वे उठ कर, मेज के सामने आ गये। जैसे वे प्लेटफार्म पर लेक्चर देने को खड़े हो गये हों। अब आप लोग समझ गये होंगे। सबसे मुश्किल काम था, उन्हें पाप को पाप समझाना, सिखाना—पाप, जो कि उनके रोज के व्यवहारों में घुल-मिल चुके थे। हमें उनके उन कार्यों का पाप बताना था, जो उनके लिये स्वाभाविक थे। झूठ बोलना, चोरी करना, नंगे रहना और पत्नी को छोड़कर किसी और स्त्री का साथ करने के अलावा मैंने लड़कियों के लिये अपनी छाती खोले रहना और मर्दों का पट न पहनना इत्यादि भी पापों में शामिल कर लिया और मैं कर ही क्या सकता था?

पर लोग यह सब मानने को राजी कैसे हो गये? डाक्टर ने कहा।

मैंने लोगों पर जुर्माना करना शुरू किया। उन्हें समझाने का यही अच्छा तरीका था। अगर कोई पाप करता है, तो उसे सजा भी मिलनी चाहिये। ऐसे ही पाप का ख्याल उनके दिमाग में जम सकता था। दूसरा

कोई तरीका न था। अगर वे ठीक से कपड़े नहीं पहनते थे, तो मैं उन पर जुर्माना करता था। अगर वे नाचते थे, तो मैं उन पर जुर्माना करता था। हर पाप के लिये या तो रुपये का या शारीरिक-श्रम का जुर्माना अदा करना पड़ता था। और धीरे-धीरे उनमें समझ आती गई।

वह जुर्माना देने से इनकार नहीं करते थे क्या ?

मिस्टर डेविडसन के विरोध में खड़े होने के लिये बड़ा मजबूत कलेजा चाहिए। श्रीमती डेविडसन ने अपने होठों को सिकोड़ते हुए कहा।

डाक्टर मैकफेल की ओर देखा।

डेविडसन बोले—बात यह थी, कि मैं उन्हें गिरजे की सदस्यता से निकाल सकता था।

और क्या इसका उन पर बड़ा असर पड़ता था ? डाक्टर बोले।

क्यों नहीं ? चर्च की सदस्यता से निकाले जाने का मतलब था, कि वे अपना कपड़ा किसी को नहीं बेच सकते थे। जब मछलियाँ मारी जातीं, तो उनका हिस्सा नहीं लगता था। चर्च से निकाले जाने का मतलब था भूखों मरना। समझे आप ? इसका मनचाहा असर होता था।

इन्हें फ्रेड ओलसन की बात बताओ, श्रीमती डेविडसन बोलीं।

डेविडसन ने अपनी जोशीली आँखें डाक्टर पर जमा दीं, और कहा—फ्रेड ओलसन एक डेनिश व्यापारी था। बहुत लम्बे अरसे से वह इन टापुओं में रह चुका था। वह काफी संपन्न व्यक्ति था। जब हम यहाँ पहुँचे, तो उसे अच्छा न लगा। वह खूब मनमानी करता था। देशी माल जिस भाव में चाहता लेकर, बदले में सस्ती चीजें या शराब देता था। वह पक्का शराबी था। उसने एक देसी औरत रख ली थी, पर उसे सदैव धोखा दिया करता था। मैंने उसे एक मौका दिया, कि वह अपना सुधार कर ले। पर वह हँसकर रह गया। उसने मेरी सलाह नहीं मानी।

अन्तिम बात कहते-कहते डेविडसन की आवाज कुछ तेज हो गई। वे एक-दो क्षण चुप रहने के बाद, बोले—दो साल में ही वह बर्बाद हो

गया। आधी शताब्दी से उसने जो कुछ जोड़ रखा था, सब निकल गया। सारा व्यापार चौपट हो गया और अन्त में एक भिखारी की तरह मेरे पास आकर उसने मुझसे सिडनी वापस जाने का किराया माँगा।

काश, आपने उसे उस समय देखा होता, जब वह डेविडसन के पास आया था! श्रीमती डेविडसन बोलीं—वह काफी मोटा-ताजा व्यक्ति था, पर उस समय आधा रह गया था। वह बुरी तरह काँप रहा था। सहसा जैसे वह बूढ़ा हो गया हो।

डेविडसन बाहर की ओर देखने लगे। वर्षा फिर शुरू हो गई थी।

सहसा चीते के से तेज स्वरों में एक बाजारू प्रेम के गाने के स्वर आने लगे। कोई ग्रामोफोन बजा रहा था।

'यह क्या?' वे बोले।

श्रीमती डैविडसन ने चश्मे को मजबूती से अपनी नाक पर जमाया। दूसरे केबिन वाली एक औरत ने यहीं कमरा लिया है न। मैं समझती हूँ, कि यह ग्रामोफोन उसी का है।

वे खामोशी से सुनते रहे। थोड़ी देर के बाद नीचे के कमरे से नाचने की आवाज भी आने लगी। गाना रुक गया, और शराब की बोतलों से शराब ढाली जाने की आवाजें वातावरण में उभरीं, और फिर ऊँचे स्वरों में बातें करने और कहकहों की ध्वनियाँ सुनाई पड़ने लगीं।

शायद वह अपने दोस्तों की (जहाज के दोस्तों की) दावत कर रही है, डाक्टर मैकफेल बोले—जहाज बारह बजे यहाँ से छूटता है न!

डेविडसन ने खामोशी से अपनी घड़ी पर दृष्टि डाली।

चलती हो? उन्होंने अपनी पत्नी से पूछा।

हाँ, उनकी पत्नी ने अपना बुनने का सामान समेटते हुए, कहा।

अभी ही सोने चल दिये! अभी तो बहुत जल्दी है—डाक्टर बोले।

अभी हमें अध्ययन करना है, श्रीमती डेविडसन बोलीं—हम कहीं भी

रहें पर सोने से पहले बायबिल का एक अध्याय अवश्य पढ़ते हैं। और सिर्फ पढ़ते ही नहीं, उस पर विचार-विनिमय भी करते हैं।

उनके जाने के बाद, डाक्टर और उनकी पत्नी यहाँ अकेले रह गये। दो-तीन मिनट तक वे खामोश रहे।

कहो, ताश लायें ? डाक्टर ने पूछा।

श्रीमती मैकफेल ने संकुचित दृष्टि से उन्हें देखा। वे यह न कह सकीं कि ताश खेलना अच्छा न होगा, क्योंकि डेविडसन परिवार के व्यक्ति किसी समय भी आ सकते हैं।

डाक्टर ताश ले आये, और पत्तों को मेज पर फैलाने लगे। श्रीमती मैकफेल ऐसी दुविधा में पड़ी थीं, जैसे कोई बुरा काम करने जा रही हों।

दूसरे दिन आसमान साफ हो गया। डाक्टर ने फौरन ही बेकारी के पन्द्रह दिन गुजारने के लिये स्कीमें बनानी शुरू कर दीं। गोदाम में रखे अपने सामान से वे काफी किताबें निकाल लाये। उसके बाद वे जाकर, जलसेना के अस्पताल के सर्जन से मिले, और बीमारों के बिस्तरों के गिर्द चक्कर लगाये। गवर्नर से मिलने गये, और अपना कार्ड वहाँ छोड़ आये। रास्ते में मिस थाम्पसन उन्हें मिली। गरमजोशी से डाक्टर का अभिवादन किया। उसने पहले दिन के जैसे ही कपड़े पहने रखे थे। सुफेद, चमकता फ्राक था, और सुफेद ऊँची एड़ी के जूतों से ऊपर उसके मोटे सुडौल टखनों का आकार मोजों के अन्दर से झलक रहा था।

मैं समझती हूँ, उसे ढंग के कपड़े पहनना भी नहीं आता, श्रीमती मैकफेल बोलीं—मुझे तो वह बहुत साधारण लगती है।

उनके घूम कर घर पहुँचने के पहले ही मिस थाम्पसन पहुँच गई थी, और वह बरामदे में हार्न के काले-काले बच्चों के साथ खेल रही थी।

कम-से-कम सभ्यता के नाते तुम्हें उससे कुछ बातें करनी चाहिये, डाक्टर ने धीरे से अपनी पत्नी से कहा—वह यहाँ अकेली पड़ जाती है।

श्रीमती मैकफेल शर्मीले स्वभाव की थीं। पर जो कुछ उनके पति कहते थे, उसे बिना चूँ-चपड़ के मान लेतीं थीं।

हम सहयात्री हैं न ? श्रीमती मैकफेल ने बड़ी कोशिश करके कहा।

इस दर्बे-जैसे कमरे में बन्द हो जाना कितना भयानक है, मिस थाम्पसन बोली—और लोग कहते हैं, कि वह भी मिल जाना गनीमत है। अक्सर तो लोगों को ऐसे लोगों के घरों में ही शरण लेनी पड़ती है। मैं तो वहाँ कभी न रह सकूँ। पता नहीं, यहाँ लोग कोई होटल क्यों नहीं खोलते।

कुछ देर तक वे ऐसी साधारण बातें करती रहीं। मिस थाम्पसन तो खूब गप-शप करना चाहती थी, पर श्रीमती मैकफेल की समझ में नहीं आ रहा था, कि क्या बातें की जायँ। इसलिये वे बोलीं—अच्छा, अब चलें।

शाम को जब वे लोग चाय पी रहे थे, तो मिस्टर डेविडसन ने अन्दर आते ही, कहा—नीचे उस औरत के पास दो-तीन नाविक बैठे हैं। पता नहीं, उनसे उसका परिचय कैसे हो गया ?

मुझे तो वह अच्छी औरत नहीं जान पड़ती, श्रीमती डेविडसन बोलीं।

तमाम दिन बेकारी में काटने के कारण, वे लोग काफी थक गये थे।

अगर हमारे दो हफ्ते इसी तरह बीते, तो पता नहीं, हमारी क्या हालत होगी ? डाक्टर बोले।

हम लोगों को दिन भर का कार्य-क्रम बना कर समय का विभाजन कर लेना चाहिये, डेविडसन बोले—मैं कुछ घंटे पढ़ाई के लिये नियत किये लेता हूँ, कुछ समय टहलने के लिये, चाहे वर्षा हो रही हो या बन्द हो—क्योंकि वर्षाकाल में इसका ख्याल फिजूल है—और कुछ समय गप-शप और दिल बहलाव के लिये।

डाक्टर मैकफेल ने पादरी को सशंक दृष्टि से देखा। डेविडसन के प्रोग्राम ने उन्हें खुश नहीं किया।

वे खाना खा ही रहे थे, कि नीचे से फिर ग्रामोफोन रेंकने लगा। डेविडसन चौंक पड़े, पर खामोश रहे। कुछ देर बाद नीचे से मदमस्त नाविकों के जोरदार कहकहों और बेहूदी-भरी बातों की ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं। फिर सब मिलकर बजारू गीत गाने लगे। उस गाने में मिस थाम्पसन की खोखली और करख्त आवाज़ भी शामिल थी। ऊपर की मंजिल में बैठे चार व्यक्ति बातें करने की चेष्टा कर रहे थे। न चाहने पर भी, नीचे की सभी बातें उनके कानों में पड़ रही थीं। फिर गिलासों के खड़कने की ध्वनियाँ उभरीं और फिर कुर्सियाँ खिसकाये जाने की आवाजें आईं। शायद कुछ और लोग भी बाहर से आ गये थे। शायद नीचे दावत हो रही थी।

डाक्टर और पादरी वैज्ञानिक विषयों पर बातें कर रहे थे। सहसा श्रीमती मैकफेल बोलीं—पता नहीं, इतनी जल्दी वह कैसे लोगों से परिचित हो गई!

वे मिस थाम्पसन के बारे में सोच रही थीं। डेविडसन के चेहरे की ऐंठन ने भी प्रकट कर दिया कि वैज्ञानिक विषयों पर बातचीत करने के बावजूद उनका ध्यान भी उधर ही था। डाक्टर उन्हें फ्लैंडर्स के मोर्चे के अनुभव सुना रहे थे। सहसा डेविडसन उछल कर खड़े हो गये और चीख मार कर बोले—ओह, अभी तक यह बात मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई? वह इबोली से भाग आई होगी।

ऐसा नहीं हो सकता, श्रीमती डेविडसन बोलीं।

क्यों, क्या वह जहाज पर होनोलूलू में नहीं चढ़ी थी। बिल्कुल साफ है, और अब यहाँ भी वह अपना पेशा कर रही है।

अन्तिम शब्दों तक पहुँचते-पहुँचते घृणा से उनका चेहरा विकृत हो उठा।

इबोली क्या है? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

डेविडसन ने अपनी उदास आँखें श्रीमती मैकफेल पर जमाकर काँपती आवाज में कहा—होनोलूलू का कोढ़—वेश्यावृत्ति का मोहल्ला—वहाँ बुरी तरह औरतों के जिस्मों का व्यापार होता था। हमारी सभ्यता के चेहरे पर वह एक बदनुमा दाग़ था।

इबोली शहर के किनारे था। बन्दरगाह से एक अँधेरी सड़क एक टूटे-से पुल पर होकर जाती थी। अन्त में एक कच्ची और जगह-जगह ऊँची-नीची सड़क मिलती थी और सहसा रोशनियाँ नजर आने लगती थीं। सड़क के दोनों तरफ मोटरों के खड़े होने के लिए मैदान थे। कुछ नाइयों की दुकानें थीं और कुछ तम्बाकू और शराब की दुकानें, जिनमें हमेशा खोखली हँसी के फौव्वारे छूटा करते थे। अब सड़क एक मोड़ पर पहुँचती थी। इबोली दो भागों में बँटा था, एक दाहिनी तरफ और दूसरा बाईं तरफ। अब छोटे-छोटे खुशनुमा, साफ-सुथरे, हरे रंग से रँगे बँगलों की कतारें शुरू होती थीं। उनके बीच का रास्ता चौड़ा और सीधा था। इन बँगलों के सामूहिक रूप को एक फुलवारी का-सा रूप देने का प्रयत्न किया गया था। चमकदार रंग, एक-से नक्शे और नपी-तुली दूरी। वह क्षेत्र अपनी मिसाल आप था। पर इन सब के बावजूद वह जगह भयप्रद थी, क्योंकि दुनिया में कहीं भी प्रेम का बाजार इतनी सुरुचि और कायदे से न सजाया गया होगा। रास्तों पर कहीं-कहीं रोशनियाँ दिखाई पड़ जाती थीं। पर अगर बँगलों की रोशनी सड़क पर न पड़ती होती, तो वहाँ अँधेरा ही रहता। पढ़ती या सीती-पिरोती हुई औरतें अपनी-अपनी खिड़की पर बैठी रहतीं और नीचे सड़कों पर लोग उन्हें घूरते हुए, चहलकदमी किया करते। सभी देशों की स्त्रियाँ और सभी देशों के पुरुष वहाँ मिल सकते थे। अमेरिकन नाविक, जो बन्दरगाह पर लगे जहाज से आते थे, सिपाही—गोरे, काले दोनों ही जो वहाँ की रेजीमेन्ट में होते थे...जापानी, हवायियन, लम्बे-लम्बे चोगों वाले चीनी, ताड़ के पत्तों की हैट वाले फिलिपाइन-निवासी, सभी वहाँ देखने को मिल जाते थे। सभी

वहाँ खामोश रहते, क्योंकि कहा जाता है न कि अतृप्त कामना उदास होती है।

डेविड्सन जोश में बोल रहे थे—हमारा मिशन वर्षों से इसके विरोध में आन्दोलन करता रहा। तब अखबारों ने भी इसमें दिलचस्पी लेनी शुरू की। पर पुलिस ने हमारा विरोध किया। उनका वही पुराना तर्क था, कि जब तक मनुष्य-समाज कायम है, वेश्यावृत्ति अवश्य कायम रहेगी। इसलिये यही बेहतर है; कि उसे एक विशेष क्षेत्र में केन्द्रित रखा जाय, और इस पर नियंत्रण रखा जाय। असल बात यह थी, कि उस क्षेत्र के टूटने से उनकी आमदनी में फर्क पड़ जाता। चकलों के मालिकों, दलालों, वेश्याओं सभी से उन्हें घूस मिलता था। पर अन्त में हमने इसके खिलाफ कदम उठाने के लिये उन्हें विवश कर दिया।

मैंने अखबारों में इस आन्दोलन के बारे में पढ़ा था, डाक्टर ने कहा।

इब्रोली का कोढ़ काट फेंका गया। वहाँ के तमाम लोगों पर मुकदमा, चला, और उन्हें सजाएँ दी गईं। मुझे फ़ौरन समझ जाना चाहिये था कि यह औरत कौन है?

अब मुझे भी याद पड़ता है, कि वह औरत जहाज छूटने के दो-चार मिनट पहले ही चढ़ी थी, श्रीमती डेविड्सन बोलीं।

उसे हिम्मत कैसे हुई? डेविड्सन चिल्लाये—मैं यहाँ यह सब न चलने दूँगा।

वे दरवाजे की तरफ बढ़े।

आप क्या करने जा रहे हैं?

क्यों, यह भी पूछने की बात है? डेविड्सन बोले—मैं इसे बन्द करने जा रहा हूँ। मैं इस घर में चकला न बनने दूँगा।

चकला शब्द मुँह से निकाल कर, डेविड्सन कुछ कुंठित-से हो गये। वहाँ महिलाएँ जो थीं। उनका चेहरा पीला दिख रहा था, और आँखें तमतमा रही थीं।

जान पड़ता है, कि नीचे कम-से कम चार-पाँच आदमी हैं, क्या इस तरह जाना ठीक होगा ? डाक्टर ने शंका की।

पादरी ने उन पर अवहेलना की दृष्टि डाली, और बिना एक शब्द भी बोले, नीचे उतरने लगे।

बड़े-से-बड़ा खतरा भी डेविडसन को कर्त्तव्य-पालन से रोक नहीं सकता है! श्रीमती डेविडसन साभिमान बोलीं।

घबराहट से माथा मलती हुई, वे चुपचाप बैठी, प्रतीक्षा कर रही थीं, कि नीचे क्या होता है। उनके चेहरे पर कुछ अधिक मात्रा में खून दौड़ रहा था। सभी खामोश थे। उन्होंने नीचे दरवाजे पर भड़भड़ाहट सुनी, और फिर दरवाजा झटके से खोले जाने की आवाज। लोगों का गाना एकदम रुक गया, पर ग्रामोफोन रेंकता रहा। उन्होंने डेविडसन की आवाज सुनी, और फिर किसी भारी चीज के गिरने की आवाज आई। ग्रामोफोन खामोश हो गया। फिर डेविडसन की आवाज सुनाई दी, और उसके बाद मिस थाम्पसन की खोखली, करख्त आवाज। उसके बाद कई स्वरों के साथ-साथ चिल्लाने की आवाजें आपस में मिल गईं। एक शब्द भी समझ में नहीं आ रहा था। सभी पूरी शक्ति से चीख रहे थे। श्रीमती डेविडसन ने चौंक कर, अपने हाथों को मजबूती से घुटनों पर जकड़ लिया। उनका रंग फक हो गया था। डाक्टर मैकफेल ने उनकी ओर, फिर अपनी पत्नी को ओर देखा। वे नीचे नहीं जाना चाहते थे। पर शायद वे आशा कर रही थीं कि वे जायँगे। फिर किसी के घसीटे जाने की-सी आवाज सुनाई दी। शायद वे डेविडसन को कमरे से बाहर निकाल रहे थे। फिर दरवाजे के बन्द होने की आवाज सुनाई दी। क्षण भर बाद डेविडसन के ऊपर चढ़ते कदमों की चाप सुनाई दी। वे सीधे अपने कमरे में चले गये।

मुझे जाना चाहिये, श्रीमती डेविडसन बोलीं। और वे उठ कर, अपने कमरे की तरफ चल दीं।

अगर मेरी आवश्यकता हो, तो बुलाने में संकोच न कीजियेगा, श्रीमती मैकफेल बोलीं—आशा है, कि अधिक चोट न आई होगी।

पता नहीं, वे क्यों दूसरे के कामों में टाँग अड़ाया करते हैं? डाक्टर बोले।

दो-एक मिनट तक वे शान्त रहे, फिर सहसा चौंक पड़े। फिर ग्रामोफोन बजना शुरू हो गया था, और वे सब मिल कर एक अश्लील, बाजारू गीत जोरों से गा रहे थे। उनकी आवाजों में व्यंग्य और स्पष्ट चुनौती थी।

अगले दिन सुबह श्रीमती डेविडसन बहुत थकी और पीली दिख रही थीं। जैसे एक ही दिन में उनकी उम्र कई साल बढ़ गई हो। उन्होंने श्रीमती मैकफेल को बताया, कि रात भर डेविडसन सो नहीं सके। रात भर वे उत्तेजित रहे, और सुबह पाँच बजे ही उठ कर बाहर निकल गये। लोगों ने उनके ऊपर एक गिलास शराब उँडेल दी थी, जिससे उनके कपड़े भीग गये थे। मिस थाम्पसन का जिक्र करते समय श्रीमती डेविडसन के नेत्रों में शोले से दहक उठे।

उसे पछताना पड़ेगा। मिस्टर डेविडसन का हृदय विचित्र है। जहाँ पीड़ित मनुष्यों के लिये उनके पास सांत्वना और सहानुभूति का अक्षय भंडार है, वहीं पापियों के लिये हिंस्र घृणा भी है और तब वे भयानक हो उठते हैं।

अब वे क्या करेंगे? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

यह तो मैं नहीं जानती। पर अब मिस थाम्पसन के ऊपर जो बीतेगी, उसका दिल ही जानेगा!

डाक्टर मैकफेल का हृदय दहल उठा। श्रीमती डेविडसन के स्वर में इतना निश्चय और दृढ़ विश्वास था, कि सचमुच कुछ भी हो सकता था।

जब वे सुबह जा रहे थे, तो जीने से उतरते समय उन्होंने देखा था, कि मिस थाम्पसन के कमरे का दरवाजा खुला था, और वह सोने के ही कपड़ों में स्टोव पर झुकी, कुछ बना रही थी।

नमस्कार! कहो, मिस्टर डेविडसन कैसे हैं—उसने पुकार कर कहा।

वे लोग इस तरह सामने से गुजर गये, जैसे वहाँ कोई हो ही नहीं। एकाएक मिस थाम्पसन को इतनी हँसी आई, कि वह लोट-पोट हो गई। वे लोग झेंप गये।

श्रीमती डेविडसन सहसा घूम कर खड़ी हो गईं, और बिगड़ कर बोलीं—खबरदार, अगर तुमने मुझसे बदतमीजी से पेश आने का दुस्साहस किया! याद रखो, मैं तुम्हें यहाँ से निकाल कर ही दम लूँगी।

क्या मैंने मिस्टर डेविडसन को निमंत्रण दिया था? मिस थाम्पसन तेजी से बोली।

उसके मुँह मत लगो, श्रीमती मैकफेल ने फुसफुसा कर श्रीमती डेविडसन से कहा।

वे लोग खामोशी से आगे बढ़ गये।

देर तक मारे क्रोध के श्रीमती डेविडसन के मुँह से एक शब्द भी न निकल सका।

जब वे लौट रहे थे, तो उन्हें सजी-धजी मिस थाम्पसन मिली, जो कहीं जा रही थी। उसने अपना बड़ा सुफेद हैट रंग-बिरंगे फूलों से ढक रखा था। उसके साथ कुछ अमेरिकन नाविक थे। मिस थाम्पसन ने चिल्ला कर उन्हें नमस्कार किया, और महिलाओं के दृष्टि चुराने के प्रयत्न पर जोर से ठहाका मार कर हँस पड़ी। उसके साथियों ने भी हँसी में योग दिया। जैसे ही वे लोग घर में पहुँचे, वर्षा आरम्भ हो गई।

अब मिस थाम्पसन के बढ़िया कपड़ों की खैरियत नहीं। श्रीमती डेविडसन ने वर्षा होते देख व्यंग्य किया।

जब वे खाना खा रहे थे, मिस्टर डेविडसन आते दिखाई दिये। उनके कपड़े भीग गये थे, पर उन्होंने कपड़े बदलना जरूरी नहीं समझा। आते ही वे खामोशी से खाने में शामिल हो गये, पर एक-दो लुक्मे से अधिक खा न सके। उदास भाव से वे एकटक वर्षा की आड़ी पड़ती धारों को देख रहे थे। श्रीमती डेविडसन ने मिस थाम्पसन की दो मुलाकातों क. वर्णन किया, तब वे चुप रहे। सिर्फ उनकी भौंहें तन गईं।

हमें मिस्टर हार्न से कह कर उसे यहाँ से निकलवा देना चाहिये; श्रीमती डेविडसन बोलीं—इस तरह का अपमान हम नहीं सह सकते।

पर उसके जाने की और जगह ही कहाँ है? डाक्टर बोले।

क्यों, देशी लोगों के घर तो हैं?

इस तरह की वर्षा में देसी झोपड़ियों में रह सकना क्या सम्भव होगा?

मैं स्वयं साल भर तक देसी झोपड़ी में रहा हूँ, पादरी बोले।

जब छोटी देसी लड़की भुने केले लेकर आई, तो मिस्टर डेविडसन ने उससे कहा, कि मिस थाम्पसन से पूछ आये कि वह कब उनसे मि सकते हैं।

लड़की सिर झुका कर चली गई।

तुम उससे मिल कर क्या करोगे? श्रीमती डेविडसन ने पूछा।

उससे मिलना मेरा कर्तव्य है। इसके पहले कि मैं कोई कदम उठाऊँ, मैं उसे अपने सुधारने का मौका दूँगा।

तुम उसे नहीं जानते डेविड। सिवाय अपमान के और कुछ तुम्हारे पल्ले न पड़ेगा—श्रीमती डेविडसन बोलीं।

मुझे इसकी परवाह नहीं, कि वह मेरा अपमान करती है, या मुझ पर थूकती है। मुझे उसकी आत्मा को शुद्ध करने के लिये जो भी हो सके करना ही होगा।

श्रीमती डेविडसन के कानों में मिस थाम्पसन की जोरदार व्यंग्यात्मक हँसी गूँज रही थी।

पर वह बहुत नीचे गिर चुकी है।

क्या तुम यह कहना चाहती हो, कि ईश्वर की दया भी वहाँ तक न पहुँच सकेगी? डेविडसन की आँखें चमक उठीं, और उनकी वाणी सहसा आर्द्र और कोमल हो उठी। कभी नहीं। चाहे पापियों के पाप समुद्र से भी गहरे हो जायँ, प्रभु मसीह की दया उन तक पहुँचे बिना न रहेगी।

छोटी लड़की आकर बोली—मिस थाम्पसन ने कहा है कि सिवा अपने काम के घण्टों को छोड़ कर हर समय वे पादरी साहब के स्वागत करने के लिए तैयार हैं।

सभी सन्न से रह गये। डाक्टर ने जल्दी से अपने होंठों पर आती मुस्कराहट को कुचल दिया।

बाकी खाना सभी ने खामोशी से खत्म किया। खाने के बाद महिलाओं ने बुनाई शुरू कर दी। डाक्टर ने अपना पाइप जलाया। पर डेविडसन उसी खामोशी के साथ बैठे, मेज की ओर देख रहे थे। सहसा वे उठ खड़े हुए, और बिना एक भी शब्द बोले नीचे उतर गये।

ऊपर के लोगों ने नीचे के दरवाजे पर थपथपाहट सुनी और उसके बाद ही मिस थाम्पसन की कर्कश आवाज आई—आइये!

डेविडसन एक घंटे तक नीचे रहे।

उस समय लगातार बरसते पानी की धारों को वे तीनों देखते रहे। उस निरन्तर वर्षा से वे ऊब उठे थे। इंगलैंड की वर्षा (जिसमें हल्की-हल्की फुहारें पड़ती हैं) से यहाँ की वर्षा बहुत भिन्न थी। यहाँ की वर्षा से प्राकृतिक-शक्तियों की क्रूरता और दुर्दमनीयता का भास होता था। ऐसा जान पड़ता था; जैसे आकाश फट पड़ेगा। और फिर टीन की छतों पर होने वाली लगातार खड़खड़ाहट की एकरस आवाज तो भले-चंगे मनुष्य का दिमाग भी खराब कर देने के लिए काफी थी। बार-बार अपना सिर पीट लेने और चिल्ला पड़ने की इच्छा होती थी। पर दूसरे ही क्षण मनुष्य

अपनी बेबसी महसूस कर लेता था, और ऐसा तंग मालूम होता था, जैसे उसकी रीढ़ टूट गई है, और अब उसके लिये कोई आशा नहीं।

पादरी के आने पर डाक्टर ने अपना सिर घुमाया। दोनों महिलाएँ भी उत्सुकता से उनकी ओर देखने लगीं।

मैं उसे सुधार का हर मौका दे चुका। मैंने पूरी कोशिश की, कि वह पश्चात्ताप करे। पर उसने उन अवसरों का उपयोग नहीं किया। वे कुछ क्षणों तक चुप रहे। डाक्टर ने देखा कि उनकी आँखों में कठोरता की झलक आ गई, और उनका पीला चेहरा जैसे तन उठा।

अब मैं प्रभु मसीह के उन कोड़ों को हाथ में लूँगा, जिनसे उन्होंने पवित्र मन्दिर से सूदखोरों को खदेड़ दिया था।

वे कमरे में चक्कर लगाने लगे। उनके होंठ दृढ़ता से बन्द थे, और उनकी भौंहें तनी हुई थीं।

अब वह दुनिया के चाहे जिस कोने में चली जाय, पर मुझसे बच नहीं सकती!

सहसा वे मुड़े, और तेजी से फिर सीढ़ियाँ उतरने लगे।

अब क्या करने जा रहे हैं वे? श्रीमती मैकफेल ने पूछा।

पता नहीं, श्रीमती डेविडसन बोलीं, और अपनी ऐनक उतार कर पोंछने लगीं। जब वे अपने कर्त्तव्य-पालन के लिये कुछ करते हैं, तो मैं कुछ भी पूछती नहीं, और उन्होंने एक लम्बी साँस ली।

क्या बात है।

उन्हें कभी अपने तन-बदन का होश नहीं रहता। इस तरह काम करके...

डाक्टर को पादरी की कार्यवाइयों की खबर सबसे पहले हार्न से मिली। जब वे बाहर जा रहे थे, तो उसने सहसा उन्हें रोका। फिर घबराया हुआ उनके पास आकर बोला—मिस्टर डेविडसन मिस थाम्पसन को कमरा दे देने के लिये मुझ पर बिगड़ रहे थे। आप ही बताइये, आखिर मैं कैसे जान

सकता था, कि थाम्पसन कैसी औरत है ? जब लोग आकर मुझसे कमरा माँगते हैं, तो यदि उनके पास किराये के रुपये हों, तो मैं उनसे कैसे इनकार कर सकता हूँ, और मिस थाम्पसन ने तो एक हफ्ते का किराया पेशगी चुका दिया है।

डाक्टर मैकफेल खामोश रहे। वे इस विषय पर अपनी कोई राय नहीं देना चाहते थे, इसलिए पहलू बचाते हुए, बोले—आखिर मकान तुम्हारा है। इसके मालिक तुम हो। तुमने हम सबको जगह दी, यही तुम्हारी मेहरबानी है।

हार्न ने सशंक दृष्टि से डाक्टर को देखा। वह अभी तक इसका अन्दाजा नहीं लगा पाया था, कि डाक्टर कहाँ तक पादरी से सहमत थे। इसलिए हिचकिचाता-सा बोला—सारे पादरी एक से होते हैं। इनका बश चले, तो संसार के सारे काम-धन्धे बन्द कराकर छोड़ें।

क्या उन्होंने तुमसे उसे निकाल देने को कहा है ?

नहीं। वे कहते हैं, अगर वह ठीक से रहे, तो वे मुझसे ऐसा करने को नहीं कहेंगे। वे मेरे साथ अन्याय नहीं करना चाहते। मैंने उनसे वादा किया है, कि अब उसके पास कोई आ-जा न सकेगा। मैंने उससे कह भी दिया है।

उसने क्या कहा ?

उसने मुझे जहन्नुम जाने को कहा है, और क्या ! साफ था, कि हार्न मिस थाम्पसन को कमरा देकर पछता रहा था।

मैं समझता हूँ कि वह खुद ही यह घर छोड़ देगी, क्योंकि यदि उसके पास कोई आ न पायेगा, तो उसका काम कैसे चलेगा ?

ऐसी कोई जगह नहीं है, जहाँ वह जा सके। देसी लोग भी उसे कभी न ठहरायेंगे, क्योंकि वे जानते हैं कि ऐसा करने से उन्हें मिशन का सामना करना पड़ेगा।

डाक्टर मैकफेल उस लगातार वर्षा को देख रहे थे। ऊब कर बोले—वर्षा के रुकने का इन्तजार करना फिजूल है।

शाम को खाने पर डेविडसन ने अपने छात्र-जीवन की बातचीत शुरू कर दी। बताने लगे, कि किस तरह छुट्टियों में वे हर तरह के काम करके पढ़ने के लिए पैसे कमाते थे? नीचे पूर्ण सन्नाटा था। मिस थाम्पसन अपने कमरे में अकेली थी। सहसा ग्रामोफोन बजने की ध्वनि आने लगी। शायद एकान्त से घबरा कर, उसने अपने को बहलाने की बात सोची हो। पर आज कोई भी ग्रामोफोन के गानों का साथ देने वाला न था। इसलिये उसके गाने भी कुछ उदास और अकेले-से मालूम होते थे। जैसे कोई मदद के लिये पुकार रहा हो। पर आज ग्रामोफोन की तरफ किसी का ध्यान नहीं गया। मिस्टर डेविडसन ने बिना किसी रुकावट के अपनी बातें जारी रखीं। ग्रामोफोन बजता रहा। मिस थाम्पसन रेकार्ड-पर-रेकार्ड लगाये चली जा रही थी। ऐसा जान पड़ता था, कि एकान्त और रात के सन्नाटे ने उसे पूर्णतया उबा दिया था।

रात में डाक्टर और उनकी पत्नी भी सो नहीं सकीं। रात भर करवटें बदलते रहे, और मसहरी के बाहर अविराम गति से उड़ते मच्छरों का कर्णकटु संगीत सुनते रहे।

यह क्या? सहसा श्रीमती मैकफेल बोलीं।

प्लाईउड के पार्टीशन के उस ओर से डेविडसन की एकरस प्रार्थना करने की आवाज आ रही थी। वे जोर-जोर से प्रार्थनाएँ करने में व्यस्त थे। वे मिस थाम्पसन की भटकी आत्मा के उद्धार के लिए प्रार्थनाएँ कर रहे थे।

दो तीन दिन बीत गये। अब यदि मिस थाम्पसन कहीं रास्ते में उन्हें मिल जाती, तो वे नजर बचाकर निकल जाते थे। जैसे उन्होंने किसी को देखा ही न हो। हार्न ने उन्हें बताया, कि मिस थाम्पसन ने रहने के लिए दूसरी जगह पाने की कोशिश की पर वह असफल रही। शाम को वह अपने

रेकार्डों को बजाती थी, पर यह सब एक दिखावा भर था। उससे उसका कुछ भी दिलबहलाव न होता था। ग्रामोफोन की ध्वनि अधिक कर्कश और खोखली हो उठी थी, जैसे उसमें मिस थाम्पसन की निराशा और पराजय की ध्वनि भी मिल गई हो। रविवार को भी उसने नियमानुसार ग्रामोफोन बजाना शुरू किया, तो डेविडसन ने हार्न से कहलाया, कि आज प्रभु के विश्राम और प्रार्थना का दिन है, इसलिए कृपा करके वह ग्रामोफोन बन्द कर दे। फौरन रेकार्ड उतार लिया गया और टीन पर लगातार पड़ती हुई बारिश की आवाज के सिवा सारे मकान पर मौत का-सा सन्नाटा छा गया।

मैं समझता हूँ, कि वह काफी परेशान हो गई है, दूसरे दिन हार्न ने उन्हें बताया—वह समझ नहीं पा रही है, कि आखिर डेविडसन साहब उससे चाहते क्या हैं।

डाक्टर ने सुबह एक बार मिस थाम्पसन के चेहरे की झलक देखी थी। उन्हें जान पड़ा था, कि उसके चेहरे से गर्वयुक्त अवहेलना का भाव दूर हो चुका है, और अब उस पर चारों तरफ से घिर जाने पर शिकार किये जाने वाले जानवर का-सा साफ दिख रहा था। हार्न उनकी ओर एक तिरछी दृष्टि डालकर, बोला—शायद आप नहीं जानते कि अब मि॰ डेविडसन क्या करने जा रहे हैं?

नहीं, मुझे कुछ मालूम नहीं।

डाक्टर को कुछ-कुछ अन्देशा था, कि मिस्टर डेविडसन कुछ करने वाले हैं, पर वे नहीं जानते थे, कि क्या। उनकी समझ में वे उस औरत के गिर्द रहस्यात्मक ढंग से मकड़ी का-सा जाला बुन रहे थे और जब सब तैयार हो जायगा, तो वे सहसा डोरियाँ खींच देंगे, और मक्खी उसमें फँस कर रह जायगी।

उन्होंने मुझसे कहा है, कि मैं मिस थाम्पसन से कह दूँ, कि जब भी

वह चाहे, या जरूरत महसूस करे, तो उनके पास कहला भेजे, और वे तुरन्त उससे मिलेंगे।

उसने इस पर क्या कहा ? डाक्टर ने पूछा।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मैं अपनी बात कह देने के बाद वहाँ ठहरा भी नहीं। मुझे ऐसा लगा, जैसे वह रो देगी।

मुझे जरा भी शक नहीं, कि यहाँ के एकान्त ने उसे काफी परेशान कर डाला है, डाक्टर बोले—कभी-कभी तो यहाँ की लगातार एकरस वर्षा से ऊब कर मैं भी सोचने लगता हूँ, कि मैं चिल्ला पड़ूँगा। फिर वे कुछ झुँझला कर बोले—यहाँ वर्षा कभी बन्द भी होती है ?

वर्षा ऋतु में तो शायद ही कभी रुकती हो। यहाँ पर साल में तीन सौ इंच वर्षा होती है। यहाँ की खाड़ी ही ऐसी है कि तमाम दक्षिणी सागर का पानी खींच लेती है।

ऐसी जगह से ईश्वर बचाये ! डाक्टर बोले, और फिर मच्छरों के काटे हुए निशानों को खुजलाने लगे। आज उन्हें बड़ी कोफ्त हो रही थी। जब वर्षा रुक गई, और सूरज चमकने लगा, तो सारा मकान फौरन भट्ठी की तरह दहक उठा। ऐसा उन्हें मालूम होने लगा, जैसे वहाँ की हर चीज जंगली जानवरों की तरह है—चाहे वर्षा हो, या गर्मी, या एकान्त। वहाँ के देशी लोग, जो बच्चों के-से सरल स्वभाव के लिये प्रसिद्ध थे, जब अपने नंगे पैरों को थपथपाते हुए पीछे चलते थे, तो मनुष्य मुड़ कर देखने के लिये मजबूर हो जाता था और उस समय देशी लोगों की चेष्टा भयजनक जान पड़ने लगती थी। ऐसा जान पड़ता था, कि यदि पूरी चौकसी न रखी गई, तो उनमें से कोई आगे बढ़कर लम्बा-सा छुरा पीठ में घुसेड़ देगा। उनके काले नेत्रों की गहराइयों में; पता नहीं, क्या-क्या दुर्भावनाएँ छिपी हों। उनके चेहरे मिश्र के मंदिरों पर खुदे प्राचीन मिश्रियों के चेहरे जैसे लगते थे और उनकी अति प्राचीनता ही भय उत्पन्न कर देती थी।

डेविडसन कई बार आये, और फिर चले गये। मैकफेल को पता नहीं था, कि इतनी व्यस्तता का कारण क्या है। वे क्या करने जा रहे हैं? हार्न ने उन्हें बताया कि वे आज-कल रोज गवर्नर से मिलते हैं। एक बार डेविडसन ने भी गवर्नर का जिक्र छेड़ा।

देखने में तो दृढ़ जान पड़ता है, पर जब समय आता है, तो वह हिचकिचाने लगता है।

इसका मतलब शायद यह है, कि वह आपकी बात मानने को तैयार नहीं, डाक्टर बोले।

डाक्टर के इशारे पर ध्यान न देकर, डेविडसन बोले—मैं उससे वही कराना चाहता हूँ, जो होना चाहिये। और मैं नहीं समझता, कि इसके लिये किसी आदमी पर जोर डालने की जरूरत होनी चाहिये।

मगर क्या होना चाहिये? इस विषय में मतभेद तो हो सकता है।

अगर किसी का जख्म सड़ जाय, तो क्या आप उस हिस्से को काट फेंकने के बारे में मतभेद बर्दाश्त करेंगे?

पर सड़ा जख्म एक कठोर सत्य है।

और पाप!

डेविडसन ने जो कुछ किया था जल्द ही वह सब पर जाहिर हो गया! चारों व्यक्ति दोपहर का खाना खा चुके थे। खाने के बाद डाक्टर और महिलाएँ तो आराम करती थीं। पर डेविडसन को यह पसन्द न था।

सहसा झटके से दरवाजा खुला, और मिस थाम्पसन तीर की तरह झटकती हुई, डेविडसन के सामने आकर, बोली, जलील, कमीने कुत्ते! गवर्नर से मेरी क्या-क्या शिकायतें की हैं? वह गुस्से के मारे काँप रही थी।

डेविडसन उसके सामने एक कुर्सी खींच कर, शान्त स्वर में बोले, बैठ जाइये! मैं स्वयं आप से बातें करना चाहता था।

नीच ! चुगलखोर-कहीं का !

अश्लील गालियों और अपमानजनक बातों का एक सोता-सा फूट पड़ा।

मिस थाम्पसन, मुझे आपकी गालियों की परवाह नहीं है, क्योंकि मैं उनसे ऊपर हूँ। पर आपको यह न भूलना चाहिये, कि यहाँ महिलाएँ भी हैं।

उसका चेहरा तमतमा रहा था, और वह हाँफ रही थी। उसके गुस्से के बावजूद, उसमें रोने की इच्छा प्रबल रूप से उबल रही थी। उसका स्वर रूँध रहा था।

क्या बात है मिस थाम्पसन ? डाक्टर ने पूछा।

एक आदमी ने अभी आकर मुझसे कहा है, कि मुझे जल्दी-से-जल्दी यह जगह छोड़ देनी होगी। कहीं भी जाने वाले जहाज से मुझे यहाँ से चल देना होगा।

पादरी का चेहरा वैसा ही गम्भीर बना रहा।

ऐसी स्थिति में गवर्नर तुम्हें यहाँ कैसे रहने दे सकते हैं ? डेविडसन बोले।

यह तुम्हारी कारस्तानी है ! तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते ! यह तुम्हारी ही कारस्तानी है।

मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता। मैंने ही गवर्नर को अपना कर्त्तव्य करने की प्रेरणा दी है।

आखिर मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम इस तरह क्यों मेरे पीछे पड़ गये हो ?

अगर व्यक्तिगत रूप से तुमने मेरा कुछ बिगाड़ा होता, तो शायद मैं कभी ध्यान भी न देता।

क्या तुम समझते हो, कि मैं इस तरह सड़ी जगह में रहना पसन्द करती हूँ ?

तो फिर तुम्हें कोई शिकायत न होनी चाहिये।

निराश और क्रोध से भरी चीख उसके मुँह से निकल गई और वह तेजी से कमरे से बाहर निकल गई।

थोड़ी देर तक पूर्ण शान्ति रही।

अच्छा हुआ कि गवर्नर ने फैसला कर लिया, डेविडसन बोले—वह काफी हिचकिचा रहा था। कहता था कि यहाँ तो वह सिर्फ पन्द्रह दिन के लिए रोक ली गई है। एपिया अँग्रेजों की अमलदारी में है। इसलिए वह कुछ नहीं कर सकता।

फिर एकाएक जोश में खड़े हो गये और तेजी से कमरे में घूमते हुए बोले—ये उच्च पदाधिकारी लोग अपनी जिम्मेदारियों का महत्व जरा भी नहीं समझना चाहते। जैसे नजरों से दूर रहने वाली बुराई बुराई ही नहीं होती। कहने लगा, किसी दुश्चरित्र औरत को एक जगह से दूसरी जगह हटा देने से क्या बुराई का खात्मा हो जायगा? अन्त में मुझे सख्त होना पड़ा। तब कहीं जाकर गवर्नर कुछ करने को तैयार हुआ।

डेविडसन की भौहें नीचे झुक गईं और उनकी आगे बढ़ी हुई ठुड्डी कुछ तन गई। उनके चेहरे पर कठोरता आ गई और वे भयानक दिखने लगे।

आपकी सख्ती का प्रभाव गवर्नर पर कैसे पड़ा? डाक्टर बोले।

क्या समझते हैं, कि वाशिंगटन में हमारे मिशन का कुछ जोर ही नहीं है? मेरा इशारा कर देना भर काफी था, क्योंकि अगर उसके इन्तजाम के बारे में वाशिंगटन में शिकायत पहुँच गई तो वह उसके हक में अच्छा न होगा।

उसे कब जाना होगा? डाक्टर ने पूछा।

मंगलवार को सिडनी से सेनफ्रांसिसको जाने वाला जहाज यहाँ ठहरेगा। उसी पर उसके जाने का इन्तजाम किया गया है।

मंगल को अभी पाँच दिन थे।

दूसरे दिन सुबह का काफी समय अस्पताल में बिताने के बाद जब डाक्टर लौट रहे थे, तो हार्न ने उन्हें रोककर कहा—मिस थाम्पसन की तबियत ठीक नहीं है। जरा आप चलकर उन्हें देख लें।

अच्छा!

हार्न उसे मिस थाम्पसन के कमरे में ले गया। एक कुर्सी पर बैठी हुई वह अलसाई, सामने शून्य दृष्टि से देख रही थी। उसने हमेशा वाली सफेद पोशाक और चौड़ा-सा सफेद हैट, जिस पर फूलों के गुच्छे लगे थे, पहन रखा था। डाक्टर ने देखा कि उसका रङ्ग पीला हो रहा है और आँखों के पपोटे भारी हैं।

सुना है कि आपकी तबियत ठीक नहीं है!

नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है। असल बात यह है कि मैं आपसे मिलना चाहती थी। मुझे सेनफ्रांसिसको जाना पड़ेगा। उसने डाक्टर की ओर देखा और कुछ चौंक-सी पड़ी। उसने कई बार जल्दी-जल्दी अपनी मुट्ठियाँ खोलीं और फिर बन्द कर लीं। हार्न दरवाजे पर खड़ा उन लोगों की बातें सुन रहा था।

हाँ, मैंने सुना है।

मैं समझती हूँ, सैनफ्रांसिसको जाना मेरे लिये बिलकुल सुविधाजनक नहीं है। मैं कल गवर्नर से मिलने गई थी, पर मिल नहीं सकी। उसके सेक्रेटरी ने बताया, कि मेरे लिये जाने के सिवा और कोई चारा नहीं है। मैं बाहर खड़ी गवर्नर का इन्तजार करती रही। जब वह आया, तो मैंने उससे बातें कीं। पहले तो वह मुझसे बातें करने को तैयार न था, पर मैं इस तरह पीछा छोड़ने वाली न थी। अन्त में उसने कहा, कि यदि मिस्टर डेविडसन को कोई एतराज न हो, तो वे मुझे सिडनी को जाने वाले जहाज के आने तक यहाँ ठहरने की इजाजत दे सकते हैं।

और उसने मैकफेल की ओर देखा।

मैं नहीं जानता, कि मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ?

मैंने समझा था कि आप डेविडसन से कहेंगे। मैं कसम खाती हूँ, कि यदि वे सिर्फ मुझे ठहरने भर दें, तो उन्हें मुझसे कोई शिकायत न होगी। मैं ठीक से रहूँगी। मैं घर से बाहर तक न निकलूँगी, और न कोई मेरे पास आयेगा। और फिर सिर्फ पन्द्रह दिन की तो बात है।

अच्छा मैं उनसे कहूँगा।

वे कभी न मानेंगे, हार्न बोला—वे मंगल को तुम्हें यहाँ से भिजवा कर ही रहेंगे। अच्छा होगा, कि तुम तैयार रहो।

उनसे बता देना, कि सिडनी में मुझे काम मिल जायगा, और मैं सम्मानपूर्ण जीवन बिता सकूँगी।

मैं कोशिश करूँगा।

बातचीत के बाद आप फौरन मुझे बता दीजियेगा कि क्या हुआ। जब तक इधर या उधर कुछ तय नहीं हो जाता, मुझे जरा भी शान्ति न मिलेगी।

पादरी से स्वयं इस विषय में बातें करने को डाक्टर का मन न चाहा। इसलिये उन्होंने दूसरा तरीका अख्तियार किया। मिस थाम्पसन से जो बातें हुई थीं, उन्होंने अपनी पत्नी को बताईं, और उनसे श्रीमती डेविडसन से कहने को कहा। वैसे शायद पादरी को मिस थाम्पसन के पन्द्रह दिन और ठहरने में कोई आपत्ति न होती, पर डाक्टर की इस कूटनीति से वे चिढ़ गये। वे सीधे डाक्टर के पास आकर, बोले—मेरी पत्नी ने कहा है, कि मिस थाम्पसन आप से कुछ पूछ रही थी।

तब संकोची स्वभाव के डाक्टर को खुल कर सामने आने को मजबूर होना पड़ा। वे कुछ झेंप से गये, फिर झुँझला कर बोले—मैं नहीं समझता, कि यदि वह सिडनी जाने को तैयार है, तो उसे सैनफ्रांसिसको जाने के लिये मजबूर करने में क्या मसलहत है? जब वह ठीक से रहने का वादा करती है, तो उसके यहाँ ठहरने में क्या बुराई है?

डाक्टर पर एक तीखी दृष्टि डाल कर डेविडसन बोले—आखिर वह सेनफ्रांसिसको क्यों नहीं जाना चाहती ?

मुझे क्या पता ? डाक्टर ने उसी तेजी से जवाब दिया। और मैं तो समझता हूँ, कि हर आदमी को अपने काम से काम रखना चाहिये।

गवर्नर ने उसे यहाँ से पहले जहाज पर चले जाने का हुक्म दिया है। उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। मैं बीच में नहीं पड़ूँगा। उसका यहाँ रहना किसी तरह ठीक नहीं है।

यह सरासर ज्यादती है, जुल्म है।

हार्न ने सशंक दृष्टि से डाक्टर की ओर देखा। पर झगड़े का कोई अन्देशा न था, क्योंकि पादरी मुस्कुरा रहे थे।

मुझे बड़ा अफसोस है कि आप मुझे ऐसा समझते हैं, डाक्टर मैकफेल। विश्वास कीजिये, उस बदनसीब औरत के लिये मेरा रोम-रोम दुखी है। पर मुझे अपना कर्त्तव्य तो करना ही होगा।

डाक्टर ने उत्तर नहीं दिया। वे चुपचाप खिड़की से बाहर झाँकने लगे, आज वर्षा बन्द थी, और खाड़ी के दूसरे किनारे पर देसी लोगों की झोपड़ियाँ साफ़-साफ़ दीख रही थीं।

मैं बाहर जा रहा हूँ। कम-से-कम आज तो वर्षा के बन्द होने का फायदा उठा लूँ—डाक्टर ने कहा।

बुरा मत मानिये, भाई, कि मैं आपकी बात नहीं मान सका, डेविडसन ने कहा, और एक उदासी-भरी मुस्कुराहट उनके होठों पर फैल गई—मैं आपकी बड़ी इज्जत करता हूँ, डाक्टर। अगर आपने मेरे बारे में बुरी राय कायम की, तो मुझे अफसोस होगा।

आपकी राय अपने विषय में इतनी ऊँची है, कि मुझे डर है, कि शायद ही आपको मेरे विचारों में कोई दिलचस्पी हो सके।

जो चाहे, कह लो, भाई, डेविडसन हँस पड़े।

डाक्टर कुछ परेशान-से हो उठे थे। बेकार ही वे इतने कद्ध हो उठे

थे। नीचे मिस थाम्पसन उनका इन्तजार कर रही थी। उन्हें देखते ही, बोली—क्या आपने उनसे बातें कीं ? क्या कहा उन्होंने ?

हाँ, बातें तो हुईं। पर अफ़सोस है, कि वे कुछ न कर सकेंगे—डाक्टर ने बिना उसकी ओर देखे हुए कहा।

साहसा उन्होंने चौंक कर, मिस थाम्पसन को देखा। वह फफक कर रो रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। डाक्टर को कुछ निराशा हुई। उन्हें मिस थाम्पसन से ऐसी आशा न थी। सहसा उन्हें एक बात सूझ गई।

निराश होने की कोई बात नहीं है। तुम्हारे साथ बड़ा बुरा व्यवहार हो रहा है। मैं स्वयं गवर्नर से मिलूँगा।

अभी ?

हाँ।

मिस थाम्पसन के चेहरे पर रौनक आ गई।

बड़ी मेहरबानी होगी आपकी ! अगर आप गवर्नर से कहेंगे, तो उन्हें ठहरने देने में कोई एतराज न होगा। आप उन्हें विश्वास दिला दीजियेगा, कि उन्हें मुझसे कोई शिकायत न होगी।

डाक्टर मैकफेल स्वयं न जानते थे, कि उन्होंने कैसे गवर्नर से अपील करने का इरादा कर लिया। उन्हें मिस थाम्पसन के मामले में कोई दिलचस्पी न थी, पर पादरी की तानाशाही से वे क्षुब्ध हो उठे थे। गवर्नर उस समय घर पर ही थे। वे नाविकों की तरह लम्बे-चौड़े शरीर वाले, सुन्दर व्यक्ति थे। उन्होंने सफेद जीन की वर्दी पहन रखी थी।

मैं आप से उस औरत के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ, जो हमारे साथ ठहरी हुई है।

उस औरत के बारे में मैं काफी सुन चुका हूँ, डाक्टर मैकफेल, गवर्नर ने मुस्कुराते हुए कहा—मैंने उसे मंगलवार को सैनफ्रांसिसको जाने वाले जहाज पर यहाँ से चले जाने का हुक्म दिया है।

आप उसे सिडनी जाने वाले जहाज के आने तक और ठहरने की इजाजत दे सकेंगे ? मैं इसका जिम्मा लेता हूँ कि वह बिल्कुल ठीक तरह रहेगी।

गवर्नर अब भी मुस्कुरा रहा था। पर उसकी आँखें गम्भीर होकर सिकुड़-सी गई थीं। यदि मैं आपकी बात मान सकता, डाक्टर, तो मुझे बड़ी खुशी होती। पर अब हुक्म दे चुका हूँ। उसे मैं बदल नहीं सकता।

डाक्टर ने अत्यधिक तर्कपूर्ण ढंग से अपनी बात उनके सामने रखी। पर अब गवर्नर की मुस्कुराहट गायब हो चुकी थी। अपनी दृष्टि दूसरी ओर किये वह लापरवाही से सुन रहा था। मैकफेल ने समझ लिया, कि उनकी बातों का उस पर कुछ भी असर नहीं पड़ रहा है।

मुझे अफसोस है, कि उसे असुविधा होगी। पर मैं कुछ नहीं कर सकता। उसे मंगलवार को यहाँ से जाना ही होगा।

लेकिन उसके कुछ दिन और ठहरने में क्या बुराई है?

मुझे माफ कीजिये, डाक्टर, पर सिवा अपने ऊपर के अधिकारियों में किसी को, अपने सरकारी कामों का ब्यौरा बताने को तैयार नहीं हूँ।

मैकफेल ने उसके ऊपर एक तीखी दृष्टि डाली। फौरन ही उन्हें याद आ गया, कि डेविडसन ने अपनी बात मनवाने के लिये गवर्नर को धमकियाँ भी दी थीं।

अच्छा, तो यह डेविडसन का प्रभाव है, डाक्टर सहसा बोल उठा।

मैं स्वयं डेविडसन के बारे में बहुत ऊँची राय नहीं रखता। फिर भी मेरे कर्तव्यों की याद दिला कर उन्होंने कोई बुरा काम नहीं किया है। उस औरत के यहाँ रहने का प्रभाव निश्चय ही लोगों पर अच्छा नहीं पड़ सकता।

वे उठ खड़े हुए। डाक्टर को भी उठ कर चलने के लिये मजबूर होना पड़ा।

मुझे माफ कीजियेगा, डाक्टर, कि मैं आपकी बात नहीं मान सका।

जब डाक्टर घर की ओर जा रहे थे, तो उन्हें ऐसा लग रहा था, जैसे किसी ने उन्हें पहाड़ की चोटी से गिरा दिया हो। वे जानते थे कि मिस थाम्पसन उनका उत्सुकता से इन्तजार कर रही होगी। उसे अपनी असफलता की बात बताने में उन्हें संकोच हो रहा था, इसलिए वे पीछे के दरवाजे से घर में घुसे।

खाने पर वे बिल्कुल खामोश रहे। डाक्टर को लगा कि डेविडसन की तेज आँखें बार-बार आकर उनके ऊपर टिक जाती हैं। जैसे वे विजय-गर्व से मुस्कुरा रही हों। डाक्टर परेशान हो गये। सहसा उन्हें ख्याल आया, कि डेविडसन गवर्नर से उनकी मुलाकात के बारे में सब-कुछ जान गये हैं। लेकिन कैसे? उन्हें किसने बताया? पादरी उन्हें बड़े रहस्य-मय लग रहे थे। उसी समय उन्होंने हार्न को बरामदे में टहलते देखा। खाने के बाद वे भी घूमते हुए उधर ही निकल गये।

हार्न ने कसमसा कर कहा—वह पूछती है कि क्या आप गवर्नर से मिल आये? क्या कहा उन्होंने?

हाँ। पर वे कुछ न करेंगे। मुझे बड़ा अफसोस है, पर मैं और कर ही क्या सकता हूँ।

मैं पहले ही जानता था। वे लोग पादरियों के खिलाफ कभी नहीं जा सकते।

कहिये, क्या बातें हो रही हैं? पादरी ने उनके पास आ कर पूछा।

कुछ नहीं। मैं डाक्टर से कह रहा था, कि अभी शायद एक हफ्ते तक आप लोगों को और रुकना होगा। हार्न ने घबरा कर कहा—।

हार्न चला गया और वे दोनों कमरे में लौट आये। खाने के बाद एक घन्टा डेविडसन ने मन बहलाव के लिए रखा था।

दरवाजे पर हल्की-सी थपथपाहट हुई।

आ जाओ, डेविडसन ने तेज आवाज में कहा।

दरवाजा खुला नहीं था, इसलिये श्रीमती डेविडसन को उठ कर

दरवाजा खोलना पड़ा। सामने मिस थाम्पसन खड़ी थी। उसमें बड़ा परिवर्तन हो गया था। वह अब मिस थाम्पसन न थी, जो सड़क पर मिलने पर उन लोगों की हँसी उड़ाती थी। एक अत्यन्त दीन और भय-भीत स्त्री उनके दरवाजे के बाहर खड़ी थी। उसके बाल जो हमेशा ढंग से सजे रहते थे, आज उसकी गर्दन पर बिखर रहे थे। वह स्कर्ट, ब्लाउज़ और स्लीपर पहने हुए थी। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त हो रहे थे। आँसू बह-बह कर उसके चेहरे को धो रहे थे। वह दरवाजे पर इस तरह खड़ी थी, जैसे उसे अन्दर आने की हिम्मत न पड़ रही हो।

आप क्या चाहती हैं ? श्रीमती डेविडसन ने कठोरता से पूछा।

पादरी उठ कर, उसके पास आये, बोले—मिस थाम्पसन अन्दर आइये। कहिये, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

वह कमरे के अन्दर आ गई।

कल जो कुछ भी मैंने किया और कहा, उसके लिये मुझे सख्त अफसोस है। मैं बेकार ही उत्तेजित हो उठी थी। मैं उसके लिये माफी चाहती हूँ।

कोई बात नहीं, डेविडसन बोले—अपने कर्त्तव्य के लिये मैं उससे कहीं अधिक सह सकता हूँ।

मिस थाम्पसन तेजी से डेविडसन की ओर बढ़ी। पर ईश्वर के लिये, मुझे सैनफ्रांसिसको न भेजिये।

मिस्टर डेविडसन का स्वर सहसा कठोर हो उठा। क्यों, आखिर तुम्हें वहाँ जाने में क्या एतराज है ?

मिस थाम्पसन ने सर झुका दिया।

मेरे घर के लोग वहाँ रहते हैं। मैं नहीं चाहती, कि वे मुझे इस हालत में देखें। जहाँ भी आप कहें, मैं जाने को तैयार हूँ।

तुम वहाँ क्यों नहीं जाना चाहतीं ?

मैंने बताया तो।

पादरी ने तेज दृष्टि से उसे देखा। जैसे उनकी तेज, चमकती आँखें उसके अन्दर तक को उधेड़ डालना चाहती हों। सहसा वे चौंक-से पड़े, और कुछ आगे झुक कर, बोले,—अच्छा, अब समझा। तुम वेश्या-सुधार-जेल से भाग आई हो!

चीख कर उसने पादरी के पैर पकड़ लिये।

मुझे वहाँ जाने को मजबूर न कीजिये। मैं कसम खाती हूँ, कि अपना शेष जीवन भली औरतों की तरह बिताऊँगी। मैं सब छोड़ दूँगी।

वह फूट-फूट कर रो पड़ी, और टूटे-फूटे वाक्यों में उपर्युक्त बातें बार-बार दुहराती रही। उसके रँगे गालों पर आँसुओं की धारें बह रही थीं। पादरी ने उसके ऊपर झुक कर, जोर लगा कर उसका चेहरा ऊपर उठाया, और उसे अपनी तरफ देखने को मजबूर किया।

मेरी तरफ देखो! यही बात है न?

इसके पहले कि वे मुझे पकड़ सकें, मैं वहाँ से भाग आई। अगर वे मुझे पा गये, तो कम-से-कम तीन साल की जेल की सजा मेरे लिये रखी है।

पादरी ने उसे छोड़ दिया। बुरी तरह सिसकती हुई, वह फिर उनके पैरों से लिपटने लगी।

डाक्टर मैकफेल उठ कर खड़े हो गये और बोले—

अब सब कुछ जान लेने के बाद आप उसे वहाँ जाने को मजबूर नहीं कर सकते। यदि वह नये सिरे से जीवन शुरू करना चाहती है, तो आपको उसे एक मौका जरूर देना चाहिये।

मैं उसे सबसे अच्छा मौका दूँगा। अगर उसे सचमुच पाश्चाताप है, तो उसे अपने किये की सजा सहर्ष झेलने को तैयार हो जाना चाहिये।

मिस थाम्पसन के चेहरे पर आशा की एक किरण नाच गई।

तो आप मुझे यहाँ ठहरने देंगे न?

नहीं। तुम्हें मंगल को सैनफ्रैंसिसको रवाना हो जाना पड़ेगा।

उसके मुँह से फिर एक चीख निकल गई। और वह जमीन पर अपना सिर पटकने लगी। उसकी दबी सिसकियाँ फिर फूट निकलीं। डाक्टर ने झपट कर उसे पकड़ लिया, और उठा कर खड़ा कर दिया।

यह क्या पागलपन है? जाकर अपने कमरे में आराम करो। जो कुछ हो सकेगा, मैं तुम्हारे लिये करूँगा।

डाक्टर ने उसे सहारा देकर सीढ़ियों से नीचे उतारना शुरू किया। डाक्टर को पादरी और उनकी पत्नी पर बड़ी झुँझलाहट आ रही थी, क्योंकि उन्होंने जरा भी उनकी मदद करने की चेष्टा नहीं की। हार्न दरवाजे पर खड़ा था। उसकी मदद से डाक्टर ने मिस थाम्पसन को ले जाकर उसके बिस्तर पर लेटा दिया। वह बुरी तरह कराह रही थी। वह अपने होश-हवास में नहीं थी। डाक्टर उसे एक इंजेक्शन देकर, ऊपर चले गये। वे काफी थक गये थे।

मैंने उसे सुला दिया है।

दोनों महिलाएँ और पादरी वैसे ही जड़ भाव से खड़े थे, जैसे वे उन्हें छोड़ गये थे। न कोई अपनी जगह से हिला था, और न किसी के मुँह से कोई शब्द निकला था।

मैं तुम्हारा इन्तजार कर रहा था, डेविडसन ने अजनबी स्वर में कहा—मैं चाहता हूँ, कि तुम सब मेरे साथ उसकी आत्मा के सुधार की प्रार्थना में शामिल होओ। हमें अपनी उस अभागी बहन के लिये अवश्य प्रार्थना करनी चाहिये।

आलमारी से बाइबिल निकाल कर, वे खाने की मेज पर बैठ गये। अभी तक खाने की मेज साफ नहीं की गई थी। उन्होंने चाय की केतली अपने सामने से परे सरका दी। गम्भीर और साफ स्वर में उन्होंने हजरत मसीह और उस बदकार औरत की कहानी पढ़ी, जिसे हजरत ने बचाया था।

अब आओ, हम लोग घुटने टेक कर अपनी बदनसीब बहन मिस थाम्पसन की आत्मा की शुद्धता के लिये प्रार्थना करें !

उन्होंने एक लम्बी प्रार्थना की, जिसमें उस अभागी स्त्री के लिए ईश्वर से दया की भीख माँगी गई। श्रीमती डेविडसन और श्रीमती मैकफेल आँखें मूँदे श्रद्धा के भाव से घुटने टेके, पादरी के भावुक शब्दों को जैसे पी रही थीं। डाक्टर को अपने ऊपर आश्चर्य हो रहा था, पर उन्होंने भी घुटने टेक रखे थे। पादरी अपनी प्रार्थना से अत्यधिक प्रभावित हो रहे थे। भावनाओं की तीव्रता के कारण आँसू निकल-निकल कर, उनके चेहरे पर फैल रहे थे। बाहर लगातार वर्षा हो रही थी—जैसे वह कभी रुकेगी ही नहीं।

प्रार्थना के बाद, कुछ क्षणों तक सन्नाटा रहा। फिर वे बोले—अब हम बाइबिल के प्रार्थना-शब्द पढ़ेंगे।

इसके बाद वे लोग उठ गये। श्रीमती डेविडसन के पीले चेहरे पर पूर्ण शान्ति थी। पर मैकफेल-परिवार संकोच में डूबा हुआ था। वे निश्चय नहीं कर पा रहे थे, कि अब क्या करें।

देखूँ, अब वह कैसी है ? कह कर, डाक्टर नीचे उतर गये।

हार्न ने दरवाजा खोला। मिस थाम्पसन आरामकुर्सी पर पड़ी, सिसक रही थी।

तुम यहाँ क्या कर रही हो ? मैंने तुमसे आराम करने को कहा था न ?—डाक्टर ने कुछ बिगड़ कर कहा।

मैं सो नहीं सकी। मैं मिस्टर डेविडसन से मिलना चाहती हूँ।

इससे कोई फायदा न होगा। अच्छी तरह समझ लो, कि वे हर्गिज न मानेंगे।

उन्होंने कहा था कि जब कभी मैं उनसे मिलना चाहूँगी, वे जरूर आयेंगे।

डाक्टर ने हार्न को इशारा किया, कि वह जाकर पादरी को बुला लाये।

खामोशी से वे डेविडसन के आने का इन्तजार करते रहे। फौरन ही डेविडसन आ गये।

माफ कीजियेगा, मैंने आपको यहाँ आने की तकलीफ दी! मिस थाम्पसन ने गम्भीरता से कहा।

मैं जानता था कि तुम मुझे जरूर बुलाओगी। मेरी प्रार्थनाएँ बेकार नहीं जा सकतीं।

उन्होंने एक क्षण के लिये एक-दूसरे की तरफ देखा। फिर मिस थाम्पसन ने नजर झुका ली। सिर झुकाये हुए, वह बोली—मैं बहुत ही बुरी रही हूँ, पर अब पाश्चाताप करना चाहती हूँ।

ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद, कि उसने मेरी प्रार्थनाएँ सुन लीं।

वे बाकी दोनों आदमियों की तरफ मुड़कर, बोले—कृपा करके आप लोग जायँ। मेरी पत्नी से कह दीजियेगा, कि हमारी प्रार्थनाएँ सफल हुईं।

डाक्टर और हार्न बाहर निकल आये। पादरी ने दरवाजा बन्द कर लिया।

रात में देर तक डाक्टर सो नहीं सके। जब उन्होंने पादरी के ऊपर आने की आवाज सुनी, तो अपनी घड़ी देखी। दो बज चुके थे। उसके बाद भी वे नहीं सो सके। पादरी के कमरे से लगातार प्रार्थनाओं की आवाज आ रही थी। आखिर थक कर, वे सो गये।

दूसरे दिन सबेरे जब उन्होंने पादरी को देखा, तो हैरान रह गये। उनका रंग और अधिक पीला हो गया था, और वे बहुत थके दीख रहे थे। पर उनकी आँखों में तेज ज्योति-सी जल रही थी। ऐसा लगता था, कि जैसे वे अत्यधिक प्रसन्न हों।

जाकर जरा मिस थाम्पसन को देख लो, उन्होंने डाक्टर को देखते ही

कहा—चाहे शारीरिक रूप से वह स्वस्थ न हो, पर उसकी आत्मा का पुनर्जन्म हो गया है।

पता नहीं क्यों, डाक्टर को घबराहट हो रही थी।

आप रात में बड़ी देर तक उसके पास रहे?

हाँ वह मुझे आने ही नहीं देती थी।

आपको बड़ी खुशी हो रही है? डाक्टर ने झुँझला कर कहा।

डेविडसन की आँखों में एक नई चमक-सी आ गई।

ईश्वर मुझ पर कितना मेहरबान है, कि उसने मुझे एक भटकी हुई आत्मा को राह पर लाने के लिये निमित्त चुना!

मिस थाम्पसन कल वाली आरामकुर्सी पर ही बैठी थी। बिस्तर बिछाया ही नहीं गया था। कमरा अस्त-व्यस्त था। उसने कपड़े तक नहीं बदले थे। सिर्फ एक गन्दा-सा गाऊन पहन रखा था उसने, और बालों को लपेट कर जूड़ा-सा बना लिया था। उसका चेहरा कुछ सूजा था, और अत्यधिक रोने के चिन्ह स्पष्ट थे।

डाक्टर के आने पर, उसने सुस्ती-भरी आँखें उठाईं। निश्चय ही उसने पूर्ण पराजय स्वीकार कर ली थी।

मिस्टर डेविडसन कहाँ हैं? उसने पूछा।

वे अभी आ जायगें, डाक्टर ने तेजी से कहा—मैं देखने आया था, कि तुम कैसी हो।

मैं बिलकुल ठीक हूँ। आप चिन्ता न करें।

तुमने कुछ खाया, या नहीं?

हाँ, थोड़ी-सी काफी लाये थे, फिर उसने व्यग्रता से दरवाजे की ओर देखकर कहा—वे जल्दी ही आ रहे हैं न? जब वे मेरे साथ होते हैं, तो मुझे शान्ति मिलती है।

क्या अब भी तुम मंगल को जा रही हो?

हाँ, वे कहते हैं, कि मुझे जाना ही होगा। उनसे कह दीजिये कि जल्दी आयें। आप मेरी कोई सहायता नहीं कर सकते। अब सिर्फ मि० डेविडसन ही मेरी सहायता कर सकते हैं।

बहुत अच्छा, डाक्टर बोले।

अगले दो दिनों तक डेविडसन का अधिकतर समय मिस थाम्पसन के साथ ही बीतता रहा। सिर्फ खाने के समय वे ऊपर आते थे। डाक्टर ने देखा कि खाना भी वे नाम-मात्र को ही खाते हैं।

वे इधर कितने कमजोरदिल रहे हैं, श्रीमती डेविडसन चिन्ताजनक स्वर में कहतीं—काम में लगे रहने पर उन्हें कभी आराम का ख्याल ही नहीं आता। इस तरह कितने दिनों तक काम चल सकता है।

वे स्वयं पीली पड़ती जा रही थीं। उन्होंने श्रीमती मैकफेल को बताया था, कि इन दिनों वे सो नहीं पातीं। रात में आने के बाद डेविडसन तब तक बराबर प्रार्थना में लगे रहते हैं, जब तक वे बिलकुल थककर मजबूर नहीं हो जाते। और तब भी वे ठीक से नहीं सोते। एक-दो घंटे बाद उठ कर टहलने चल देते हैं। वे इन दिनों बड़े विचित्र-विचित्र स्वप्न देखते हैं।

आज सुबह उन्होंने मुझे बताया, कि वे नेब्रास्का के पहाड़ों का स्वप्न देख रहे थे, श्रीमती डेविडसन बोलीं।

बड़ी अजीब बात है, डाक्टर ने कहा।

अमेरिका में ट्रेन पर सफर करते हुए उन्होंने नेबरास्का के पहाड़ों को देखा था। वे गोल और चिकने थे और ऊपर को बिलकुल नुकीले होते चले गये थे। उन्हें पहली बार देखने पर डाक्टर ने सोचा था, कि उनकी बनावट स्तनों से कितनी मिलती-जुलती है।

अपनी बेचैनी डेविडसन को असह्य लगती थी। लेकिन उनका उत्साह फिर भी कम नहीं हुआ। उस बदनसीब औरत के हृदय में छिपी पाप की जड़ों तक को वे छाँट-छाँट कर फेंकते चले जा रहे थे। वे उसके साथ बाइबिल पढ़ते और प्रार्थनाएँ करते।

कितने आश्चर्य की बात है! एक दिन उन्होंने खाने पर कहा—सचमुच वह आत्मा का पुनर्जन्म है! उसकी आत्मा, जो पहले रात-सरीखी काली थी, अब नये सिरे से हिम की भाँति पवित्र और चमकीली हो गई है। अपने पापों के लिये उसका पश्चात्ताप कितना सुन्दर है! मेरा मस्तक उसके सामने दीनता से नत हो जाता है। उसकी आत्मा की नई ऊँचाइयों का मैं अन्दाजा तक नहीं लगा सकता।

क्या अब भी आप उसे सैनफ्रैंसिसको भेजेंगे? उसके लिये तीन साल की सजा रखी है। काश, आप उसे सजा से बचा लेते।

आप नहीं समझते। वह तो बहुत आवश्यक है। क्या आप समझते हैं, कि मेरा हृदय उसके लिये रक्त के आँसू नहीं रोता। मैं उसे अपनी पत्नी और बहन की तरह प्यार करता हूँ। उसे जेल में जो तकलीफें होंगी, वह सब मैं भी महसूस करूँगा।

यह सब बकवास है! डाक्टर अधिक सब्र न कर सके।

क्योंकि आप समझ नहीं पा रहे हैं। उसने पाप किये हैं, तो उनकी सजा भी उसे ही भुगतनी पड़ेगी। मैं जानता हूँ कि अमेरिकन जेल कैसे होते हैं। उसे भूखा रखा जायगा, शारीरिक यंत्रणायें दी जायँगी, और हर सम्भव तरीके से जलील किया जायगा। मैं मनुष्य द्वारा दी हुई सजा को सहन करना ईश्वर को अर्पित किया गया बलिदान समझता हूँ। मैं चाहता हूँ, कि वह खुशी से उसे स्वीकार करे। उसे एक ऐसा मौका मिल रहा है, जो शायद हममें से बहुत कम लोगों को मिलता है। ईश्वर उस पर अपनी दया बिखेरना चाहते हैं। भावनाओं के प्रबल वेग से डेविडसन की आवाज थरथरा रही थी।

तमाम दिन मैं उसके साथ प्रार्थना करता रहता हूँ। उसके बाद मैं अकेले में अपनी तमाम शक्ति और एकाग्रता से प्रार्थना करता हूँ, कि प्रभु मसीह अपनी अपार दया उस पर भी बिखेरें। मैं चाहता हूँ कि उसके

अन्त में यदि उसे रुक जाने को भी कहूँ, तो वह न माने ! मैं चाहता हूँ कि वह समझ ले, कड़ी से कड़ी सजा को भी वह मसीह के उस महान हृदय में अपने पापों की सजा स्वीकार करने की प्रबल इच्छा जाग पड़े और बलिदान को, जो उन्होंने समस्त मानवजाति के लिये दिया है, केवल कृपा ही समझे।

दिन धीरे-धीरे बीत रहे थे। नीचे रहने वाली बदनसीब औरत पर होते जुल्मों को सारा मकान जैसे क्षुब्ध होकर देख रहा था। वह एक बलि-पशु की तरह थी, जिसे मार डालने से पहले चारा खिलाया जा रहा था। भय ने उसे एक जड़ता प्रदान कर दी थी। वह एक क्षण के लिये भी डेविडसन को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने देना चाहती थी। जब तक वे साथ रहते, उसकी हिम्मत नहीं टूटती थी। उसे डेविडसन का ही एकमात्र सहारा रह गया था। वह उनके साथ बाइबिल पढ़ती, प्रार्थना करती और रोती। अक्सर उसका साहस जवाब देने लगता। ऐसे समय वह चाहती कि मंगलवार जल्द-से-जल्द आ जाय, और फिर जो होना हो, हो जाय। खौफ की धुँधली परछाइयों को वह और अधिक नहीं सह सकती थी। अपने व्यक्तित्व के प्रति वह लापरवाह हो गई थी और उसी गन्दे कपड़े में, बाल बिखेरे वह अपने कमरे में घूमा करती थी। चार दिनों से उसने अपना सोने का कपड़ा नहीं बदला था, और न मोजे ही पहने थे। उसका कमरा गन्दा और अस्त व्यस्त हो रहा था।

ऐसे तमाम समय में वर्षा अविराम गति से होती जा रही थी। जैसे उसे भी जिद पड़ गई हो। ऐसा महसूस होने लगता कि अब इन्द्र का खजाना खाली होने ही वाला होगा, फिर भी वर्षा की तीव्रता और एक-रसता में जरा भी परिवर्तन न आता। जल की धारों के टीन पर गिरने की लगातार आवाज असह्य हो उठी थी। सभी चीजें नष्ट हो गईं थीं। दीवार के निचले हिस्सों और जूतों तक पर काई जमने लगी थी। और रात में ढेर के ढेर मच्छर अपना बेसुरा संगीत सुनाने को आ पहुँचते थे।

काश, एक दिन के लिए वर्षा रुक जाती! डाक्टर बोले।

सभी मंगलवार का इन्तजार कर रहे थे, जब सैनफ्रैंसिसको जाने वाला जहाज आयेगा। यह इन्तजार असह्य लगता था। जहाँ तक डाक्टर का सवाल था, उन्हें उस औरत की दुर्दशा देखते रहने से उसका चला जाना कहीं आसान लगता था। वे अच्छी तरह जानते थे कि जो पादरी चाहता है, वह होकर रहेगा। फिर भी जब तक सैनफ्रैंसिसको का जहाज उसे लेकर चला नहीं जाता तब तक उसके लिये शान्ति नहीं। गवर्नर के आफिस का एक क्लर्क मिस थाम्पसन को जहाज पर चढ़ाने जायगा।

सोमवार की शाम को आकर वह मिस थाम्पसन से दूसरे दिन ग्यारह बजे तक तैयार हो जाने को कह गया। उस समय डेविडसन भी उसके साथ थे।

अच्छा, तो सब ठीक है न? मैं स्वयं तुम्हें जहाज पर चढ़ाने चलूँगा।

मिस थाम्पसन खामोश रही।

रात में जब मोमबत्ती बुझाकर, डाक्टर अपनी मसहरी में घुसे, तो उन्होंने छुटकारे की साँस ली।

कल इस समय तक वह सैनफ्रैंसिसको के रास्ते पर होगी।

श्रीमती डेविडसन को भी बड़ी खुशी होगी। वे कहती थीं, कि इन दिनों दिन-रात की मेहनत से डेविडसन आधे भी नहीं रह गये हैं, श्रीमती मैकफेल बोलीं—और वह तो बिल्कुल ही बदल गई है!

कौन?

मिस थाम्पसन। अगर आँखों-देखी बात न होती, तो इस पर विश्वास करना असम्भव था। ईश्वर की महिमा अपार है!

डाक्टर ने कुछ उत्तर नहीं दिया, वे सोने लगे थे। वे काफी थक चुके थे। आज उन्हें अच्छी नींद आई।

सबेरे डाक्टर को अपने कन्धों पर एक हाथ महसूस हुआ। चौंक कर, वे उठ बैठे। उन्होंने देखा, कि हार्न उन्हें जगाने की कोशिश कर रहा

था। उसने मुँह पर उँगली रख कर, उन्हें खामोशी से अपने पीछे आने का इशारा किया। रोज वह जीन का सूट पहने रहता था, पर आज सिर्फ लावा-लावा पहने था, और उसके पैर भी नंगे थे। वह बेतरह घबराया हुआ था, और उसके चेहरे पर दहशत बरस रही थी। उसने फिर डाक्टर को बरामदे में आने का इशारा किया, और उन्हें बाहर ले जाकर, फुसफुसा कर बोला—जल्दी से अपने कपड़े और जूते पहन लीजिये। पर जरा भी शोर न होने पाये। आपकी जरूरत है। जल्दी कीजिये।

डाक्टर ने समझा, कि मिस थाम्पसन ने कुछ कर डाला है।

क्या बात है? क्या अपना बैग लेता चलूँ?

जल्दी कीजिये!

डाक्टर अपने कमरे में आये। जल्दी से उन्होंने अपनी लंगोटी कन्धों पर डाली। रबर के जूते पहने, और बाहर निकले। दोनों खामोशी से नीचे उतर गये। सड़क पर खुलने वाला दरवाजा खुला था। और बाहर पाँच देशी लोग खड़े दबी जबान से बातें कर रहे थे।

क्या बात है? डाक्टर ने पूछा।

बस चले आइये, हार्न ने जवाब दिया।

वे सड़क पर आ गये। उनके पीछे-पीछे हार्न और देशी लोग भी चल पड़े। सड़क पार करके, वे बन्दरगाह पर पहुँचे। डाक्टर ने देखा कि तट के करीब किसी चीज को घेरकर कुछ और देशी लोग खड़े हैं। वे तेजी से उस तरफ बढ़े। लोगों ने डाक्टर को रास्ता दे दिया। हार्न ने धक्का देकर, उन्हें और आगे ढकेल दिया। आधा पानी के अन्दर और आधा बाहर, एक मानव शव पड़ा हुआ था। वह डेविडसन की लाश थी। डाक्टर ने झुककर, लाश उलट दी। उनके दाहने हाथ में एक उस्तरा था, जिससे उन्होंने एक कान से लेकर दूसरे कान तक अपनी गर्दन काट डाली थी।

इन्हें मरे काफी देर हो गई, डाक्टर ने लाश छू कर, कहा—बदन बिलकुल ठंडा हो गया है।

काम पर जाते हुए एक आदमी ने उन्हें देखा। और उसने मुझे खबर दी। क्या आपका ख्याल है, कि इन्होंने आत्महत्या की। हार्न बोला।

और क्या ? पुलिस को खबर कर देनी चाहिये। डाक्टर ने कहा।

हार्न ने वहाँ की भाषा में लोगों से कुछ बात की। दो आदमी फौरन चल पड़े।

पुलिस के आने तक इन्हें यहीं रहने देना ठीक होगा, डाक्टर बोले।

अगर वे इन्हें घर में ले गये, तो ? मैं अपने घर में लाश कभी न जाने दूँगा।

जो कुछ अधिकारी करेंगे, वही होगा, डाक्टर ने तेजी से जवाब दिया—जहाँ तक मेरा ख्याल है, वे इन्हें शव-गृह में रखेंगे।

हार्न ने अपने लावा-लावा की जेब से सिग्रेट निकाल कर, एक डाक्टर को दिया, और एक स्वयं सुलगाया। शव पर नजर जमाये, वे खड़े इन्तजार करते रहे। डाक्टर की समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

इन्होंने ऐसा क्यों किया ? हार्न बोला।

डाक्टर ने कोई उत्तर नहीं दिया।

थोड़ी देर में पुलिस आ गई। उनका एक अफसर साथ था। उनके पीछे जल-सेना के कुछ अफसर और डाक्टर भी आ गये। उन्होंने लाश उठाकर, स्ट्रेचर पर डाल ली।

इनकी पत्नी कहाँ हैं ? एक अफसर ने पूछा।

अब आप लोग आ गये हैं। मैं घर जाकर उन्हें बताता हूँ। आप. लोग लाश को ठीक कर लीजियेगा। इस तरह उनका देखना ठीक न होगा।

हाँ, हाँ। अफसर ने उत्तर दिया।

डाक्टर के पहुँचते ही, उनकी पत्नी बोलीं—श्रीमती डेविडसन अपने पति के बारे में परेशान हो रही हैं। रात से ही वे गायब हैं। दो बजे मिस थाम्पसन के कमरे से निकल कर, ऊपर आने के बजाय वे बाहर चले गये थे, अब तक नहीं लौटे। इतनी देर उन्होंने कभी नहीं लगाई।

डाक्टर ने उन्हें सब बातें सुनाकर, श्रीमती डेविडसन को कहने का भार सौंपा।

उन्होंने ऐसा क्यों किया? श्रीमती मैकेफेल ने भयमिश्रित स्वर में पूछा।

पता नहीं।

मैं श्रीमती डेविडसन से न कह सकूँगी।

तुम्हें कहना ही होगा।

डाक्टर पर भयभीत दृष्टि डाल कर, वे कमरे से बाहर हो गईं। डाक्टर ने उन्हें डेविडसन के कमरे में जाते देखा। दो मिनट के बाद वे हजामत करने और नहाने में व्यस्त हो गये। कपड़े पहन कर, वे बिस्तरे पर आ बैठे, और अपनी पत्नी का इन्तजार करने लगे।

वे उन्हें देखना चाहती हैं, उनकी पत्नी ने आकर, बताया।

उन्हें शव-गृह में ले गये हैं। चलो, हमें भी उनके साथ चलना चाहिये। वे क्या कर रही हैं?

मैं समझती हूँ, कि इस घटना ने उन्हें स्तम्भित कर दिया है। वे रोईं तो बिलकुल नहीं, पर उनका सारा शरीर बुरी तरह काँप रहा है।

चलो, चलें।

दरवाजा खटखटाने पर श्रीमती डेविडसन बाहर आईं। उनका रंग बिलकुल पीला हो रहा था, पर उनकी आँखें सूखी थीं। डाक्टर को वे बड़ी संयत लगीं। बिना एक शब्द भी बोले, वे लोग नीचे उतरे, और सड़क पर चलने लगे।

शव-गृह के करीब पहुँच कर श्रीमती डेविसन बोलीं—उन्हें देखने मैं अकेली ही जाऊँगी।

वे बाहर खड़े हो गये। पुलिस ने दरवाजा खोला, और श्रीमती डेविडसन के अन्दर जाते ही, बन्द कर लिया। दो-एक गोरे आकर, उनसे धीमे स्वरों में बातें करने लगे। डाक्टर मैकफेल दुर्घटना के बारे में जो कुछ जानते थे, वह उन्होंने उन्हें बताया। अन्त में दरवाजा खुला, और श्रीमती डेविडसन बाहर निकलीं। सब लोग खामोश हो गये।

चलो, वापस चलें, श्रीमती डेवडसन बोलीं।

उनका स्वर कठोर और संयत था। डाक्टर उनकी आँखों का भाव समझ नहीं सके। उनका पीला चेहरा अत्यन्त कठोर हो रहा था। धीरे-धीरे बिना एक भी शब्द बोले, वे चलते रहे, और उस मोड़ पर आ गये, जिसके दूसरी तरफ उनका मकान था। सहसा श्रीमती डेविडसन चौंक पड़ीं, और ठिठक कर खड़ी हो गईं। अर्से से खामोश रहने वाले ग्रामोफोन की तीव्र कर्कश ध्वनि फिर उनके कानों में गूँजने लगी।

यह क्या? श्रीमती मैकफेल भयभीय होकर, चीख पड़ीं।

चलो भी, श्रीमती डेविडसन बोलीं।

नीचे के हाल में पहुँच कर, उन्होंने देखा कि मिस थाम्पसन अपने दरवाजे पर खड़ी, हँस-हँसकर एक नाविक से बातें कर रही थी। पिछले दिनों की पराजित, भयभीत मिस थाम्पसन का कोई चिह्न तक उसमें न रह गया था। वही सुफेद फ्राक, वही चमकते ऊँची एड़ी के जूते, जिनके ऊपर मोजों के अन्दर से भी उसके सुडौल टखने झलक रहे थे। बाल विधि से सँवारे गये थे। और फूलों वाला चौड़ा हैट भी उसने पहन रखा था। उसका चेहरा रँगा हुआ था। भौंहें पेंसिल से रँगी गई थीं। और होंठ लिपिस्टिक से लाल किये गये थे। बड़ी शान से वह दरवाजे पर खड़ी थी। यह वही मिस थाम्पसन थी, जिसे उन्होंने पहले-पहल देखा

था। जैसे ही वे लोग घुसे, वह एक जोर की व्यंग्यात्मक हँसी हँसी। श्रीमती डेविडसन सहसा रुक गईं तो उसने उनके मुँह पर थूक दिया। श्रीमती विडसन का चेहरा अंगारे की तरह दहक उठा, पर अपने को सम्भाल कर, वे पीछे हट आईं। फिर सहसा दोनों हाथों से अपना चेहरा छिपा कर, श्रीमती डेविडसन ऊपर भागीं।

डाक्टर मैकफेल स्तम्भित हो गये थे। उन्होंने मिस थाम्पसन को उसके कमरे में ढकेल दिया, और तेजी से कहा—यह तुमने क्या किया ? फौरन ग्रामोफोन बन्द करो।

उन्होंने अन्दर जाकर, रेकार्ड उठा लिया।

मिस थाम्पसन कठोर स्वर में बोली—डाक्टर, बिना पूछे तुम मेरे कमरे में क्यों घुस आये ! यह कैसी बदतमीजी है ?

क्या मतलब ! डाक्टर चिल्ला कर बोले।

उसने अपने को संयत किया, और फिर अपने स्वर में असीम घृणा और तिरस्कार भर कर कहा—तुम पुरुष लोग—तुम सभी कुत्ते हो ! जलील, घृणित कुत्ते—सभी। उसके नेत्रों में घृणा का सोता-सा उबल रहा था।

डाक्टर चकित रह गये। सब-कुछ उनकी समझ में आ गया।

आवारा

एक

संसार में 'जलयात्रा दर्शकों' से अच्छी और अधिक महत्वपूर्ण बहुत कम पुस्तकें हैं, जो समुद्री सेना के 'प्रधान अध्यक्षों' की आज्ञा पर 'हाइड्रोग्रैफिक' विभाग द्वारा प्रकाशित की गई हैं। विभिन्न रंगों के कपड़ों की ढीली जिल्द में बँधी वे बड़ी सुन्दर पुस्तकें हैं और उनमें से जो सबसे महँगी है, वह भी सस्ती है। चार शिलिंग में 'याँगट्-सी क्याँग दर्शक' मिल सकती है जिसमें कुसुंग नदी से लेकर उस स्थान तक, जहाँ तक याँगसीक्याँग में नाव द्वारा यात्रा करना सम्भव है, का विस्तृत विवरण दिया हुआ है। इसी वर्णन में हानक्याँग, कियालिंग क्याँग और चिनक्याँग भी सम्मिलित हैं। तीन शिलिंग में मिलने वाली 'पूर्वी द्वीप समूह दर्शक' के तीसरे भाग में सेलीबिस के उत्तरी-पूर्वी भाग, मौलुक्का, गिलोलो जलसंयोजक, बन्दा, अराफुरा सागर तथा 'न्यूगिनी' के उत्तरी-पश्चिमी और दक्षिणी-पश्चिमी सागर तटों का सुन्दर वर्णन दिया हुआ है; परन्तु यदि कोई व्यक्ति ऐसा हो जो अपनी आदतों को बदल नहीं सकता, या नहीं रख सकता अथवा उसका पेशा उसे एक स्थान पर ही बाँधे रखता है, उसके लिए ये पुस्तकें व्यर्थ हैं—बिल्कुल बेकार !

ये व्यावहारिक पुस्तकें हमें मोहक यात्राओं के लिए प्रेरित करती हैं। इनकी सीधी-सादी लेखन पद्धति, प्रशंसनीय क्रम, सामग्री को प्रस्तुत करने की विधि, व्यावहारिकता को स्थिर रखने का अभिप्राय, जो प्रत्येक पंक्ति द्वारा प्रकट होता है, किसी भी दशा में भावुकता को कम नहीं कर सकता,

जो मसालों की सुगन्ध से भरी हुई वायु के समान, जब कोई पूर्वी द्वीप समूह के उन जादू भरे द्वीपों के निकट पहुँचता है, उन छपे हुए पृष्ठों के बीच बहकर चेतना का हरण कर लेती है। वे हमें लंगर डालने के स्थानों और भू-प्रदेशों के विषय में बताती हैं, किस स्थान पर क्या चीज मिल सकती है और पानी कहाँ-कहाँ प्राप्त किया जा सकता है—इनके साथ-साथ वे समुद्री रोशनियों, लंगर पर बँधे पीपों, ज्वार-भाटा, हवा और मौसम इत्यादि के विषय में पूरी सूचना देती हैं। वे वहाँ की जनसंख्या और व्यवसाय, भू-प्रदेशीय धन्धों की जानकारी भी देती हैं और यह बड़ा आश्चर्यजनक लगता है जब हम यह सोचते हैं कि शान्ति से, शब्दों का अपव्यय किये बिना इतना सब हमें अपने आप मिल गया है। क्या! अनजाने देश का रहस्य और सौन्दर्य और उनकी जादूभरी कल्पित कथाएँ!

यह कोई साधारण पुस्तक नहीं है जो दैवयोग से पृष्ठ पलटते ही, इस प्रकार का गद्यांश प्रस्तुत करती है—

'आवश्यक सामग्री—कुछ जंगली मुर्गे बचाये जाते हैं, इस द्वीप में बड़ी संख्या में समुद्री पक्षी होते हैं। छिछली झीलों या दलदल में कछुये और विभिन्न प्रकार की मछलियाँ इत्यादि पाई जाती हैं। यहाँ जाल का प्रयोग नहीं किया जा सकता परन्तु यहाँ एक प्रकार की मछली होती है जिसे छड़ी द्वारा पकड़ सकते हैं। टूटी हुई नाव वाले मुसाफिरों की सुविधा के लिए डिब्बे में बन्द की हुई कुछ चीजों और स्प्रिट का प्रबन्ध एक झोपड़े में किया गया है। साफ और क्षुब्द पानी भू-प्रदेश के पास ही एक कुएँ से प्राप्त किया जा सकता है।' किसी यात्रा पर जाने के लिए हमारी कल्पना को क्या इससे अधिक सामग्री के ज्ञान की आवश्यकता हो सकती है?

जिस किताब से मैंने यह गद्यांश लिया है उसमें संग्रहकर्त्ता ने उसी महत्व के साथ 'एलास द्वीपसमूह' का भी वर्णन किया है। 'यह द्वीपसमूह

बहुत से द्वीपों की शृंखला से बद्ध है—'इसका अधिकतर भाग नीचा और जंगलों से परिपूर्ण, ७५ मील पूर्व और पश्चिम तथा ४० मील उत्तर और दक्षिण में फैला हुआ है।'

वहाँ के निवासियों के विषय में बहुत कम लिखा गया है—विभिन्न समूहों के बीच में नहरें हैं जिनमें से बहुत-सी नावें जाती रहती हैं परन्तु वे जलसंयोजक अच्छी तरह ढूँढ़े नहीं गये हैं और अभी तक बहुत से खतरों के स्थानों का निर्णय नहीं हो सका है, अतः उन्हें छोड़ देना ही उचित है।

यहाँ के निवासियों की संख्या लगभग ८००० है जिनमें से २०० चीनी और ४०० मुसलमानों को छोड़कर बाकी सब असभ्य और जंगली जाति के लोग हैं। यहाँ का मुख्य द्वीप 'बारू' कहलाता है और यहीं पर एक 'डच कन्ट्रोलियर' रहता है। जब 'रायल निदर्लैण्ड स्टीम पैकेट कम्पनी' के जहाज हर दूसरे महीने मैकासर जाते हैं और हर चौथे हफ्ते जब वे 'न्यूगिनी' जाते समय उधर से गुजरते हैं, तो छोटी-सी पहाड़ी पर बने हुए उसके सफेद मकान की लाल छत दूर से ही उन्हें दिखाई पड़ जाती है।

संसार के इतिहास में किसी समय वहाँ कन्ट्रोलियर मिन्हर इवर्ट ग्रूटर था, और उन सब लोगों पर जो एलास द्वीपसमूह में रहते थे, सख्ती और कुछ हास्यास्पद ढंग से शासन करता था। वह इसे बहुत अच्छा मजाक समझता था कि उसे सत्ताइस वर्ष की अवस्था में यह पद प्राप्त हुआ और वह तीस वर्ष की उम्र में भी उससे मन बहलाता था। उसके द्वीपसमूह और बटाविया में कोई विशेष पत्र-व्यवहार नहीं था और वहाँ पर डाक इतनी देर में पहुँचती थी कि जब उसे किसी सलाह की आवश्यकता होती, तो वह उसके पास पहुँचते-पहुँचते, बेकार हो जाती और इसीलिए वह हमेशा जो उचित समझता, वही करता। वह अपने आप पर बड़ा

भरोसा रखता था। उसे विश्वास था कि उसका उज्ज्वल भाग्य सदा आने वाली आपत्तियों से उसकी रक्षा करेगा।

उसका कद बहुत छोटा था—मुश्किल से पाँच फीट चार इंच लम्बा हो, पर वह मोटा बहुत था—उसका रङ्ग कुछ लाल-सा था। ठंडक पाने के लिए उसने अपने सब बाल कटवा डाले थे और उसके चेहरे पर भी रोयें नहीं थे। उसका मुख गोल और लाल था और उसकी भवें तो इतनी सफेद थीं कि मुश्किल से दिखाई पड़ती थीं और उसकी आँखें छोटी, नीली और चमकीली थीं। वह जानता था कि उसका अपना कोई सम्मान नहीं है फिर भी अपने पद के सम्मान के लिए वह बहुत साफ और अच्छे कपड़े पहनता था। न कभी वह अपने दफ्तर गया, न कभी अपने कोर्ट में जाकर बैठा और न कभी श्वेत-धवल कपड़ों को पहने बिना कहीं घूमने गया। सुन्दर बटनों वाला उसका वह कोट उसके बदन पर बिल्कुल 'फिट' आता था और इसी से यद्यपि अभी उसकी अधिक उम्र नहीं थी फिर भी यह स्पष्ट हो जाता था कि उसकी तोंद बड़ी और गोल है। उसके मुख पर हमेशा पसीने की बूँदें उभरी रहतीं और वह सदा पंखा झलता रहता।

परन्तु अपने घर में वह केवल 'सैरोंग' पहनना पसन्द करता था और तब वह अपने गौर वर्ण के शरीर में मुश्किल से सोलह वर्ष का तन्दुरुस्त छोटा लड़का जान पड़ता था। उसकी आदत सुबह जल्दी उठने की थी और ६ बजे जब वह सोकर उठता तो उसे नाश्ता तैयार मिलता, जिसमें कभी कोई परिवर्तन न होता—इसमें 'पापाया' का एक टुकड़ा, तीन ठंडे तले हुए अंडे, कटी हुई पतली 'इडानन चीम' और एक प्याला काले रङ्ग की कॉफी होती। इसको खाने के बाद वह एक बड़ी 'डच' सिगार पीता, यदि उस समय तक उसने अखबार को अच्छी तरह चाट न डाला होता तो अखबार पढ़ता और तब कपड़े बदल कर वह अपने कार्यालय की ओर चला जाता।

एक बार सुबह-सुबह जब वह इसी प्रकार के कार्यों में व्यस्त था, उसके नौकर ने सोने वाले कमरे में आकर उसे बताया कि टुआन जोन्स उससे मिलने की आज्ञा चाहता है। ग्रूटर उस समय एक आदमकद शीशे के सामने खड़ा हुआ था। वह अपने कोट को ढीले ढंग से पहने हुए था, और अपनी चिकनी छाती को प्रशंसनीय दृष्टि से देख रहा था। वह कोट उतारने के लिए एक बार पीछे की ओर झुका और तब बड़े संतोष के साथ उसने अपने सीने पर हल्के हाथों से चपत-सी लगाई। यह एक मर्दाना सीना था। जब लड़के ने आकर यह समाचार दिया तो उसने शीशे में स्वयं अपनी आँखों की ओर देखा और हल्की-सी व्यंग्यात्मक मुस्कान उसके अधरों पर खेल गई। उसने स्वयं अपने आपसे यह जानने की चेष्टा की कि यह कम्बख्त निरीक्षक इस समय उससे क्या चाह सकता है? ग्रूटर अँगरेजी, डच और मलाया की भाषा अच्छी तरह बोल सकता था, पर इस समय उसने यह प्रश्न 'डच' भाषा में किया! उसे यह अच्छा लगा। इस समय उसे यह एक मसखरी भाषा प्रतीत हुई।

'टुआन से प्रतीक्षा करने के लिए कहो—मैं अभी सीधा वहीं आऊँगा।' कह कर उसने अपने नंगे बदन पर अपना कोट डाल लिया, उसके बटन बन्द किये और तब अपनी बैठक की ओर बढ़ गया। उसे आता देख कर जोन्स अभिवादन के लिए उठकर खड़ा हो गया।

'नमस्कार जोन्स!' कन्ट्रोलियर ने कहा—'इससे पहले कि मैं अपना रोज का काम शुरू करूँ, क्या तुम मेरे साथ एक 'पेग' पीने आए हो?'

'परन्तु जोन्स मुस्कुराया नहीं।'

'मैं आपसे एक अत्यन्त दुखद विषय पर बातें करना चाहता हूँ मिस्टर ग्रूटर!' उसने उत्तर दिया।

कान्ट्रोलियर पर अतिथि की गम्भीरता का न कोई प्रभाव पड़ा और न उसके शब्दों से कोई परेशानी ही हुई। उसकी छोटी नीली आँखों में एक चमक-सी दौड़ गई।

'मेरे दोस्त ! बैठ तो जाओ। यह सिगार लो !'

ग्रूटर को अच्छी तरह मालूम था कि जोन्स न कभी सिगार पीता था, और न कभी शराब, पर यह कुछ उसकी आदत थी कि जब भी कभी वे मिलते, वह उसे शराब या सिगार पीने को कहता। जोन्स ने अपना सिर नकारात्मक ढंग से हिला दिया।

जोन्स एलास द्वीपसमूह में मिशन की ओर से चिकित्सा का काम करने वाला एक अधिकारी था। उसका प्रधान कार्यालय बारू में था जो कि उन द्वीपों में सबसे बड़ा था, और जहाँ की जनसंख्या भी सबसे अधिक थी, परन्तु उसकी मीटिंग करने के स्थान अन्य द्वीपों में वहाँ के निवासियों की अध्यक्षता में रहते थे। वह एक ऊँचे कद का, दुखी दिखाई पड़ने वाला व्यक्ति था, जिसका चेहरा लम्बा सूजा हुआ और सूखा-सा था। उसकी आयु चालीस वर्ष के लगभग होगी। चाँद पर दिखाई पड़ने वाले उसके भूरे बाल अब सफेद हो चले थे और अब वह माथे तक फैलने लगे थे। इसके कारण वह कुछ-कुछ अधिक बुद्धिमान दिखाई पड़ने लगा था। ग्रूटर उसका सम्मान भी करता था, और कभी-कभी उसे नापसन्द भी करता था। वह उससे घृणा करता था क्योंकि वह संकीर्ण विचारों वाला और जिद्दी था। वह स्वयं एक प्रसन्नचित्त व्यक्ति था, जो वहाँ की हर चीज पसन्द करता था और परिस्थितियाँ जहाँ तक अनुकूल हों, वहाँ तक उनसे लाभ उठाना चाहता था, इसलिये वह ऐसे व्यक्ति को कभी पसन्द नहीं कर सकता था जो इन सब बातों को बिल्कुल ही नहीं मानता था। उसका विचार था कि उस देश के रीति-रिवाज वहाँ के निवासियों के लिये बिल्कुल उपयुक्त थे और वह धार्मिक संस्थाओं की उस नीति से बिल्कुल भी सहमत नहीं था जो उन्हें समाप्त करना चाहती थी—उन रीति-रिवाजों को जो सैकड़ों वर्षों से वहाँ चली आ रही थीं। वह उसका सम्मान इसलिए करता था कि वह ईमानदार उत्साही और अच्छा व्यक्ति था। केवल जोन्स ही, जो आस्ट्रेलियावासी एक सम्मानित व्यक्ति था,

वहाँ का योग्य चिकित्सक था और यह एक संतोष का विषय था कि जब भी कोई बीमार पड़ता था उसे केवल चीनी चिकित्सक के ऊपर ही नहीं निर्भर करना पड़ता था। कन्ट्रोलियर इस बात को अच्छी तरह जानता था कि जोन्स की विद्या सबके लिए कितनी लाभदायक थी, और उसने कितनी सहृदयता के साथ उसे सबको बाँट रखा था। जब वहाँ इन्फ्लूएन्जा फैला तो उसने कितनी लगन से सबकी सेवा की थी—आवश्यकता पड़ने पर संसार की कोई शक्ति उसे एक द्वीप से दूसरे द्वीप पर जाने से नहीं रोक सकती थी।

वह अपनी बहन के साथ गाँव से आधे मील दूर एक सफेद मकान में रहता था और जब कन्ट्रोलियर आया था, वह उससे मिलने 'बोर्ड' पर ही चला आया, और उससे उस समय तक अपने घर में रहने का अनुरोध किया था, जब तक उसका अपना मकान ठीक न हो जाय। कन्ट्रोलियर ने उसकी बात मान ली थी और जल्दी ही उसे इस बात का ज्ञान हो गया कि ये दोनों कितनी सादगी से रहते थे। यह उसकी पहुँच से बाहर की चीज थी। दिन भर में तीन बार चाय और एक बार खाना—फिर जब उसने अपनी सिगार जलाई तो जोन्स ने बड़ी नम्रतापूर्वक किन्तु दृढ़ शब्दों में उससे कहा था कि वह इतना कृपालु हो जाय कि वहाँ सिगार न पिये, क्योंकि वे दोनों इसे बिल्कुल पसन्द नहीं करते। चौबीस घंटे बाद ही ग्रूटर अपने घर चला आया था। वह वहाँ से भागा, उसके हृदय में अपार शान्ति थी मानो वह किसी प्लेग से पीड़ित गाँव को छोड़कर भागा हो। कन्ट्रोलियर हँसी-मज़ाक करना और हँसना पसंद करता था। फिर ऐसे व्यक्ति के साथ रहना जो किसी की सबसे अच्छी कहानी सुनकर मस्कुरा भी न सके, उसके लिए मृत्यु से भी अधिक कष्टप्रद था। जोन्स एक योग्य व्यक्ति था परन्तु एक साथी की हैसियत से उसके साथ रहना असम्भव था। उसकी बहन उससे भी अधिक गई-बीती थी। उसमें भी हँसी-मज़ाक की कोई शक्ति न थी। परन्तु जोन्स के मुख पर सदा एक

वेदना-सी छाई रहती और वह अपना कर्तव्य सचेत हो कर पूरा करता और उसका स्पष्ट मत होता कि संसार में प्रत्येक वस्तु बेकार है—मिस जोन्स सदा प्रसन्नचित्त रहा करती। वह गम्भीरतापूर्वक हर वस्तु की अच्छाइयों की ओर दृष्टि डालती। बदला लेने वाले जीव की-सी क्रूरता के साथ वह अपने सम्पर्क में आने वालों की अच्छाइयाँ ढूँढ़ा करती। वह मिशनस्कूल में पढ़ाती और अपने भाई की डाक्टरी के कामों में सहायता करती थी। जब वह चीर-फाड़ का काम करता तो वह गृहिणी और परिचारिका बन-कर उसकी मलहम-पट्टी करती, और रोगी को बेहोश करने का इन्जेक्शन भी लगाती—इस प्रकार वह उस छोटे से औषधालय की, जो उसके भाई ने स्वयं अपनी ओर से 'मिशन' को दिया था, प्राण बनकर समाई रहती। उसके कण-कण में छाई रहती। परन्तु कन्ट्रोलियर एक छोटा-सा जिद्दी आदमी था और उसने कभी भी जोन्स के स्वभाव के विषय में अजीब विचारों और मिस जोन्स के आशावाद के बीच से हँसी की सामग्री निकालने का अवसर नहीं खोया—उसे तो हँसने से मतलब था, और वह कभी इस प्रकार के अवसर को खोना नहीं चाहता था।

डच लोगों की नावें दो महीने में तीन बार कुछ घंटों के लिए आती थीं और तब उसे कप्तान और चीफ-इंजीनियर के साथ हँसने-हँसाने का अच्छा मौका मिलता था। ईद के चाँद की तरह कभी-कभी बृहस्पति-द्वीप या पोर्टडार्विन से मोती बटोरने वाला छोटा-सा जहाज आता और तब दो या तीन दिन के लिए उसका समय बहुत अच्छा कटता। उस जहाज के व्यक्ति प्रायः शुष्क व्यक्ति थे परन्तु उनमें प्रेरणा की कमी न थी। उनके पास पर्याप्त मात्रा में शराब होती, वे अच्छी-अच्छी कहानियाँ कहते और कन्ट्रोलियर उन्हें अपने घर पर भोजन के लिए आमन्त्रित करता और वह भोज तभी सफल समझा जाता, जब वे इतने मदमस्त हो जाते कि उस रात अपने जहाज पर लौट सकने योग्य भी न रहते। जोन्स के पास एक ही ऐसा गोरा व्यक्ति था जो बारू में रहता था—वह था जिंजर टेड

और जो वास्तव में सभ्यता के नाम पर कलंक मात्र था। उसके पक्ष में कही जाने योग्य एक भी बात नहीं थी। गोरी जाति के लिए उसने बहुत बदनामी के काम किये थे। यह सब होते हुए भी जिजरटेड के विषय में कन्ट्रोलियर कभी-कभी सोचा करता था कि वह बारू में रह कर उससे अधिक अच्छी तरह जीवन व्यतीत करना सीख जायेगा जिस प्रकार वह तब रह रहा था। इसी दुष्ट के कारण आज जोन्स को इस समय जब कि उसे अपने स्कूल में किसी धार्मिक विषय पर व्याख्यान देना चाहिए था, यहाँ आना पड़ा।

'जोन्स! तुम इतमीनान से बैठ जाओ और मुझे बताओ कि मैं किस प्रकार तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ!' कन्ट्रोलियर ने कहा।

'मैं आपसे उस व्यक्ति के विषय में बात करने आया हूँ, जिसका नाम जिंजर टेड है। आप अब क्या करना चाहते हैं?'

'क्यों? क्या बात हो गई?'

'आपने नहीं सुना? मैं सोचता था कि सार्जेण्ट ने आपको बता दिया होगा।

'मैं अपने कार्यालय के व्यक्तियों को अपने घर आने के लिए कभी उत्साहित नहीं करता जब तक कि कार्य बहुत ही आवश्यक न हो।' कन्ट्रोलियर ने कहा—'मैं तुमसे बिलकुल भिन्न हूँ जोन्स! मैं केवल आराम पाने के लिए काम करता हूँ और मैं अपने आराम करने के समय को बिना किसी झंझट के बिताना पसन्द करता हूँ।'

परन्तु जोन्स के मुख पर उसकी बातों के प्रति एक लापरवाही की झलक स्पष्ट थी और वह इस प्रकार की साधारण बातों में बिलकुल भी रुचि नहीं रखता था।

'कल रात चीन वाली दूकानों में एक बहुत लज्जाजनक घटना हो गई। जिंजर टेड ने एक चीनी व्यक्ति को अधमरा कर के डाल दिया।'

'मेरा ख्याल है, उसने फिर अधिक पी लिया होगा।' 'स्वाभाविक

है ! वह और करता ही क्या है ? उन लोगों ने पुलिस को बुलाया तो उसने सार्जेण्ट को घायल कर दिया। छः आदमी उसे पकड़ कर जेल तक ले जा सके।'

'वह एक भयानक आदमी है।' कन्ट्रोलियर ने कहा।

'मैं सोचता हूँ आप उसे मैकासर भेजेंगे।'

'मैं आपका मतलब नहीं समझा !'

सुनते ही जोन्स के माथे पर बल पड़ गये।

ग्रूटर ने उस पादरी की क्रोधभरी दृष्टि का सामना प्रसन्नतापूर्वक अपनी आँखों को झपका कर किया। वह मूर्ख नहीं था और अच्छी तरह जानता था कि जोन्स क्या चाहता है। पर उसे चिढ़ाने में उसे थोड़ा आनन्द आया।

'भाग्यवश मेरे अधिकार काफी विस्तृत हैं और मैं इस मामले से अच्छी तरह सुलझ सकता हूँ।' उसने उत्तर दिया।

'आपको यह अधिकार है मिस्टर ग्रूटर कि आप जिसे चाहें उसे देशनिकाला दे सकें और मुझे विश्वास है कि यदि इस मनुष्य से छुटकारा मिल जाए, तो हमारी बहुत-सी परेशानियाँ दूर हो जायेंगी।'

'मुझे यह अधिकार अवश्य है, परन्तु मेरा विश्वास है कि इसको नृशंसतापूर्वक प्रयोग में लाने की सलाह देने वाले तुम अन्तिम व्यक्ति होगे।'

'मिस्टर ग्रूटर ! इस व्यक्ति की उपस्थिति जनता के हित में भयावह हो उठी है। वह सुबह से लेकर रात तक कभी गम्भीर नहीं रहता और यह कहा जाता है कि वह एक के बाद दूसरी जातीय स्त्री से सम्बन्ध कर लेता है।'

'यह एक दिलचस्प बात है जोन्स। मैं हमेशा उन मद्यसार सम्बन्धी चीजों के विषय में सुना करता था, यद्यपि यह जाति सम्बन्धी इच्छाओं को

जाग्रत करती थी, परन्तु इससे एक प्रकार का आनन्द ही मिलता था। तुम जिजर टेड के विषय में जो भी कुछ कहोगे ऐसा लगता है, उसमें इस सिद्धांत का प्रतिपादन नहीं होगा!'

उस धार्मिक व्यक्ति का मुखमंडल आरक्त हो उठा।

'यह शारीरिक विज्ञान की बातें हैं, जिनके विषय में मैं इस समय बात करना नहीं चाहता।' उसने ठंढे दिमाग से उत्तर दिया 'इस व्यक्ति का व्यवहार गोरी जाति के सम्मान को गहरा आघात पहुँचाता है और उसका नमूना हमारे उन प्रयत्नों को बुरी तरह असफल कर देता है जो दूसरी जगहों पर लोगों को अच्छा जीवन बिताने के लिए समझाने के विचार से किये जाते हैं। वह शुरू से आखीरतक एक बुरा आदमी है।'

'क्षमा करना, किन्तु क्या कभी तुमने उसे सुधारने का कोई प्रयास किया है?'

'जब वह सर्वप्रथम यहाँ आया था, मैंने उसके साथ सम्पर्क स्थापित करने का भरसक प्रयत्न किया था। परन्तु उसने मेरी सारी बातों को इस कान से सुनकर उस कान से उड़ा दिया। जब पहली मुश्किल हमारे सामने आई, मैंने सीधे उसके पास जाकर उससे बात करनी चाही, परन्तु उसने मुझे ऐसा नहीं करने दिया।'

'तुम और तुम्हारी दूसरी धार्मिक संस्थाओं ने इस द्वीप पर जो आश्चर्यजनक रूप से अच्छा काम किया है, उसका मुझसे अधिक कोई मूल्य नहीं आँक सकता, परन्तु, क्या तुम्हें विश्वास है कि तुमने अपने इस कार्य को हर तरह की निपुणता से पूरा करने की कोशिश की है?'

कन्ट्रोलियर इस बात के कहने के पश्चात् कुछ प्रसन्न हुआ। यह बात बहुत नम्रता से कही गई थी और साथ ही इस बात का उदाहरण भी थी कि वह उस पर पूर्ण विश्वास नहीं करता था। पादरी ने उसकी ओर गम्भीरतापूर्वक देखा। उसकी उदास भूरी आँखों में अपनत्व लहरा रहा था।

'जब ईसा मसीह ने पैसे बदलने वालों को मन्दिर से हण्टर मारकर निकाला था, तब क्या उन्होंने अपनी निपुणता का परिचय दिया था? नहीं मिस्टर ग्रूटर! चातुरी तो एक प्रकार का छल है, जो असावधान व्यक्ति अपने कर्त्तव्य से बचने के लिए प्रयोग में लाते हैं।'

जोन्स की इस बात को सुनकर अचानक कन्ट्रोलियर को लगा जैसे उसे एक बोतल शराब की आवश्यकता हो। जोन्स उसकी ओर और अधिक झुक कर बैठ गया।

'मिस्टर ग्रूटर! आप भी इस मनुष्य के विषय में उतना ही जानते हैं, जितना मैं। यह व्यर्थ है कि मैं उन सब की फिर से याद दिलाऊँ। उसके लिए क्षमा किये जाने का कोई स्थान नहीं है। वह अपनी सीमाओं को पार कर चुका है। इससे अच्छा आपको और कोई अवसर नहीं प्राप्त होगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस समय अधिकारों का उचित प्रयोग करें और एक बार उसे यहाँ से निकाल कर सदा के लिए उससे छुट्टी पा लें।'

कन्ट्रोलियर की आँखों में अस्वाभाविक रूप से चमक आ गई। यह सब उसे एक खिलवाड़-सा प्रतीत हो रहा था। उसका विचार था कि मनुष्य उस समय अधिक विनोद-प्रिय हो जाते हैं जब उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि कोई उनकी अच्छाई या बुराई में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

'परन्तु जोन्स! क्या मैं उन्हें ठीक तरह समझता हूँ? क्या तुम मेरी ओर से यह विश्वास चाहते हो कि मैं उसके विरुद्ध लगाये गये अभियोगों और उसकी सफाई को सुने बिना ही उसे निकाल देने का वचन दे दूँ?'

'मैं नहीं समझता कि उसकी सफाई क्या हो सकती है।'

कन्ट्रोलियर अपनी कुर्सी से उठा और सचमुच में अपने पाँच फिट चार इंच के कद में उसका व्यक्तित्व झलक उठा।

'मैं यहाँ डच सरकार के नियमों और कानूनों के अनुसार न्याय

करने के लिए बाध्य हूँ। मुझे इस बात का अवसर दो कि मैं तुम्हें यह बता सकूँ कि तुम्हें न्यायसम्बन्धी कार्यों में बोलते देख कर मुझे महान आश्चर्य हो रहा है।'

जोन्स एक पल के लिए बहुत व्याकुल हो गया। ऐसा कभी नहीं हुआ था कि इस छोटे लड़के ने जो कि आयु में उससे कम से कम दस वर्ष छोटा था, इस प्रकार का रुख रखा हो। उसने अपनी बात को समझाकर कहने पर माफी माँगने के लिए अपने अधरों को खोला ही था कि कन्ट्रोलियर ने अपने छोटे-छोटे हाथ उठा कर उसे रोक दिया।

'यह मेरे कार्यालय जाने का समय है जोन्स—नमस्कार!'

उस पादरी ने एक दम पीछे हटकर, झुक कर उसे नमस्कार किया और धीरे-धीरे कमरे से बाहर चला गया। यदि वह उस समय पीछे मुड़कर देखता तो कन्ट्रोलियर के व्यवहार पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता था; उसने क्रोध से अपने दाँतों को पीसा और तिरस्कार से जोन्स की ओर देखा।

कुछ पल बाद वह अपने कार्यालय की ओर गया। उसके दफ्तर के बड़े बाबू ने, जो डच था, उसे पिछली रात की घटना का विवरण दिया। यह उसी प्रकार था, जैसा कि मिस्टर जोन्स ने बताया था। उसी दिन अदालत भी लगी हुई थी।

'क्या आप पहले जिजर टेड को बुलाना चाहेंगे जनाब?' बड़े बाबू ने पूछा।

'ऐसा करने का कोई विशेष कारण तो नजर नहीं आता। पिछले दो-तीन मुकदमें अभी अधूरे पड़े हैं, मैं पहले क्रम से उनको देखूँगा।'

'मैंने सोचा कि शायद वह एक गोरी जाति का मनुष्य है और आप उससे अकेले में मिलना पसन्द करेंगे।'

'न्यायाधीश के लिए गोरी अथवा अन्य जातियों में कोई भेद नहीं हुआ करता मेरे मित्र!' मिस्टर ग्रूटर ने कुछ अभिमान से कहा।

दो

अदालत का एक बड़ा-सा चौकोर कमरा था, जिसमें लकड़ी की बेंचें कतार से लगी हुई थीं और उनका उस द्वीप के निवासी पोलीनेशियन्स, न्यूगिस, चीनी, मलायन आदि—एक भीड़ के रूप में एकत्रित हो गए थे। जब पीछे का दरवाजा खुला और सार्जेन्ट ने आकर कन्ट्रोलियर के आने की सूचना दी, तो सब अभिवादन के लिए उठ कर खड़े हो गए। उसने एक क्लर्क के साथ वहाँ प्रवेश किया और अपने स्थान पर, जहाँ एक वार्निश की हुई मेज रखी थी, आकर बैठ गया। उसके पीछे महारानी विल्हेल्मिना की एक बड़ी तस्वीर लगी थी। पहले उसने लगभग आधे दर्जन मुकदमों को निबटाया और उसके बाद जिंजर टेड, उसके सामने लाया गया। वह कटघरे में खड़ा था और उसके दोनों ओर दो वार्डर भी थे, जिन्होंने उसे पकड़ रखा था। कन्ट्रोलियर ने उसकी ओर गम्भीर दृष्टि से देखा परन्तु उसकी आँखों की मुस्कान फिर भी छलक ही आई।

जिंजर टेड किसी रोग से पीड़ित था। वह कुछ झुककर खड़ा हुआ था और उसकी आँखों में जैसे शून्य लहरा रहा था। वह साधारण कद का, कुछ मोटा व्यक्ति था जिसके चेहरे पर लाल धब्बे और सिर पर लाल घुँघराले बाल थे। उसकी अवस्था अधिक नहीं थी—अधिक से अधिक तीस वर्ष! वह झगड़े से बचे बिना नहीं आ सका था। उसकी आँखें काली थीं और मुँह कहीं-कहीं से कट कर सूज आया था। वह उस समय खाकी कमीज पहने था जो बहुत गन्दी हो गई थी और पीठ पर से काफी फट भी गई थी। सामने की ओर फटे वाल भाग से उसके सीने पर उगे हुए लाल बाल अच्छी तरह दिखाई दे रहे थे और उन बालों के पीछे से, आश्चर्यजनक रूप से गोरी, उसकी देह झाँक रही थी।

कन्ट्रोलियर ने उसके विरुद्ध लगाये गये अभियोग को एक बार पढ़ा

और गवाहों को बुलाया। उनका बयान सुनने के बाद जब उसने उस चीनी आदमी को देख लिया जिसका सिर जिंजर टेड ने बोतल की चोट से फोड़ दिया था तब उसने उस सार्जेन्ट की कहानी भी सुन ली जिसको उसने गिरफ्तार करते समय पछाड़ कर गिरा दिया था, जब पूरी कथा सुन ली तो वह अपराधी की ओर घूमा और उससे अँगरेजी में सम्बोधित करके बोला—

'अच्छा, तुम अपनी सफाई में क्या कहना चाहते हो?'

'मैं अन्धा हो गया था—मुझे इस घटना के विषय में कुछ याद नहीं है। यदि वे लोग यह कहते हैं कि मैंने उसे अधमरा कर दिया था, तो मेरे विचार से वे ठीक कहते हैं। यदि वे मुझे समय देंगे तो मैं आधा हर्जाना भर दूँगा।'

'तुम ऐसा करोगे जिंजर?' कन्ट्रोलियर ने कहा—'पर इसके लिए तुम्हें अवकाश देने वाला मैं हूँ!'...

उसने एक पल मौन रह कर जिंजर टेड की ओर देखा। इस समय वह जैसे निर्विकार हो उठा था—जैसे एक वस्तु के असंख्य टुकड़े हो गए हों—बड़ा भयावह! यदि मिस्टर जोन्स ने उतनी अनधिकार चेष्टा न की होती, और कन्ट्रोलियर ने उसे तब देखा होता, तो वह अवश्य उसे देश निकाला दे देता।

'जबसे तुम इस द्वीप पर आए हो, तुमने सदा नुकसान ही पहुँचाया है, जिंजर! तुम एक कलंक हो। तुम असाधारण रूप से आलसी और सुस्त हो। न जाने कितनी बार गलियों में तुम्हें शराब के नशे में चूर पाया गया है। तुम्हें बार-बार लोगों ने तिरस्कृत किया है—तुम बिल्कुल बेकार व्यक्ति हो! मैंने तुमसे पिछली बार कहा था कि यदि तुम दुबारा गिरफ्तार किये गये तो मैं तुम्हारे साथ सख्ती से पेश आऊँगा। इस बार तुम सीमाओं को पार कर चुके हो...मैं तुम्हें छः माह के लिए कड़ी मेहनत की सजा देता हूँ।'

'मुझे ?'

'तुम्हें !'

'मैं भगवान की शपथ लेकर कहता हूँ कि जब भीमैं छुटकारा पाऊँगा, मैं तुम्हें मार डालूँगा।'

वह गन्दे शब्दों में ईश्वर की निन्दा करने और शपथ लेने में व्यस्त हो गया। ग्रूटर ने तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा, और सुना। कोई भी व्यक्ति अंगरेजी की अपेक्षा डच में अच्छी तरह शपथ ले सकता है और जिजर टेड ने जो कुछ भी कहा, उसमें एक भी ऐसा शब्द नहीं था, जो वह अच्छी तरह समझ पाता !

'ग्रूटर जब नाश्ता करने बैठा, तो बहुत अच्छे मूड में था। थोड़ा भी सख्ती का व्यवहार करने के बाद यदि मनुष्य हँसी-मज़ाक में भाग ले सके तो आश्चर्य होता ही है। बटाविया आदि के लोग उसके इस द्वीप को बहिष्कृत समझते थे। उन्हें इस बात का बहुत थोड़ा ज्ञान था कि वह उस दशा में ही कितना प्रसन्न रह रहा था। उन्होंने उससे कई बार पूछा था कि उसने क्लब, रेस और सिनेमा, सप्ताह में एक बार 'कैसिनो' में होने वाले नाच और डच महिलाओं के सम्पर्क को कितनी बार छोड़ा था। कभी नहीं ! वह आराम पसन्द करता था। उसके कमरे में जितना सामान था, उसके आराम और सन्तोष के लिए पर्याप्त था। उसे 'फ्रेंच' भाषा के उपन्यास पढ़ने का शौक था और वह बिना यह सोचे-समझे कि उसका कुछ समय उसमें नष्ट हो रहा है, एक के बाद दूसरा पढ़ता चला जाता था। समय नष्ट करना उसके लिए सबसे अधिक आरामदायक चीज थी।

जब वह अपने इस देश में आया, उसका नौकर एक छोटे व्यक्ति को लेकर आया, जिसका रङ्ग साँवला और आँखें चमकदार थीं। उसने इस बात का प्रयास किया कि उसके व्यवहार में परिवर्तन आ जाए। उसका विचार था कि इस प्रकार के परिवर्तन से मनुष्य प्रसन्न रहता है। वह

सदा स्वतन्त्र रहा था और उसने कभी उत्तरदायित्व का भार नहीं वहन किया था। उसे गर्मी की लेशमात्र भी चिंता नहीं थी। उसने एक जलमार्ग बनवा रखा था, जहाँ से दिन में कम से कम ६ बार ठंडा पानी आता था। वह पियानो बजाता था और हॉलैण्ड में रहने वाले अपने मित्रों को पत्र भी लिखा करता था। उसे महान व्यक्तियों के विषय में बात करने की कभी आवश्यकता नहीं प्रतीत हुई। उसे हँसी-मज़ाक इतना पसन्द था कि भोजन करने से लेकर दर्शनशास्त्र के व्याख्यानदाता से बात करने तक में वह आनन्द प्राप्त कर लेता था। उसका यह विचार था कि वह एक छोटा, किन्तु बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है।

सुदूरपूर्व में रहने वाले डच लोगों की तरह उसने अपना खाना हॉलैण्ड की बनी हुई जौ की शराब से आरम्भ करता। इसे पीकर उसे लगता जैसे वह अपनी जाति के सब नियमों पर काबू पा चुका है। उसके बाद वह 'रिस्टाफिल' लेता। यह वह रोज पीता। वह चावलों से भरी हुई प्लेट पर टूट पड़ता और तब उसके तीन छोकरे, जो उस समय तक जिसकी प्रतीक्षा करते होते, उनमें से एक दही लाकर उसके हाथ में थमाता, दूसरा तले हुए अंडे और तीसरा चटनी। उसके बाद प्रत्येक एक दूसरी प्लेट लेकर आता। जिसमें या तो गोश्त होता या केले होते या मछलियाँ रखी होतीं। वह एक दम उसे हाथ में ले लेता और खाना शुरू कर देता। वह धीरे-धीरे बड़े इतमीनान के साथ खाता और एक बोतल बियर की भी खाली कर देता।

परन्तु वह खाते समय कभी कुछ सोचता नहीं था। उसका ध्यान अपने सामने बैठे लोगों की ओर लगा रहता और जब वह उस बड़ी प्लेट को खाली कर देता तो उसे यह सोचकर बड़ा सन्तोष मिलता कि दूसरे दिन उसे फिर रिस्टेफिल खाने को मिलेगा। वह इससे उतना ही कम ऊबता जितना कम हम लोग रोटी से ऊबते हैं। शराब पीने के बाद वह सिगार जला लेता। एक छोकरा उसके लिए एक प्याले में कॉफी ले

आता। तब वह अपनी कुर्सी से टेक लगा कर बैठ जाता और सोचने में व्यस्त हो जाता।

जिंजर टेड को ६ माह की कड़ी मेहनत की सजा दे चुकने की याद जब कभी उसके मानस-पटल पर छा जाती तो वह उत्तेजित हो उठता। जब वह उसे अन्य कैदियों के साथ नाव पर काम करते देखता, तो मुस्कान की पतली-सी रेखा उसके अधरों पर फैल कर रह जाती। उसे देश-निकाले की सजा देना एक भारी मूर्खता होती, क्योंकि वही एक ऐसा व्यक्ति था जिससे वह प्रायः जी खोल कर बातें किया करता था और दूसरे इस कृत्य से जो संतोष धार्मिक संस्थाओं को मिलता वह इस व्यक्ति के हित में कभी अच्छा न होता। जिंजर टेड आवारा था पर कन्ट्रोलियर के मन में उसके लिए एक अनोखा स्थान था। उन्होंने कितनी ही बार एक साथ बैठ कर कई-कई शराब की बोतलें समाप्त की थीं। कन्ट्रोलियर को जिंजर टेड की वह लापरवाही और अस्त-व्यस्तता, न जाने क्यों बड़ी प्यारी लगती जिसमें वह अपना अनमोल जीवन व्यतीत करता था।

एक दिन जिंजर टेड मिरौक से मैकासर जाने वाली नाव पर पहुँचा। कप्तान को यह नहीं मालूम था कि वह वहाँ कैसे पहुँचा, पर उसने उनके साथ काफी लम्बी यात्रा की थी और कप्तान ने अलास द्वीपसमूह पर नाव रोक दी थी क्योंकि उसे वहाँ के दृश्य बड़े अच्छे लगते थे। मिस्टर ग्रूटर को सन्देह था। इसका कारण उन लोगों के लिए डच लोगों के झंडे के नीचे रहकर अँगरेजी शासन से दूर रहने का आकर्षण था। किन्तु उसके सब कामकर ठीक से काम पर लगे हुए थे, तब ऐसा कौन-सा कारण हो सकता था कि वह वहाँ न ठहरता? शराब पीने में उसका बहुत समय व्यतीत हो जाता था, इतना कि उसे अन्य कार्यों के लिए अवकाश ही नहीं मिल पाता था। उसे हफ्ते में दो पौंड के हिसाब से धन इंगलैंड से मिलता था, जो प्रति माह, बिना किसी रुकावट के उसके पास पहुँच जाता था। कन्ट्रोलियर का विचार था कि यह धन उसे उसी समय तक

मिलेगा, जब तक वह उन मेडीने वालों से दूर रहेगा। उसे किसी प्रकार की स्वतन्त्रता देना असम्भव था। जिंजर टेड एक जिद्दी आदमी था। कन्ट्रोलियर ने खोज करके यह भी जान लिया था कि वह एक अँगरेज है। इसका पता उसे जिंजर टेड के पासपोर्ट से चला था, जिसमें उसका नाम एडवर्ड विलसन लिखा हुआ था और यह भी लिखा था कि वह आस्ट्रेलिया में रहा करता था। परन्तु उसने इंगलैंड क्यों छोड़ा और आस्ट्रेलिया में वह क्या करता रहा, इसका वह कभी पता न पा सका; और न उसे यह मालूम हो सका कि जिंजर टेड किस श्रेणी का व्यक्ति था।

जब कोई उसे ढीले-ढाले कपड़ों में टोपी लगाये, हाथों में कहानियों की पुस्तक लिए हुए देखता, उसका असभ्य, अनपढ़ और जिद्दी मनुष्य जैसा वार्तालाप सुनता, तो उसे लगता कि वह एक मजदूर अथवा नाविक है, जिसने अपनी नाव को तोड़फोड़ डाला है। किन्तु जब कोई उसकी लिखाई को देखता, तो वह आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता था, क्योंकि वह किसी बिना पढ़े-लिखे व्यक्ति की नाईं प्रतीत होती थी और मौका पड़ने पर जब कोई उससे अकेले में मिलता, जब उसने थोड़ी शराब पी होती, वह ऐसे विषयों पर बातें करता जिन पर न कोई नाविक और न ही कोई मजदूर बात कर सकता है। कन्ट्रोलियर भावुक व्यक्ति था और उसे प्राय: ऐसा लगता था कि जिंजर टेड उससे मातहत की तरह नहीं, बराबरी वाले की तरह बातें करता है।

उसके पास जितना भी पैसा आता था उसके हाथ में आने से पहले ही चीनी लोग जिनका उसपर उधार होता था, ले लेते थे और इसके बाद जो कुछ बचता वह उसे शराब में उड़ा देता था और ऐसी ही दशा में उसने यह मुसीबत खड़ी कर दी थी, क्योंकि जब भी वह अधिक पी लेता, उसे नशा हो आता था और तब वह प्राय: ऐसे काम कर बैठता था कि उसे पुलिस की हिरासत में जाना पड़ता था। इस बार भूटर ने

निश्चय कर लिया था कि उसे उस समय तक जेल से छुट्टी नहीं देगा जब तक वह एक गम्भीर और विचारशील व्यक्ति नहीं बन जायेगा। जब उसके पास पैसा नहीं होता था, वह यही सोचा करता था कि वह किसके पास जाये जो उसे शराब पिला दे। ताड़ी या अच्छी शराब, उसे इन दोनों में कोई अन्तर न जान पड़ता। एक दो बार ग्रूटर ने उसे चीनी लोगों के खेतों पर होने वाले काम के सिलसिले में दूसरी जगह भी भेज दिया था किन्तु वह इस काम को भी ढंग से पूरा नहीं कर सका, और बहुत जल्दी बारू लौट आया। यह एक आश्चर्य की बात थी कि वह मन और शरीर दोनों में स्वस्थ कैसे रहता था! उसका एक अपना नियम था! वह जानता था कि विभिन्न प्रदेशों वाली भाषाओं को तोड़-मरोड़ कर उनके उचित अनुचित प्रयोगों से लोगों को किस प्रकार हँसाया जा सकता है। वे उससे घृणा करते थे, किन्तु उसके सम्पर्क में रहना उन्हें अच्छा लगता था और वे उसके शारीरिक बल का आदर करते थे। वह कभी भोजन करना और चटाई पर सोना न छोड़ता—और यही उसके बल और स्वास्थ्य की कुञ्जी थी।

एक अजीब बात थी, और यह अजीब बात ओवेन जोन्स को बहुत बुरी लगती थी, कि वह स्त्रियों के साथ जो चाहता कर सकता था। कन्ट्रोलियर कभी इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उन्हें उसमें ऐसा कौन-सा आकर्षण दिखाई देता था। वह उनके साथ स्वतन्त्रता-पूर्वक, किन्तु कुछ जंगलीपन से पेश आता। वह उन सब चीजों को सहर्ष स्वीकार कर लेता जो वे उसे देतीं, किन्तु आभार की एक रेखा तक उसके चेहरे पर न आती। वह उन्हें अपने मनोरंजन का साधन समझता और जी ऊबने पर चुपचाप उनसे दूर हट जाता। एक-दो बार इस आदत के कारण उसे परेशानी भी उठानी पड़ी—एक बार तो ग्रूटर को उस चीनी लड़की के पिता को जिंजर टेड का खून कर देने की अनुमति तक देनी पड़ी, जिसने अफीम खाकर आत्महत्या कर ली थी, क्योंकि जिंजर टेड ने

उसका सर्वस्व अपहरण करके उसे कहीं का न छोड़ा था। एक बार जोन्स उसके पास बहुत नाराज होकर आया था क्योंकि उसने उसकी शिष्या के साथ भी यही किया था—वह आवारा था! कन्ट्रोलियर इस बात से सहमत था कि यह उसकी ज्यादती है किन्तु वह जोन्स को केवल यह सलाह भर दे सका कि उसे उन शिष्याओं पर अपनी नजर रखनी चाहिये। कन्ट्रोलियर को यह अच्छा नहीं लगता था कि कभी-कभी वह स्वयं जिस लड़की को पसन्द करता था, जिंजर टेड उससे भी अपना खेल खेलने लगता था। जब उसे इस घटना की याद आती तो साथ ही छः मास की लम्बी सजा की बात सोचकर उसके अधरों पर एक कुटिल मुस्कान खेल जाती। ऐसा संसार में बहुत कम होता है कि अपने साथ कुछ बुराई करने वाले व्यक्ति को कोई हृदय से क्षमा कर सके!

कुछ दिनों के बाद एक दिन ग्रूटर कुछ टहलने और कुछ काम देखने की गरज से उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ बहुत से कैदी एक वार्डर की अध्यक्षता में कार्य कर रहे थे। उन्हीं के बीच उसने जिंजर टेड को भी देखा जो जेल के कपड़े पहने हुए था और उसके सिर पर उसकी अपनी मैली टोपी थी। वे लोग एक सड़क की मरम्मत कर रहे थे और जिंजर टेड के सिर पर एक भारी बोझा था। रास्ता सँकरा था, और कन्ट्रोलियर ने देखा कि वह उसके बहुत निकट से—एक फुट की दूरी से—निकल कर जायेगा। उसे उसकी धमकियाँ याद आ गईं। वह जानता था कि जिंजर टेड जिद्दी व्यक्ति है और जिन शब्दों में सजा का निर्णय सुनने के बाद उसने बदला लेने का प्रण दोहराया था, उनमें सन्देह का कहीं स्थान न था। यदि यहाँ से निकलते समय जिंजर टेड यह भारी बोझा उसके सिर पर दे मारे, तो संसार की कोई शक्ति उसे बचाने में समर्थ नहीं हो सकती। यह सच है कि वार्डर तुरन्त उसे गोली मार देगा, किन्तु तब तक कन्ट्रोलियर का सिर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर

जायेगा। हृदय में एक आतंक का भाव लेकर कन्ट्रोलियर उन कैदियों के पास निकला।

वे लोग एक-दूसरेसे कुछ फुट की दूरी पर एक-एक जोड़ा बना कर काम कर रहे थे। जैसे ही वह जिंजर टेड के पास से होकर निकला, उसने अपना बोझा नीचे रख दिया और कन्ट्रोलियर की ओर देखने लगा। निगाहें मिलते ही उसने अपनी आँख को एक कोने से दबा दिया। कन्ट्रोलियर ने बड़ी मुश्किल से अपने अधरों पर आती हुई मुस्कान को रोक कर अपने पद का मान रखने का प्रयास किया किन्तु उसके इस व्यवहार से उसे काफी संतोष हुआ। यदि डच सिविल सर्विस के छोटे अफसर के स्थान पर वह बगदाद का खलीफा होता तो वह जिंजर टेड को तुरन्त झुक कर सलामी देता, उसे नहलाने और सजाने के लिए दास नियुक्त कर देता और तब सुनहरी पोशाक पहनाकर उसका जी भर स्वागत करता!

जिंजर टेड एक साधारण कैदी था और जब भी कभी आवश्यकता पड़ने पर कैदियों का एक झुण्ड कहीं बाहर काम करने के लिए भेजा जाता, कन्ट्रोलियर हमेशा उनमें जिंजर टेड को भी शामिल कर देता था। वहाँ कोई जेल नहीं था, अतः वह दस कैदियों को एक वार्डर की अध्यक्षता में भेज देता, जहाँ वे स्वतन्त्र नागरिकों की भाँति कुछ दिन रह सकते थे। यह काम जिंजर टेड की सजा को काफी कम कर देता था। पास के ही एक द्वीप में इसी तरह कैदियों का एक दल जब जाने लगा तो कन्ट्रोलियर ने उनके साथ जिंजर टेड को भी भेज दिया। जाते समय वह उससे मिलने गया—

'देखो जिंजर!' उसने उससे कहा—'यह दस रुपये रख लो, जब तुम यहाँ से जाओ, तो इसे अपने काम में—तमाखू खरीदने के काम में—ले आना।'

'क्या आप इससे अधिक नहीं दे सकते ? आठ पौंड तो महीने में मेरे पास आते ही हैं ।'

मैं, सोचता हूँ कि यह काफी होगा। मैं तुम्हारे सब खत और रुपये सम्हाल कर रख लूँगा और जब तुम लौटकर आओगे तो तुम्हारे लिए एक अच्छा-खासा धन इकट्ठा हो जायगा जिससे तुम लौट कर आने पर जहाँ चाहो, जा सको। और कहो कैसे हो ?'

'मैं बहुत आराम से हूँ।' जिंजर टेड ने कहा।

'अच्छा, जिस दिन तुम वापस आओ, नहा-धोकर मेरे घर आना। हम लोग साथ-साथ ही शराब पियेंगे।'

'अहा ! यह तो बहुत अच्छी बात है ! मेरा ख्याल है कि मैं इसके लिए अवश्य तैयार रहूँगा।'

तीन

अब परिस्थितियों का खेल आरम्भ हुआ। जिस द्वीप में जिंजर टेड को भेजा गया था, उसका नाम मापूटीटी था और अन्य द्वीपों की भाँति वह भी पथरीला और घने जङ्गलों से घिरा हुआ था और एक बड़ी-सी चट्टान ने उसका एक भाग बिल्कुल अपनी ओट में छुपा लिया था। उस चट्टान के सामने नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ एक गाँव था जिसके कुछ निवासी ईसाई हो गये थे। बारू से इसका व्यापार एक बड़े जहाज द्वारा होता था, जो समय-समय पर इन द्वीपों में आया-जाया करता था। इस जहाज में यात्री भी जाते थे, और माल भी।

जब जिंजर टेड के जाने में पंद्रह दिन शेष रह गये तब अचानक गाँव का प्रधान, जो ईसाई था, बहुत बीमार पड़ गया। उसे बहुत प्रकार की दवायें दी गईं किन्तु उसका रोग कम न हुआ। तब बारू से औषधि लाने के लिए एक व्यक्ति को भेजा गया, परन्तु अभाग्यवश जोन्स उस

समय मलेरिया से पीड़ित था। उसकी दशा चिन्ताजनक थी और वह कहीं भी जाने में असमर्थ था। इस विषय में उसने अपनी बहन से बातें कीं और उसे सब हाल बताया।

'मालूम पड़ता है कि उसे 'अपेन्डिसाइटिस' हो गया है।' उसने उसे बताया।

'लेकिन तुम्हारी हालत जाने लायक नहीं है ओवेन!' बहन ने कहा।

'पर मैं उस व्यक्ति को मर कैसे जाने दूँ?'

जोन्स को उस समय एक सौ चार डिग्री बुखार था और सिर में बेहद दर्द हो रहा था। पिछली रात भर वह सन्निपात की-सी दशा में पड़ा रहा था और इस समय भी उसकी आँखें लाल हो रही थीं।

'तुम ऐसी दशा में उसका ऑपरेशन भी तो ठीक से नहीं कर सकोगे!'

'नहीं, मैं नहीं कर सकूँगा। तब हसन को जाना चाहिए।' हसन उनका कम्पाउण्डर था।

'तुम हसन पर विश्वास नहीं कर सकते। वह अपने उत्तरदायित्व पर कभी ऑपरेशन नहीं कर सकता है और न वे लोग ही उसे ऐसा करने देंगे। मैं चली जाती हूँ—हसन यहाँ रहकर तुम्हारी देखभाल अच्छी तरह कर सकता है।'

'तुम 'अपेंडिक्स' काट सकती हो?'

'क्यों नहीं? मैंने तुम्हें ऐसा करते कई बार देखा है और मैंने बहुत से छोटे ऑपरेशन किये भी हैं!'

जोन्स को लगा जैसे वह अपनी बहन की किसी भी बात को समझ नहीं पा रहा है।

'क्या जहाज तैयार है?'

'नहीं, लेकिन मैं उसी छोटी नाव पर बैठ कर जा सकती हूँ जिस पर वह आदमी तुम्हें बुलाने आया है।'

'तुम ? मैं तुम्हारे बारे में नहीं सोच रहा था। तुम नहीं जा सकतीं।'

'मैं जा रही हूँ ओवेन !'

'कहाँ ?'

उसने देखा कि जोन्स इस समय बुखार की बेहोशी में है। उसने उसके सूखे माथे पर अपना हाथ फेरा, उसे दवा की एक खूराक पिलाई। उसी समय वह कुछ बड़बड़ाया, जिससे यह स्पष्ट हो गया कि उसे उस समय होश नहीं था। वह यद्यपि अपने भाई के विषय में उत्सुक थी, किन्तु वह जानती थी कि उसकी बीमारी इतनी भयानक नहीं है और वह उसे हसन के भरोसे पर अच्छी तरह छोड़ सकती है। वह धीरे से कमरे से बाहर आ गई। अपने शृंगार की चीजें लेकर उसने एक थैले में रखीं, बदलने के लिए एक जोड़ी कपड़े और 'नाइट गाउन' भी रखा। दूसरी अटैची में उसने कुछ चीरफाड़ का सामान, पट्टियाँ और दवायें रख लीं। फिर उसने दोनों चीजें उन लोगों को दे दीं जो उसे लेने आए थे, और हसन से आकर कहा कि वह वहाँ जाकर जो कुछ भी करेगी, उसकी खबर यहाँ भेज दिया करेगी और वह जोन्स को जब उचित समझे तो बता दे। उसे चिन्तित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

उसने अपनी टोपी पहन ली और नाव पर जा कर बैठ गई। उस पर छः आदमी पहले से बैठे थे। जब वे वहाँ से चले, समुद्र बिल्कुल शान्त था, किन्तु कुछ दूर जाते-जाते लहरें ऊँची-ऊँची उछालें भरने लगीं और नाव इधर-उधर डगर-मगर करने लगी। मिस जोन्स को इस प्रकार के मौसम में यात्रा करने का वह पहला अवसर नहीं था किन्तु वह मन ही मन इस बात से डर रही थी कि वहाँ पहुँचते-पहुँचते अँधेरा अवश्य हो जायगा, और तब आपरेशन करने में दिक्कत होगी।

उसकी अवस्था चालीस वर्ष की होगी और देखने में वह बड़ी कट्टर मालूम पड़ती थी किन्तु उसमें कुछ ऐसी शान थी, उसके स्वभाव में कुछ

ऐसी नर्मी थी कि वह हवा के हर झोंके के साथ झुक जाती थी—शायद वह उसके स्नेहशील स्वभाव के कारण ही हो! वह एक दुबली और लम्बे कद की स्त्री थी। उसका चेहरा पतला और लम्बा था और वह गर्मी से जल्दी परेशान हो जाती थी। अपने लम्बे भूरे बालों को खींचकर वह पीछे की ओर एक बड़ा-सा जूड़ा बना लेती थी। आँखें उसकी कुछ छोटी थीं और जरा अधिक समीप होने के कारण उसकी दृष्टि को कठोर बना देतीं थीं। उसकी नाक तीखी, लम्बी और लाल थी। उसे प्राय: अपच की शिकायत रहती, किन्तु वह आशावादी थी। उसे विश्वास था कि दुनिया बुरी है और पुरुष विशेष रूप से जंगली है—अत: उसे कभी किसी की अच्छाई पर जल्दी विश्वास नहीं होता था। वह विवेकशील, फुर्तीली और योग्य स्त्री थी।

जब वह वहाँ पहुँची, उसने देखा कि रोगी की दशा चिन्ताजनक है और एक क्षण भी इधर-उधर बरबाद नहीं किया जा सकता। बड़ी मुश्किलों का सामना करने के बाद, उसने आपरेशन किया और फिर अगले तीन दिनों तक रोगी की सेवा में संलग्न रही। सब कार्य बड़ी सफलतापूर्वक चलता रहा और उसे विश्वास हो गया है कि उसका भाई इससे अधिक सफलतापूर्वक यह काम नहीं कर सकता था। वह टाँके खोलने के विचार से कई दिन रुकी रही और तब घर जाने को तैयार हो गई। उसे इस बात का गर्व था कि यहाँ आकर उसने एक भी क्षण बेकार नहीं गँवाया था। उसने रोगी की यथाशक्ति परिचर्या भी की और उसे विश्वास था कि उसका भाई इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकता था।

जहाज को दूसरे द्वीप से चलने में कुछ देर हो गई थी—शायद दोपहर में कहीं अधिक देर रुकना पड़ा था—किन्तु उस दिन पूर्णिमा थी और सबको विश्वास था कि आधी रात से पहले वे बारू पहुँच जायँगे। उसका सामान लोग वहाँ तक ले आये थे और अब बहुत से उसे धन्यवाद देने तथा उसे विदा देने आये थे। काफी भीड़ इकट्ठी हो गई

थी। वह अपने स्थान पर आराम से बैठ गई और उन लोगों से बातें करने लगी। उस समय वही एक यात्री थी।

अचानक कुछ आदमियों का एक झुण्ड वहाँ आया, जो कि उस छोटे गाँव के आगे वाले जंगल से आ रहे थे, और वहाँ बैठ गया। उनमें एक गोरा मनुष्य भी था। वह कैदियों के कपड़े पहने था और उसके बाल लम्बे और लाल से थे। मिस जोन्स ने एकदम पहचान लिया कि वह मनुष्य जिंजर टेड था। उसके साथ एक पुलिस का आदमी भी था। जिंजर टेड ने अपने साथ आने वाले व्यक्तियों से हाथ मिलाया जो उसके लिए बहुत से फल अपने साथ लाए थे। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जिंजर टेड भी उसी जहाज पर यात्रा करने वाला है। उसकी अवधि समाप्त हो चुकी थी और उसे जहाज से बारू भेज देने की सूचना भी आ गई थी। उसने मिस जोन्स की ओर देखा—किन्तु अपना सिर नहीं हिलाया, और न कुछ कहा ही—मिस जोन्स ने मुँह फेर लिया और अपने स्थान पर आकर बैठ गई। नाविक ने जहाज की मशीन को ठीक किया और कुछ ही पल बाद जहाज पानी की लहरों के साथ बहने लगा। जिंजर टेड एक बोरे पर आकर बैठ गया और सिगरेट सुलगा कर पीने लगा।

मिस.जोन्स उसकी उपेक्षा कर रही थी, यद्यपि वह उससे भली-भाँति परिचित थी। उसे यह सोच कर बड़ा भय लगा कि जिंजर टेड अब फिर बारू वापस जा रहा है—वह फिर उसी प्रकार आवारागर्दी और शराब पीना शुरू कर देगा—तरह-तरह की बातें सुनने में आयेंगी और फिर वह किसी न किसी स्त्री के साथ खिलवाड़ करेगा...जैसा कि वह हमेशा करता आया है।

उसे मालूम था कि उसके भाई ने उसको देशनिकाला दिलवाने के लिये क्या-क्या प्रयास किये थे।

जब वे 'बार' को पार करके समुद्र की खुली सतह पर आ गये,

जिंजरटेड ने शराब की केतली निकाल कर उसकी टोंटी में मुँह लगाया, और एक लम्बा कश खींचा। तब उसने उसे उन दोनों व्यक्तियों को दे दिया जो उसके पास बैठे थे, जिनमें से एक अधेड़ और दूसरा युवक था।

'मैं यह नहीं चाहती कि जब तक हम यात्रा कर रहे हैं, तुम लोग शराब पियो।' मिस जोन्स ने अधेड़ व्यक्ति की ओर देखकर तीखे शब्दों में कहा।

वह उसकी ओर देखकर मुस्कुराया, और उसने केतली अपने मुँह में लगा ली।

'थोड़ी-सी शराब से किसी को कुछ नुकसान नहीं हो सकता।' उसने उत्तर दिया और अपने दूसरे साथी की ओर उस बोतल को बढ़ा दिया।

'अगर तुम दुबारा पियोगे, तो मैं कन्ट्रोलियर से तुम्हारी शिकायत कर दूँगी।'

अधेड़ व्यक्ति ने फुसफुसाकर कुछ कहा, जो उसकी समझ में नहीं आया, किन्तु यह स्पष्ट था कि उसका व्यवहार असभ्यों जैसा था, और शराब का बरतन फिर जिंजर टेड को दे दिया।

वे लोग करीब एक घंटा और आगे की ओर बढ़े। समुद्र शीशे की भाँति चमक रहा था और अस्त होते हुए सूर्य की किरणें बड़ी सुन्दर लग रही थीं। दूर किसी द्वीप के पीछे सूर्य जा छिपा था और कुछ क्षणों के लिये आकाश विभिन्न रंगों से भर उठा। मिस जोन्स ने घूमकर यह दृश्य देखा तो मुग्ध हो उठी।

'और केवल मनुष्य ही जंगली है!' उसने धीरे से फुसफुसा कर कहा।

वे पूर्व की ओर बढ़ते गये। कुछ दूर पर एक द्वीप था, जो वीरान था और जहाँ से होकर उन्हें जाना था। उस द्वीप पर घना-सा जंगल था, जिसके कारण अंधकार और प्रखर हो उठा था। नाविक ने अपनी बत्तियाँ जला कर रोशनी की। रात घिर आई थी और आकाश पर

असंख्य नन्हें-मुन्ने तारे छा गये थे। चाँद अभी नहीं निकला था। अचानक एक धक्का-सा लगा और जहाज इधर-उधर डोलने लगा और एंजिन फक-फक करने लगा। प्रधान नाविक ने अपने साथी को सहायता के लिये बुलाया। ऐसा लग रहा था, मानो वे बहुत ही धीरे-धीरे चल रहे हों। उसी समय एंजिन का चलना बन्द हो गया।

मिस जोन्स ने उस नवयुवक से पूछा कि आखिर बात क्या है, किन्तु वह स्वयं अनभिज्ञ होने के कारण उसे कुछ न बता सका। जिजर टेड अपने स्थान से उठकर वहाँ गया और कुछ देर बाद जब लौटा तो मिस जोन्स का मन हुआ कि उससे पूछे कि आखिर जहाज को हो क्या गया, किन्तु शब्द उसके अधरों तक आकर रह गये। स्वाभिमान ने उसका मुँह बन्द कर दिया था। वह चुपचाप अपने स्थान पर विचारों में घिरी बैठी रही। उसी समय नाविक फिर दिखाई दिया, और उसने फिर एंजिन को चालू किया—जहाज फक-फक की आवाज़ करके फिर चल पड़ा, किन्तु उसकी चाल बहुत धीमी थी। अभी उन्हें कई द्वीपों पर रुकना था, और जहाज की चाल से यह स्पष्ट था कि इस प्रकार वे आधी रात से ज्यादा बीत जाने के बाद—बहुत देर बाद बारू पहुँच सकेंगे। नाव का मिस्त्री अभी भी जहाज के पुर्जों को ठीक करने में व्यस्त था—अचानक वह बूगी भाषा में कुछ चिल्लाया, जिसे मिस जोन्स नहीं समझ सकीं, और उसी समय जहाज ने अपना रुख बदला और उस निर्जन वीरान द्वीप की ओर बढ़ने लगा।

'हम लोग कहाँ जा रहे हैं?' मिस जोन्स ने कुछ घबराकर पास बैठे हुए व्यक्ति से पूछा।

उसने इशारे से वही वीरान द्वीप दिखाया, जिसे देख कर वह उठ खड़ी हुई और मशीन के पास आकर उसने प्रधान नाविक से बाहर आने के लिए कहा।

'तुम किधर चल रहे हो? आखिर मामला क्या है?'

'आज हम बारू नहीं जा सकते।' उसने उत्तर दिया।

'लेकिन तुम्हें वहाँ जाना ही चाहिये। मैं इस बात पर जोर देती हूँ... मैं आज्ञा देती हूँ कि सीधे बारू चलो।'

उस व्यक्ति ने अपने कंधे हिलाये और उसकी ओर देखे बिना ही पीठ फेर कर फिर अन्दर चला गया। तब जिंजर टेड ने उससे कहा—

'प्रोपेलर का एक अंश टूट गया है। उसका कहना है कि हम अधिक से अधिक इस द्वीप तक जा सकते हैं। हमें वहाँ आज रात रुकना पड़ेगा। कल सुबह वह नया प्रोपेलर लगा सकेगा, जब तूफान भी कम हो जायेगा।'

'मैं तीन आदमियों के साथ उस वीरान स्थान में रात भर अकेली नहीं रह सकती!' उसने चिल्ला कर कहा।

'बहुत-सी स्त्रियाँ इस बात पर ईर्ष्या करेंगी!'

'मैं बारू जाने पर जोर देती हूँ। जैसे भी हो, हमें आज रात वहाँ पहुँच ही जाना चाहिये!'

'इतनी उत्तेजित मत होओ। नया प्रोपेलर लगाने के लिये हमें जहाज को किनारे लगाना ही पड़ेगा और उस द्वीप पर हम बहुत अच्छी तरह समय काट सकेंगे!'

'तुम्हारा मुझसे इस प्रकार बोलने का साहस कैसे हुआ? मेरे विचार में तुम बड़े बेहया आदमी हो!'

'तुम वहाँ बड़ी अच्छी तरह रहोगी। हमारे पास खाने का काफी सामान है। थोड़ी-सी शराब तुम भी पी लेना और......'

'तुम बड़े बेशर्म आदमी हो। यदि तुम इस समय बारू नहीं गये तो मैं तुम्हें जेल भिजवा दूँगी!'

'हम बारू नहीं जा रहे हैं। हम वहाँ जा ही नहीं सकते। हम लोग उस द्वीप की ओर जा रहे हैं और यदि तुम्हें वहाँ जाना पसन्द न हो,

तो तुम शौक से समुद्र में कूद सकती हो, और तैर कर बारू तक जा भी सकती हो।'

'ओह, लेकिन तुम्हें इसका मूल्य चुकाना ही पड़ेगा!'

'चुप रहो!' जिंजर टेड ने डाँट कर कहा।

मिस जोन्स को बड़ा क्रोध आया किन्तु वह चुप रही। उसने बीच समुद्र में उस जंगली को छेड़ना उचित नहीं समझा। जहाज धीरे धीरे जैसे रेंगता रहा किन्तु थोड़ी देर में वह द्वीप भी, जिसकी ओर वे बढ़ रहे थे, आँखों से ओझल हो गया। मिस जोन्स अपने ओठों को दाँतों से दबाये, चुपचाप झुँझलाई हुई-सी बैठी थी। उसी समय आकाश पर चाँद निकल आया और उसने जिंजर टेड को अपने स्थान पर लोट लगाते हुए देखा। उसकी सिगरेट की महक चारों ओर फैल रही थी। दूर पर वह द्वीप भी दिखाई देने लगा था।

अन्त में, बड़ी देर तक भटकने के बाद वे वहाँ पहुँचे और नाविक ने जहाज को एक किनारे लगा दिया। अचानक मिस जोन्स का हृदय धड़क उठा......क्रोध का स्थान भय ने ले लिया था...उसका अंग-प्रत्यंग काँप उठा। उसे लगा, मानो अब वह बेहोश हो जायगी...प्रोपेलर का टूटना वास्तव में एक दुर्घटना है, या इन लोगों ने जानबूझ कर... वह किसी बात का निश्चय नहीं कर सकी किन्तु उसे विश्वास था कि जिंजर टेड कभी ऐसा मौका हाथ से न जाने देगा—कभी नहीं......वह उसका सर्वनाश कर देगा......उसके चरित्र से वह अच्छी तरह परिचित थी—वह स्त्रियों के पीछे पागल रहता था। यहीं उसने मिशन की उस लड़की के साथ किया था...जो कितनी सीधी और भोली थी। वे जिंजर टेड को इसकी सजा दे सकते थे—वे उसे देशनिकाला दे सकते थे, जिसने उस बेचारी गरीब लड़की के जीवन से खिलवाड़ करके उसे हमेशा-हमेशा के लिये रोता छोड़ दिया था। वे लोग इस बात के लिये कन्ट्रोलियर के पास गये भी थे, किन्तु उसने इस प्रकार की कोई सजा देने से इन्कार कर

दिया था। उसका कहना था कि यदि वह घटना वास्तव में सच भी हो, तो भी उस लड़की को इसका कुछ बुरा नहीं लगा क्योंकि वह अब भी खुश थी। भगवान जाने इसमें क्या सच था, और क्या झूठ...किन्तु इतना अवश्य था कि जिजर टेड एक बदनाम आदमी था और मिस जोन्स एक स्त्री थी...गोरी...और देखने में अच्छी! फिर इस बात की गुंजाइश ही कहाँ हो सकती थी कि जिंजर टेड उसे अछूता छोड़ देगा! कभी नहीं...वह उससे अच्छी तरह परिचित है! किन्तु उसे अपने ऊपर संयम रखना ही पड़ेगा...उसे साहस और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिये। वह अपनी सब चीजें बेचकर उसे रुपये दे देगी.. किन्तु यदि जिजर टेड उसे मार भी डालेगा, तो अपमानित होकर, लाँछना सह कर जीने से तो मर जाना ही अच्छा है...तब वह मर कर भगवान की गोद में पहुँच जायेगी...और एक पल के लिए उसे लगा, मानो सामने साक्षात भगवान खड़े हों। इसी समय जहाज रुक गया।

जहाज बनाने वाला मिस्त्री और जिंजर टेड कूद कर नीचे आये और कमर तक पानी में खड़े होकर टूटे हुए प्रोपेलर को घेर लिया। मिस जोन्स ने अवसर का फायदा उठाया और झटपट अपना दवाओं वाला थैला खोलकर कुछ औजार बाहर निकाल लिए और उन्हें अपने कपड़ों में छुपा लिया। यदि जिजर टेड ने उसके शरीर पर हाथ भी लगाया, तो वह इसी छुरे से उसका काम तमाम कर देगी।

'अच्छा देवी जी!' जिजर टेड ने उसे सम्बोधित करके तीखे व्यंग्य से कहा—'बेहतर हो, यदि अब आप नीचे उतर आएँ। नाव में रहने से तो इस धरती पर रहना अधिक अच्छा होगा!

उसने भी यही ठीक समझा...कम से कम नीचे उतरने पर उसे कार्य करने की स्वतन्त्रता तो होगी। बिना कुछ कहे वह बोरों पर चढ़ गई और नीचे उतरने का प्रयास करने लगी। जिजर टेड ने उसकी सहायता के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत नहीं है।' उसने ठंडे स्वर में कहा।

'मेरी ओर से तुम जहन्नुम में चली जाओ!' उसने जवाब दिया। जहाज से उतरते समय उसके पैर खुल जाने की बहुत सम्भावना थी—वह कुछ देर चुपचाप सोचती रही, फिर कपड़ों को चारों ओर से लपेट कर वह किसी तरह नीचे उतर आई।

'हमारे पास खाने का सामान है! अभी हम आग जलायेंगे और तब अच्छा हो तुम भी थोड़ी शराब पी लो!'

'मुझे कुछ नहीं चाहिये—मैं सिर्फ एकान्त चाहती हूँ।'

'तुम्हारे भूखे रहने से मुझे कोई नुकसान नहीं होगा, न कोई कष्ट ही होगा।'

उसने जिंजर टेड की इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। वह सिर ऊँचा करके आगे बढ़ गई—सबसे बड़ा छुरा उसने अपने कपड़ों में छुपा रखा था। चाँदनी में वह रास्ता खोज कर आगे बढ़ने लगी। वह अपने छुपने के लिए कोई स्थान ढूँढ़ रही थी। समुद्र के किनारे तक घना जंगल फैला हुआ था, किन्तु वहाँ अत्यधिक अंधकार होने के कारण उसमें घुसने का साहस नहीं कर पा रही थी। उसे मालूम नहीं था कि वहाँ किस प्रकार के जानवर होंगे, न जाने कितनी तरह के साँप... बिच्छू...वह सिहर उठी। उसका अन्तर कह रहा था कि जंगल में जाने से तो अच्छा है कि वह किसी ऐसे स्थान पर जा कर छुप जाए जहाँ से उसे वे तीनों 'बुरे' आदमी कम से कम दिखाई तो देते रहें। यदि उनमें से किसी ने भी उसके निकट आने का साहस किया तो वह उसके लिए भी तैयार थी। उसी समय उसको एक गड्ढा-सा दिखाई दिया। उसने अपने चारों ओर नजर डाली। वे लोग अपने कार्य में व्यस्त मालूम पड़ रहे थे और उसकी ओर नहीं देख रहे थे। वह जल्दी गड्ढे में कूद गई। उसके और उन लोगों के बीच में एक बड़ी चट्टान थी

जिसके पीछे वह छुप गई थी और उनकी आँखों से ओझल होने पर भी उन्हें अच्छी तरह देख सकती थी।

उसने उन्हें जहाज तक जाते और अपना सामान लाते देखा। फिर उन्होंने आग जलाई और उसके चारों ओर घिर कर बैठ गए और शराब पीते रहे। वे सब नशे में चूर हो जाने वाले थे...और यदि ऐसा हुआ तो उसका क्या हाल होगा? हो सकता है, वे जिंजर टेड से मिल जाएँ... वह तो उसकी ही शक्ति से बहुत डरती थी, तीन व्यक्तियों का सामना वह अकेली कैसे कर पायेगी?

अनायास ही यह पागलपन का विचार उसके मन में आया कि वह जिंजर टेड के पास जाये और घुटने टेक कर उससे प्रार्थना करे कि वह उसे अछूता छोड़ दे। उसमें कहीं न कहीं कोई न कोई अच्छाई अवश्य ही छुपी होगी क्योंकि हर बुरे आदमी में एक न एक गुण होता ही है, ऐसा उसका विश्वास था। उसकी माँ अवश्य होगी—हो सकता है, उसकी कोई बहन भी...परन्तु एक नशे से चूर, मदहोश व्यक्ति के पास जाकर कोई इस प्रकार की विनय करने का साहस कैसे कर सकता है? उसे लगने लगा मानो वह बहुत कमजोर है...उसको इतना डर लगा कि उसका मन जोर-जोर से रोने का हो आया। किन्तु उसने अपने को संयत करने का प्रयास किया। उसने अपने ओठों को चबाया और फिर उनकी ओर देखने लगी। वह उनकी ओर इस प्रकार देख रही थी, जैसे एक शेर अपने शिकार को, नहीं, नहीं, जैसे एक भेड़ का बच्चा अपने सामने खड़े हुए भेड़िये को देख रहा हो! उसने देखा कि उन लोगों ने आग में और लकड़ियाँ डाल कर उसे उभार लिया था और जिंजर टेड अपनी शराब की केतली लिये अभी तक वहीं बैठा हुआ था, शायद अपनी इच्छा पूरी करने के बाद अपनी वासना शांत करने के बाद वह उसे उन दोनों आदमियों को सौंप देगा और तब वह अपने भाई के पास क्या मुँह लेकर जायेगी? यद्यपि उसके भाई को उससे सहानुभूति अवश्य होगी किन्तु क्या

स्नेह और प्यार के वे भाव फिर कभी उसके मन में आ सकेंगे ? इससे उस असहाय आत्मा का दिल न टूट जायेगा ? शायद वह यह सोचे कि उसे परिस्थितियों से और अधिक लड़ना चाहिये था !

...लेकिन यदि वह इसके विषय में किसी से एक भी शब्द न कहेगी, तोशायद वह इस प्रकार की प्रताड़ना और लाँछन से बच जायेगी। पर यदि उसने किसी बच्चे को जन्म दिया तो...उसने अपने दोनों हाथों की मुट्ठियाँ कस के बाँध लीं...फिर उसने अपने छुरे को टटोल कर देखा...फिर अचानक जोर से चिल्ला उठी—

'मैं क्या करूँ ? मैंने इतना दंड भोगने लायक कौन-सा पाप किया है ?'

वह अपने घुटनों के बल बैठ गई और भगवान से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगी। वह बहुत देर तक उसी प्रकार बैठी रही...उसने भगवान को याद दिलाया कि वह एक कुमारी है और सेंट पौल ने उसकी इस पवित्रता की कितनी प्रशंसा की थी !

और तब उसने एक बार फिर चट्टान के पीछे से झाँक कर उन लोगों की ओर देखा। तीनों आदमी अभी भी सिगरेट के कश खींच रहे थे, और आग ठंडी पड़ने लगी थी। अब वह समय निकट आता जा रहा था जब कि जिजर टेड के मन में उसके लिए कुछ भाव उठे और वह उसके पास आकर बलात्कार करे, जो केवल उसकी दया पर यहाँ पड़ी हुई है। अचानक उसके मुँह से एक चीख निकल पड़ने को हुई क्योंकि जिजर टेड उठ खड़ा हुआ था, और उसकी ओर बढ़ा आ रहा था। उसे लगा, मानो वह जड़ हो उठी है और उसका रोम-रोम भय से खड़ा हो गया है। उसने छुरे को दृढ़ता से पकड़ लिया...किन्तु जिजर टेड किसी और काम से उठा था—वह फिर वहीं जाकर बैठ गया ! मिस जोन्स अपने आप लजा गई और दूसरी ओर देखने लगी। जिजर टेड ने शराब का बर्तन फिर मुँह से लगा लिया था।

वह चट्टान के पीछे से उसी प्रकार झाँकती रही। धीरे-धीरे उस अग्नि के चारों ओर होने वाले वार्तालाप की ध्वनि मंद पड़ती गई और उन दो व्यक्तियों ने कम्बल ओढ़ कर धरती की शरण ली। शायद जिंजर डेड इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था। जब वे लोग गहरी नींद में सो जायँगे तो वह बहुत धीरे से उठेगा, जिससे उनकी नींद न खुल जाये, और हल्के कदमों से उसके पास आ जायगा। क्या वह यह चाहता था कि उसके इस कार्य में वे दोनों उसका सहयोग दें, या वह यह जानता था कि जो काम वह करने जा रहा है, वह इतना घृणित है कि यदि उनको यह न मालूम हो, तभी अच्छा है। आखिरकार वह एक गोरा व्यक्ति है और वह भी एक गोरी स्त्री है। वह शायद इस बात को सहन न कर सकता हो कि वे लोग उससे खिलवाड़ करें। किन्तु उसके इस विचार से मिस जोन्स को शान्ति मिली...जब जिंजर इस ओर उठकर आने लगेगा तो वह बहुत जोर से चिल्लायेगी...इतनी जोर से कि गहरी नींद में सोये हुए वे दोनों व्यक्ति जाग जायेंगे। उसे याद आया कि उस अधेड़ व्यक्ति के मुख पर—यद्यपि वह काना है, एक करुण भाव था। किन्तु जिंजर टेड अपने स्थान से हिला भी नहीं। मिस जोन्स को इस समय बड़ी थकान लग रही थी। उसे लगा जैसे अब उसमें उनका सामना करने की शक्ति नहीं रह गई है। वह बहुत सोच चुकी थी और उसके मन तथा मस्तिष्क पर शैथिल्य छाता जा रहा था। उसने पल भर के लिए अपनी पलकें मूँद लीं।

...जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा चारों ओर दिन का प्रकाश फैला हुआ था...तो...तो वह सो गई थी...और...उसने उठने का प्रयास किया किन्तु उसके पैरों पर कोई चीज भारी-भारी-सी लगी...वह हड़बड़ा कर एक दम खड़ी हो गई। चारों ओर देखने पर उसे पैरों के पास पड़े हुए बोरे दिखाई दिये जो किसी ने उसके ऊपर डाल दिये थे। कोई रात में उसके पास आया था और उन्हें उसके ऊपर डाल गया था...जिंजर

टेड ? उसके मुँह से एक हल्की-सी चीख निकल गई...उसे लगा कि नींद में सोते समय जिंजर टेड ने उसके साथ अपना काम कर लिया है... नहीं...ऐसा नहीं हो सकता...यह असम्भव है! वह उसकी दया की पात्री थी...साधनहीन! और उसने उसे छोड़ दिया...जिंजर टेड ने उसे छोड़ दिया—वह अपने आप ही लजा गई! उसने उठ कर अपने अस्त-व्यस्त कपड़े ठीक किये। छुरा उसके हाथ से छिटक कर दूर जा गिरा था। उसने झुककर उसे उठा लिया—उन चीरों को तह करके अपने हाथ में ले लिया और धीरे-धीरे नाव की ओर बढ़ी। जहाज छिछले पानी में अब भी तैर रहा था।

'आओ मिस जोन्स।' जिंजर टेड ने कहा—'हमने अभी-अभी नाश्ता खतम किया है। मैं तुम्हें अभी जगाने ही वाला था।'

उसने उसकी ओर देखा नहीं किन्तु उसे लगा मानो उसका चेहरा लाल हो उठा हो।

'केला खाओगी?' जिंजर टेड ने पूछा।

बिना कुछ कहे उसके हाथ से केला लेकर वह जल्दी-जल्दी खाने लगी—भूख के मारे आँतें दोहरी हुई जा रही थीं।

'इस चट्टान पर चढ़ जाओ जिससे पैर गीले हुए बिना ही तुम आसानी से यहाँ तक आ सको।'

मिस जोन्स को लगा—काश! यह धरती फट जाती और वह अपनी सब लज्जा बटोर कर उसमें समा जाती...उसने चुपचाप ही जिंजर टेड की बात मान ली। जिंजर ने उसका हाथ पकड़ लिया...हे भगवान! उसका हाथ लोहे के समान ठंडा था—वह कभी उन हाथों से विद्रोह नहीं कर सकती थी...कभी...नहीं...और उसे जहाज पर चढ़ने में सहायता दी। नाविक ने लंगर खोल दिया और कुछ देर में ही जहाज उस सुनसान, वीरान स्थल को छोड़कर समुद्र को चीरता हुआ आगे बढ़ने लगा और तीन घंटे बाद वे लोग बारू पहुँच गए।

चार

उस शाम को, जेल से छूटने के बाद जिंजर टेड कन्ट्रोलियर के पास गया। इस समय वह जेल के कपड़े नहीं पहने था। खाकी कमीज और पैंट उसके शरीर पर थे, जिन्हें वह गिरफ्तार होने से पहले पहना करता था। उसने अपने बाल कटवा लिये थे और इस समय एक छोटी-सी टोपी लगाये हुए था। वह कुछ दुबला और छोटा हो गया था और पहले से सुन्दर दिखाई पड़ रहा था। ग्रूटर ने एक मित्रताभरी मुस्कान से उसका स्वागत किया, हाथ मिलाया और उसे बैठने के लिए कहा। उसका नौकर दो बोतल शराब दे गया।

'मुझे तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हो रही है जिंजर! तुम मेरा निमन्त्रण भूले नहीं!' कन्ट्रोलियर ने कहा।

'मैं भूल कैसे सकता था? मैं तो पिछले छः महीनों से इसकी प्रतीक्षा कर रहा था।'

'मैं तुम्हारे लिए शुभकामनाएँ प्रकट करता हूँ, जिंजर!'

'मैं भी! कन्ट्रोलियर!'

उन्होंने अपने गिलास खाली कर दिये और कन्ट्रोलियर ने दोनों हाथों से ताली बजाई। नौकर दो बोतलें और दे गया।

'मुझे आशा है, मैंने जो तुम्हें सजा दी थी, उसके लिए अब तुम्हारे मन में मेरे प्रति कोई मैल नहीं होगा।'

'जरा भी नहीं! क्षण भर के लिए मैं पागल हो गया था पर फिर तुरन्त ही सम्हल गया। मेरा समय भी कुछ बुरा नहीं बीता कन्ट्रोलियर। तुम जानते हो, उस द्वीप पर बहुत-सी लड़कियाँ थीं...तुम एक बार वहाँ जरूर जाना!'

'तुम बड़े खराब हो जिंजर!'

'बहुत !' जिंजर टेड मुस्कुराया।

'यह शराब अच्छी है न !'

'बेहद !'

'हम लोग थोड़ी और पियेंगे !'

जिंजर टेड का पैसा हर महीने आता रहा था और इस समय कन्ट्रोलियर के पास उसके पचास पौंड थे। चीनी दूकानदार का हर्जाना भरने के बाद भी उसमें से तीस पौंड से ऊपर ही बच रहे थे।

'यह काफी पैसा है जिंजर ! तुम्हें इससे कोई लाभदायक काम करना चाहिये।

'मैं इसे खर्च करना चाहता हूँ !' जिंजर ने उत्तर दिया। कन्ट्रोलियर ने एक ठंडी और लम्बी साँस खींची।

'उसी के लिए तुम शायद यह पैसा मँगाते हो।'

इसके बाद कन्ट्रोलियर ने अपने मेहमान को वहाँ के सब हाल बताए। पिछले ६ महीनों में कोई विशेष घटना नहीं हुई थी।

'कहीं कोई लड़ाई तो नहीं छिड़ी ?' जिंजर टेड ने पूछा।

'नहीं, मेरे ख्याल से तो नहीं छिड़ी। हैरी जर्विस को एक बड़ा मोती मिला है। वह कहता है कि वह उसके एक हजार रुपये लेगा।'

'मुझे आशा है कि उसे मिल भी जायेंगे।

'और चार्ली मैकोमैक की शादी हो गई।'

'वह हमेशा कमजोर रहा !'

अचानक, नौकर ने आकर कहा कि जोन्स उससे मिलना चाहता है। इससे पहले कि कन्ट्रोलियर कोई उत्तर दे पाता, जोन्स अन्दर आ गया।

'मैं तुम्हें अधिक देर नहीं रोकूँगा। जोन्स ने कहा—

'मैं इस भद्र सज्जन को आज सारे दिन से ढूँढ़ निकालने की कोशिश कर रहा हूँ और जब मुझे मालूम हुआ कि ये यहाँ हैं, मैं यहाँ चले आने का लोभ संवरण न कर सका।'

'मिस जोन्स कैसी हैं ?' कंट्रोलियर ने नर्मी से पूछा—'उस खुले स्थान में कोई विशेष घटना तो नहीं हुई होगी, मेरा विश्वास है !'

'वह कुछ घबराई हुई अवश्य है—उसे कुछ हरारत भी हो आई है किंतु मैं सोचता हूँ एक-दो दिन में ठीक हो जायेगी।'

जोन्स के आने पर दोनों व्यक्ति उठकर खड़े हो गए थे—अब जोन्स ने आगे बढ़कर जिंजर टेड के कंधों पर एक हाथ रख कर दूसरा हाथ अपने हाथों में ले लिया।

'मैं तुम्हें धन्यवाद देना चाहता हूँ। तुमने बहुत अच्छा और भद्र व्यवहार किया। मेरी बहन ठीक कहती है कि हमें प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई अच्छाई देखने का प्रयास करना चाहिए। मुझे अफसोस है कि मैंने अब से पहले तुम्हें हमेशा गलत समझा...मैं उसके लिए तुमसे क्षमा माँगता हूँ !'

वह बड़ी गम्भीरता से कहता गया। जिंजर टेड उसकी ओर आश्चर्य से देखता रहा। वह उससे अपना हाथ नहीं छुड़ा सका...जोन्स के हाथों में अब भी उसका हाथ था।

'तुम यह सब क्या कह रहे हो ?'

'मेरी बहन तुम्हारी दया पर थी, और तुमने उसे छोड़ दिया। मैं सोचता था कि तुम बुरे हो, केवल बुरे ! और मैं उसके लिए लज्जित हूँ। वह लाचार थी ! वह तुम्हारी शक्ति के आगे बेबस थी। तुमने उस पर दया की। मैं तुम्हें इसके लिए हृदय से धन्यवाद देता हूँ।' न मैं और न मेरी बहन—हम दोनों में से कोई भी इसे जीवन भर नहीं भुला सकेंगे। भगवान तुम्हें हमेशा खुश रखे ?'

जोन्स की आवाज जरा काँपी और उसने अपना सिर घुमा लिया। उसने जिंजर टेड का हाथ छोड़ दिया और तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ा। जिंजर टेड खाली-खाली-सी आँखों से उसकी ओर देखता रहा।

'आखिर इस सबका मतलब क्या है ?' उसने पूछा। कन्ट्रोलियर हँस

पड़ा। उसने अपने को संयत करने का प्रयास किया लेकिन जितना ही वह हँसी रोकता, उतनी ही अधिक उसे हँसी आती। वह हँसते-हँसते दोहरा हो गया और अपनी कुर्सी पर टिक कर इधर-उधर लुढ़कने-सा लगा। वह केवल अपने चेहरे से ही नहीं हँस रहा था, उसका सारा शरीर हिल रहा था—यहाँ तक कि उसके पैर की पिंडलियाँ भी काँप रही थीं। उसने अपनी दुःखती पसलियों को पकड़ लिया। जिंजर टेड ने कुछ गुस्से से उसकी ओर देखा, और क्योंकि उसे कुछ समझ में नहीं आया, वह अधिक नाराज़ हो गया। उसने खाली बोतल को हाथ में उठा लिया।

'यदि तुम हँसना बन्द नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।' उसने कहा।

कन्ट्रोलियर ने अपना मुँह छुपा लिया। फिर एक घूँट शराब पी और बोला—

'वह तुम्हें धन्यवाद देने आया था, क्योंकि तुमने मिस जोन्स के कुमारीत्व की रक्षा की थी।'

'मैंने?' जिंजर टेड चिल्ला उठा।

वह काफी देर तक सोचता रहा, और जब उसकी समझ में बात आ गई तो उसे कुछ क्रोध हो आया।

'वह बूढ़ी औरत?' उसने कहा—'आखिर वह मुझे समझती क्या है?'

'तुम्हारे विषय में यह बदनामी है कि तुम लड़कियों के साथ रहकर बड़ी जल्दी उत्तेजित हो जाते हो जिंजर!' कन्ट्रोलियर ने गिड़गिड़ा कर कहा।

'मैं तो उसे दो सौ गज लम्बी छड़ की नोक से भी न छूता! मेरे दिमाग में तो यह बात ही कभी नहीं आई थी। और वह जंगली? मैं उसकी गर्दन मरोड़ दूँगा। इधर देखो—मेरे रुपये दे दो, मैं अभी जाकर शराब पियूँगा।'

'मैं उसके लिये तुम्हें दोष नहीं देता।' कन्ट्रोलियर ने कहा।

'वह बुढ़िया...' जिंजर टेड ने फिर कहा—'वह बूढ़ी औरत...' उसे बहुत बुरा लगा था। इस बात से सचमुच उसके अन्तर को कष्ट पहुँचा था।

कन्ट्रोलियर ने उसके रुपये लाकर उसे दे दिया, और जरूरी कागजों पर हस्ताक्षर लेने के बाद कहा—

'जाओ! जाकर शराब पी डालो—किन्तु याद रखना इस बार यदि तुमने बदमाशी की, तो बारह महीने से कम की सजा नहीं दूँगा।'

'मैं कोई बदमाशी नहीं करूँगा—' जिंजर टेड ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया—'यह अपमान है।' उसे कष्ट हो रहा था...उसने कन्ट्रोलियर की ओर देखकर गुस्से से चिल्लाकर कहा—

'मैं कहता हूँ, यह अपमान है...बे-इज़्ज़ती है!'

वह एकदम उस घर से बाहर चला गया...जाते समय वह धीरे-धीरे बड़बड़ा रहा था—'घिनौने कीड़े कहीं के!'

'जिंजर टेड शराब पीकर एक हफ्ते तक पड़ा रहा। जोन्स एक बार फिर कन्ट्रोलियर से मिलने गया—

'मुझे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि उस बेचारे ने अपना बुरा रास्ता फिर पकड़ लिया है?' उसने कहा—मैं और मेरी बहन दोनों को यह जानकर बेहद दुःख हुआ। मैं सोचता हूँ, सब रुपये एक साथ देकर आपने गलती की!'

'ये रुपये उसके थे—मुझे उसे अपने पास रखने का कोई अधिकार नहीं था।'

'कानूनी हक न हो, किन्तु एक अभिभावक के नाते तो आप ऐसा कर ही सकते थे।'

फिर उसने कन्ट्रोलियर को उस रात की घटना...उस निर्जन द्वीप में बिताई हुई उस रात की घटना, विस्तारपूर्वक बताई। मिस जोन्स को

विश्वास था कि शराब के नशे में चूर यह व्यक्ति अवश्य उसकी कमजोरी से फायदा उठायेगा और यह सोचकर उसने किस प्रकार अपने को बचाने का निश्चय किया था। फिर उसने यह भी बताया कि उसकी बहन ने अपने आपको किस प्रकार उस गड्ढे में छुपा लिया था, किस प्रकार भगवान् से प्रार्थना की थी और रोई भी थी। उसका भय अविश्वसनीय साथ ही अवर्णनीय भी था और वह जानती थी कि उस लज्जाप्रद स्थिति में वह कहीं की न रहती! हर क्षण उसे यही लग रहा था, कि वह उसके पास आता ही होगा...परन्तु उसका कोई चारा न था और अन्त में थक कर वह सो गई थी...बेचारी, थक कर सो गई, और जब उसकी आँख खुली उसने देखा कि वह बोरों को ओढ़े हुए पड़ी है। जिंजर टेड ने उसे सोता हुआ पाया था—यह उसकी विवशता और असहायता ही थी, जिसने उसका पत्थर जैसा दिल भी पिघला दिया था...उसे छूने का उसका साहस न हुआ और धीरे से उसे बोरे उढ़ाकर वह वहाँ से चुपचाप चला आया था।

'इससे यह स्पष्ट है कि उसके अन्तर में कहीं न कहीं देवता भी छुपा हुआ है। मेरी बहन का कहना है कि यह हमारा धर्म है कि हम उसकी रक्षा करें। उसके लिए कुछ न कुछ तो करना ही चाहिये!'

किन्तु जिंजर टेड बचना नहीं चाहता था। जेल से छूटने के पन्द्रह दिन बाद एक दिन वह एक चीनी दूकानदार की दूकान के सामने एक स्टूल पर बैठा हुआ था, जब उसने सामने की गली से मिस जोन्स को आते देखा उसने उसकी ओर एकबार फिर घूर कर देखा और आश्चर्य से भर उठा। वह स्वयं ही कुछ बड़बड़ाया और इसमें सन्देह नहीं कि उस फुसफुसाने में उसकी असभ्यता स्पष्ट थी। तभी उसने देखा कि मिस जोन्स की दृष्टि उस पर पड़ चुकी है। उसने मुँह फेर लिया, किन्तु उसे पूरे समय बराबर यही लगता रहा कि मिस जोन्स की तीक्ष्ण दृष्टि उसी पर जमी हुई है। वह जल्दी-जल्दी चल रही थी किन्तु उसके निकट आते-

आते उसने अपनी चाल धीमी कर दी। जिंजर टेड ने सोचा कि वह वहाँ रुककर अवश्य उससे कुछ बातें करेगी, अतः वह उठ कर दूकान के अन्दर चला गया। पाँच मिनट तक वह बाहर ही नहीं आया। आधे घंटे बाद जोन्स स्वयं उसके पास आया और हाथ मिलाता हुआ कहने लगा—

'कहो एडवर्ड! क्या हालचाल है? मेरी बहन ने बताया था कि तुम मुझे इस समय नहीं मिलोगे!'

जिंजर टेड ने तीक्ष्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा—पर न अपना हाथ ही छुड़ाया और न कुछ बोला ही।

'इस अगले रविवार को तुम हमारे साथ ही खाना खाओ तो हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। मेरी बहन खाना बहुत अच्छा बना लेती है और उस दिन हम तुम्हें ऑस्ट्रेलियन खाना खिलायेंगे।'

'भाड़ में जाओ!' जिंजर टेड ने कहा।

'वह कोई बड़ी अच्छी बात नहीं है।' जोन्स ने उसकी बात पर ध्यान न देते हुए कहा—'तुम कन्ट्रोलियर के यहाँ जा सकते हो तो हमारे यहाँ क्यों नहीं आ सकते? कभी-कभी गोरे लोगों से बात करना और मिलना बड़ा अच्छा लगता है! क्या तुम पिछली बातें नहीं भुलाओगे? मैं तुमसे हार्दिक स्वागत करने का वायदा करता हूँ!'

'मेरे पास कहीं जाने के लिए अच्छे कपड़े नहीं हैं!' जिंजर टेड ने कुछ हिचकिचाहट के साथ कहा।

'उँह, उससे क्या होता है! तुम ऐसे ही आना, जैसे इस समय हो!'

'मैं नहीं आऊँगा।'

'क्यों नहीं? आखिर उसका भी कोई कारण तो होना चाहिए।' जिंजर टेड स्पष्टवादी व्यक्ति था। उसे यह कहने में जरा भी हिचक नहीं लगी कि—

'क्योंकि मेरी इच्छा नहीं होती।'

'मुझे दुःख है, किन्तु इससे मेरी बहन को बड़ी निराशा होगी।'

जोन्स ने इस प्रकार सिर हिलाया मानो इस बात का उस पर कोई प्रभाव न पड़ा हो और वहाँ से चला गया।

अड़तालीस घंटे बाद जिंजर टेड को एक पार्सल मिला जिसमें एक सूट, एक कमीज, मोजे और जूते थे। उसे कभी इस प्रकार के उपहार नहीं मिले थे और दूसरी बार जब वह कन्ट्रोलियर से मिला तो उससे उसने पार्सल के बारे में इस प्रकार पूछा मानो वह उसी ने भेजा हो।

'कभी नहीं, कन्ट्रोलियर ने उत्तर दिया—'मुझे तुम्हारी पोशाक से कभी मतलब नहीं रहा।'

'तब किसे मुझसे मतलब है?'

'इसकी खोज करनी पड़ेगी।'

मिस जान्स के लिए यह आवश्यक था कि वह समय पर अपने काम के सिलसिले में कन्ट्रोलियर से मिलती रहे। इस घटना के कुछ ही दिन बाद एक दिन वह आफिस में उससे मिलने आई। वह एक योग्य स्त्री थी और यद्यपि वह उससे कुछ ऐसा काम कराना चाहती थी, जिसे वह खुद करना पसन्द नहीं करता था, फिर भी वह उसका समय कभी खराब नहीं करती थी। कन्ट्रोलियर को कुछ आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि वह बहुत जरा-सी बात को लेकर उसके पास आई है। जब उसने मिस जोन्स को बताया कि इस मामले में वह कुछ न कर सकेगा, तो हमेशा की तरह उसने उसे अपनी बात का विश्वास मनवाने का प्रयास नहीं किया और उसकी बात मान कर एकदम उठ खड़ी हुई। वह जाने को तैयार हुई, फिर जैसे कुछ याद करके बोली—

'ओह! मिस्टर ग्रूटर! मेरा भाई जिंजर टेड के साथ खाना खाने को बड़ा उत्सुक है। मैंने उसे एक छोटा-सा पत्र लिखकर आमंत्रित किया है—परसों के लिए—मेरा ख्याल है कि वह जरा झेंपता अधिक है—क्या आप भी उसके साथ ही आ सकेंगे?'

'आपकी दया है।'

'मेरे भाई का विचार है कि हमें उस बेचारे के लिए कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए!'

'आखिर एक स्त्री के मनोभावों का कुछ तो असर होना ही चाहिये!' धीरे से कन्ट्रोलियर ने कहा।

'क्या आप उससे आने के लिए कहेंगे? यदि आप कह देंगे तो मुझे विश्वास है कि वह अवश्य आयेगा और जब उसे एक बार रास्ता मालूम हो जायगा, तो वह दुबारा भी आ सकता है। सचमुच यह बड़े दुःख की बात है कि उसके समान एक भले आदमी का जीवन इस प्रकार नष्ट हो।'

कन्ट्रोलियर ने उसकी ओर देखा—वह उससे कई इंच लम्बी थी और वह उसे बड़ी आकर्षणहीन लगी। उसकी आँखें झपक गईं किन्तु उसने अपना सिर नहीं झुकाया—वैसे ही सीधे खड़े-खड़े बोला—

'मैं भरसक प्रयास करूँगा।'

'उसकी क्या उम्र होगी?' मिस जोन्स ने पूछा।

'पासपोर्ट के अनुसार इकत्तीस वर्ष।'

'और उसका असली नाम क्या है?'

'विल्सन!',

'एडवर्ड विल्सन!' उसने कोमलता से कहा।

'यह आश्चर्य की बात है कि जिस प्रकार का जीवन उसने व्यतीत किया है, उसके बाद भी वह इतना दृढ़ और बलवान है।' कन्ट्रोलियर ने कहा—'उसमें एक बैल के समान शक्ति है।'

'इस प्रकार के लोगों में बहुत ताकत होती है।' मिस जोन्स ने उत्तर दिया, किन्तु ऐसा लगा, जैसे शब्द उसके गले में फँस से रहे थे।

'हाँ, यही बात है!' कन्ट्रोलियर ने उसकी बात का समर्थन किया।

अकारण ही मिस जोन्स झेंप गई। उसने जल्दी से कन्ट्रोलियर को अभिवादन किया और जल्दी से उसके आफिस से बाहर निकल आई।

'भगवान बचाइये!' कन्ट्रोलियर ने कहा।

अब उसकी समझ में आ गया था कि जिंजर टेड को नये कपड़े किसने भेजे थे।

वह दिन में जाकर उससे मिला और पूछा कि उसने मिस जोन्स की ओर से कोई समाचार पाया है, या नहीं। जिंजर टेड ने एक तह किया हुआ कागज अपनी जेब से निकाल कर उसे पकड़ा दिया। वह निमन्त्रण-पत्र था—लिखा था—

'प्रिय मिस्टर विल्सन,

मुझे और मेरे भाई को हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि आप अगले बृहस्पतिवार को साढ़े सात बजे हमारे साथ भोजन करेंगे। कन्ट्रोलियर ने भी बड़ी मेहरबानी करके उक्त अवसर पर आना स्वीकार कर लिया है। हमारे पास आस्ट्रेलिया के कुछ नये रिकार्ड्स भी हैं जो मुझे विश्वास है, आपको पसन्द आयेंगे। मुझे दुःख है कि अपनी पिछली भेंट के समय मेरा व्यवहार आपके साथ अच्छा नहीं था, किन्तु तब मुझे यह मालूम नहीं था कि आप इतने अच्छे हैं—मैं अपना अपराध स्वीकार करती हूँ। मुझे आशा है कि आप मुझे क्षमा करेंगे और अपना मित्र बनाये रखेंगे।

आपकी स्नेही,
मार्था जोन्स'

कन्ट्रोलियर ने देखा कि मार्था ने उसे मिस्टर विल्सन कहकर सम्बोधित किया था और उसके अपने वहाँ जाने के वचन का जिक्र भी पत्र में किया था। शायद उसे विश्वास था कि ऐसा करने पर जिंजर टेड अवश्य वहाँ जा सकेगा।

'तुम अब क्या करोगे?'

'यदि तुम्हारा इससे मतलब है, तो मैं बता देता हूँ कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। बेवकूफ लड़की !'

'लेकिन तुम्हें खत का जवाब तो देना ही चाहिये !'

'नहीं, मैं नहीं दूँगा।'

'देखो जिंजर ! अब तुम अपने नये कपड़े पहन कर तैयार हो जाओ और मेरे साथ चलो। मुझे वहाँ जाना है। इस किस्से को छोड़ो। तुम मुझे इस प्रकार बीच में नहीं छोड़ सकते—एक बार चले चलने से तुम्हारी कोई हानि नहीं हो जायेगी !'

जिंजर टेड ने किंचित् आश्चर्य से कन्ट्रोलियर की ओर देखा, किन्तु वह गम्भीर था। उसे जरा भी यह अनुमान नहीं हुआ कि वह मन ही मन कितना हँस रहा है।

'आखिर तुम मुझसे चाहते क्या हो ?'

'मुझे नहीं मालूम—शायद केवल तुम्हारे सामीप्य का सुख मेरा विचार है।'

'अच्छा !' कुछ सोचते हुए जिंजर टेड ने कहा।

'तुम मेरे पास सात बजे आ जाना !' कन्ट्रोलियर ने उसे फिर याद दिलाते हुए कहा।

'अच्छा-अच्छा !'

कन्ट्रोलियर ने प्रसन्न होकर अपने मोटे, गुदगुदे हाथों को मला। उसे आशा थी कि उस दिन बड़ा आनन्द रहेगा, किन्तु जब बृहस्पतिवार आया तो जिंजर टेड नशे में चूर पड़ा था और प्रूटर को वहाँ अकेले ही जाना पड़ा। उसने जोन्स और मार्था को सब बातें बिना किसी हिचकिचाहट के साफ-साफ बता दीं। जिन्हें सुनकर जोन्स ने सिर हिलाकर कहा—

'मुझे डर है कि इससे कुछ नहीं हो सकता। मार्था ! वह एक बिल्कुल बेकार आदमी है !'

एक पल के लिए मिस जोन्स चुप रही और कन्ट्रोलियर ने देखा कि

उसकी लम्बी-पतली नाक के पास से आँसू बह रहे थे—उसने अपने ओंठ चलाये।

'कोई बेकार नहीं होता! हर आदमी में कोई न कोई अच्छाई अवश्य होती है। मैं उसके लिए रोज भगवान से प्रार्थना किया करूँगी। भगवान की सत्ता में अविश्वास करना पाप है!'

शायद मिस जोन्स का कहना ठीक था, किन्तु दैवी शक्ति ने अपना प्रभाव उल्टा ही दिखाया। जिंजर टेड पहले से भी अधिक मात्रा में शराब पीने लगा। वह इतना जिद्दी और सनकी था कि कभी-कभी मूडर भी उसके साथ अपना धैर्य खो बैठता था। उसने निश्चय कर लिया कि अब वह उसे उस द्वीप में और अधिक दिन नहीं रहने देगा और जो पहला जहाज बारू से दूर जायगा, उसमें उसे रवाना कर देगा।

उन्हीं दिनों एक व्यक्ति, जो वहाँ घूमने के विचार से आया था, अजीब परिस्थितियों में पड़ कर मर गया और कन्ट्रोलियर को बाद में यह भी पता चला कि उन द्वीपों में इस प्रकार कई घटनाएँ हो चुकी हैं। उसने चीनी डॉक्टर को देखने के लिए भेजा कि आखिर मामला क्या है और बहुत जल्दी उसे मालूम हो गया कि यह मृत्यु हैजे के कारण हुई थी। इसी बीच दो मृत्यु बारू में भी हुईं और कन्ट्रोलियर परेशानी में पड़ गया।

उसने जी भर कर कोसा—डच भाषा में, अँग्रेजी में और मलाया की भाषा में! तब उसने एक बोतल शराब पी और सिगरेट के कश खींचने लगा। उसके बाद उसने सोचना शुरू किया कि चीनी डाक्टर के किये कुछ न होगा। वह जावा का रहने वाला एक कमजोर व्यक्ति था और कन्ट्रोलियर को मालूम था कि द्वीप के लोग उसकी बात मानने को कभी तैयार न होंगे। कन्ट्रोलियर स्वयं बहुत योग्य था और जानता था कि ऐसे मौकों पर क्या करना चाहिये, किन्तु अकेले वह सब करना उसके वश का काम नहीं था। उसे जोन्स बहुत पसन्द नहीं था किन्तु जब भी वह उसे बुलवाता; वह तुरन्त आकर हाजिर हो जाता। यही उसकी सब से

बड़ी अच्छाई थी। दस मिनट बाद ही जोन्स अपनी बहन को लेकर वहाँ आया।

'तुम जानते हो जोन्स, मैं तुमसे किस विषय पर बात करना चाहता हूँ ?' उसने कहा।

'हाँ, मैं तुम्हारा सन्देश पाने की आशा कर ही रहा था। इसीलिये मैं अपनी बहन के साथ तुम्हारे पास आया हूँ। हम दोनों तुम्हारे आदेशों का पालन करने के लिए तैयार हैं—मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं कि मेरी बहन में एक पुरुष के समान सभी योग्यताएँ हैं।'

'मैं जानता हूँ। मुझे उनकी सहायता पाकर अधिक हर्ष होगा।'

अधिक विलम्ब किये बिना वे उस विषय पर बातें करने लगे। अस्पतालों का इन्तजाम ठीक होना चाहिए, और द्वीप के हर व्यक्ति को रोग से बचने का प्रयास करना चाहिए। बहुत से गाँवों में सब लोग एक ही कुयें से पानी भरते थे, जिसकी सफाई होनी आवश्यक थी। यह आवश्यक था कि हर व्यक्ति को यह बात अच्छी तरह समझा दी जाय कि उसके बनाये नियमों का पालन न करने पर दंड भुगतना पड़ेगा। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह थी कि एक द्वीप के निवासी दूसरे द्वीप के निवासियों की बात नहीं मानते थे। जोन्स का बारू में रहना आवश्यक था, जहाँ की जनसंख्या सबसे अधिक थी, और जहाँ दवाओं की अधिक जरूरत पड़ सकती थी। सरकारी काम होने के कारण मूटर का भी दूसरे द्वीपों में जाना असम्भव था। मिस जोन्स जा सकती थी, किन्तु कुछ द्वीपों के निवासी जंगली और असभ्य थे और कन्ट्रोलियर को स्वयं उनके साथ बड़ी दिक्कत और परेशानी होती थी। उसने इस बात को जरा भी पसन्द नहीं किया कि मिस जोन्स को बेकार परेशानी में डाल दिया जाय।

'मैं डरती नहीं हूँ।' उसने कहा।

'यह मैं जानता हूँ। किन्तु यदि किसी ने तुम्हारा गला काट दिया

तो ?...फिर हम लोग यहाँ इतने कम हैं कि मैं तुम्हारी सहायता से वंचित होना नहीं चाहता।'

'तब मिस्टर विल्सन को मेरे साथ जाने दो। वह वहाँ के निवासियों को अच्छी तरह जानते हैं और उनकी भाषायें भी अच्छी तरह बोल सकते हैं।

'जिंजर टेड ?' कन्ट्रोलियर ने उसकी ओर घूर कर देखा—'लेकिन अभी हाल में ही वह बीमार था !'

'मुझे मालूम है।' उसने उत्तर दिया।

'तुम्हें बहुत बातें मालूम हैं मिस जोन्स !' यद्यपि उस समय बहुत गम्भीर बातें हो रही थीं, कन्ट्रोलियर मुस्कुराये बिना नहीं रह सका। उसने तीक्ष्ण दृष्टि से मिस जोन्स की ओर देखा—वह चुप रही।

'क्या तुम यह समझती हो कि ऐसे बदनाम व्यक्ति के साथ अनियमित समय के लिए तुम्हारा रहना उचित है ?' जोन्स ने पूछा।

'मैं भगवान में विश्वास करती हूँ !' उसने गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया।

'क्या तुम समझती हो कि वह कुछ काम आ सकेगा ?' कन्ट्रोलियर ने पूछा—'तुम जानती हो, वह कैसा आदमी है !'

'मुझे इस बात का खूब पता है।' उसने लजा कर कहा—'आखिर उसके विषय में मुझसे अधिक कौन जानता है कि उसमें बहुत आत्मसंयम है !'

कन्ट्रोलियर ने अपने ओंठ चबाए।

'हम उसे बुलवा लें।'

उसने एक सार्जेण्ट को भेजकर उसे बुलवाया और कुछ ही क्षण बाद जिंजर टेड वहाँ आ गया। वह बीमार दिखाई पड़ रहा था। शायद हाल की बीमारी ने उसकी रगें ढीली कर दी थीं। वह कपड़ों में लिपटा

हुआ था और शायद एक हफ्ते से उसने दाढ़ी भी नहीं बनाई थी। उससे अधिक भयावह शायद ही कभी कोई लग पाये।

'देखो जिंजर !' कन्ट्रोलियर ने कहा—'हैजे के विषय में तुमसे कुछ कहना है। हमें द्वीपनिवासियों को इससे सावधान रहने के लिए जोर देना है और इस समय हमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।'

'मैं क्यों तुम्हारी सहायता करूँ ?'

'इसका कोई कारण नहीं हो सकता—शायद केवल मानवता के नाते !'

'इससे कुछ नहीं होगा। मैं उसमें विश्वास नहीं करता।'

'ठीक है। हमारा काम हो गया—तुम जा सकते हो।' लेकिन जैसे ही जिंजर टेड दरवाजे की ओर मुड़ा, मिस जोन्स ने आगे बढ़ कर उसे रोक लिया।

'यह मेरा प्रस्ताव था, मिस्टर विल्सन ! आप देखते हैं, यह लोग मुझे लाबोबो और साकुँची भेजना चाहते हैं और वहाँ के निवासी इतने अजीब हैं कि मुझे वहाँ अकेले जाने में डर मालूम पड़ता है। मेरा ख्याल है, यदि आप मेरे साथ चलते, तो मैं अधिक सुरक्षित रहती।'

उसने उसकी ओर घृणा की दृष्टि से देखा—'क्या तुम समझती हो कि वह तुम्हारा गला काटेंगे तो मैं परवाह करूँगा ?'

मिस जोन्स ने उसकी ओर देखा...उसकी आँखें भर आईं और वह धीरे-धीरे सिसकने लगी। वह चुपचाप खड़ा उसकी ओर देखता रहा।

'हाँ, कोई कारण मैं ऐसा नहीं बता सकती कि तुम मेरी परवाह करो।' उसने आँखों को पोंछते हुए कहा—'मैं बेवकूफ हूँ। लेकिन मैं अभी ठीक हो जाऊँगी और अकेली ही लाबोबो चली जाऊँगी।'

'एक स्त्री के लिए अकेले लाबोबो जाना बिलकुल बेवकूफी की बात है।'

'यही तो मैं भी कहती हूँ।' किंचित मुस्कुरा कर उसने कहा—'लेकिन तुम जानते हो, यह मेरा कर्तव्य है और मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती।

मुझे दुःख है कि मैंने आप को साथ चलने के लिए कह कर दुखः दिया। आप इसे बिल्कुल भूल जाइये !'

एक पल के लिए जिंजर टेड स्तब्ध खड़ा रह गया, फिर धीरे-धीरे बोला—

'ओह ! जैसी तुम्हारी इच्छा। मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। तुम कब रवाना होना चाहती हो ?'

दूसरे दिन वे लोग दवाइयाँ लेकर सरकारी जहाज से रवाना हो गए। ग्रूटर वहाँ का काम जल्दी ही समाप्त करके दूसरी दिशा की ओर छोटी नाव से जाने वाला था। चार महीने बीमारी फैली रही। यद्यपि बीमारी को रोकने का भरसक प्रयास किया जा रहा था किन्तु एक के बाद दूसरे द्वीप में बीमारी फैलती गई। कन्ट्रोलियर सुबह से शाम तक व्यस्त रहता। जैसे ही वह एक द्वीप से लौट कर बारू पहुँचता, उसे दूसरे द्वीप में जाना पड़ता। उसने वहाँ खाना और दवायें बाँटी, लोगों को डराया भी और खुश भी किया, और हर काम का निरीक्षण किया। वह कुत्ते की तरह काम करता। उसे जिंजर टेड से मिलने का अवसर नहीं मिला, किन्तु जोन्स ने उसे बताया कि काम आशा के विपरीत अच्छी तरह चल रहा है। जिंजर टेड बड़ा सभ्य बन गया है और वह आवश्यकता के अनुसार द्वीपवासियों से सब काम करा लेता है। मिस जोन्स अपनी सफलता पर बड़ी प्रसन्न थी। कन्ट्रोलियर बड़ा परेशान था अतः अधिक प्रसन्न न हो सका। जब बीमारी खत्म हुई, तो उसने चैन की साँस ली, क्योंकि आठ हजार मनुष्यों में से केवल छः सौ व्यक्ति मरे थे।

आखिरकार उसने अपने प्रदेश को बचा ही लिया।

पाँच

एक शाम को वह अपने बरांडे में बैठा हुआ एक फ्रान्सीसी उपन्यास पढ़ रहा था। उसे प्रसन्नता थी कि एक बार फिर चैन के दिन लौट आये

थे। उसी समय उसके नौकर ने आकर बताया कि जिंजर टेड उससे मिलना चाहता है। वह अपनी कुर्सी से उछल कर खड़ा हो गया और चिल्ला कर उसे बुलाया। ऐसा ही सामीप्य तो इस समय वह चाहता था। उसे लग रहा था कि आज की रात शराब पीनी चाहिए—किन्तु अकेले बैठ कर शराब पीने में मजा कहाँ मिलता है ? और उसी समय भगवान ने जिंजर टेड को उसके पास ऐन मौके पर भेज दिया था। सचमुच, आज की रात वह बहुत खुश होगा ! चार महीने की परेशानी के बाद अब उन्हें इसका पूर्ण अधिकार था।

जिंजर टेड अन्दर आया। इस समय वह सफेद रंग की साफ कमीज पहने हुए था। उसकी हजामत भी बनी हुई थी—वह बिल्कुल बदला हुआ लग रहा था।

'क्यों जिंजर, तुम्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है मानो तुमने हैजे के रोगियों की सेवा न करके पिछले दिन किसी स्वास्थ्य-सदन में बिताये हैं। अपने कपड़ों की ओर तो देखो—क्या सीधे दर्जी की दूकान से चले आ रहे हो ?'

जिंजर टेड हल्के से मुस्कुराया। नौकर दो बोतल शराब लाकर मेज पर रख गया।

'उठाओ जिंजर !' कन्ड्रोलियर ने अपना गिलास उठाते हुए कहा।

'मैं नहीं सोचता कि मैं शराब पियूँगा। धन्यवाद।' कन्ड्रोलियर ने अपना गिलास मेज पर रख कर उसकी ओर देखा—आश्चर्य से—बड़े आश्चर्य से !

'क्यों ? क्या बात है ? क्या तुम्हें प्यास नहीं लगी ?'

'मैं एक प्याला चाय पी सकता हूँ।'

'एक प्याला क्या ?'

'मैं वचनबद्ध हूँ। मार्था और मैं शीघ्र ही विवाह करने जा रहे हैं।'

'जिंजर !'

कन्ट्रोलियर की आँखें आश्चर्य से बाहर निकल पड़ने को हो आईं।

'तुम मिस जोन्स से शादी नहीं कर सकते।' उसने कहा, 'मिस जोन्स से कोई शादी नहीं कर सकता।'

'लेकिन मैं करने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें यही बताने आया था। ओवेन उस गिरजे में हमारी शादी करवा देगा, किन्तु हम डच कानून के हिसाब से भी विवाह कर लेंगे।'

'मज़ाक मत करो जिंजर! आखिर तुम्हारा इरादा क्या है?'

'वह यही चाहती है। वह उसी रात से यह चाहती है, जब हम उस निर्जन द्वीप में रात भर पड़े रहे थे। यदि तुम उसके सम्पर्क में रहो तो तुम्हें पता चलेगा कि वह इतनी बुरी नहीं है। मैं उसके लिए कुछ करना चाहता हूँ। और उसे एक संरक्षक की आवश्यकता भी है।'

'जिंजर! जिंजर! वह तुम्हारा धर्म बदल देगी!'

'मैं नहीं सोचता कि मुझे यह इतना बुरा लगेगा यदि हमारा अपना एक धर्म होगा। उसका कहना है कि द्वीपवासियों के साथ जिस काम को करने में जोन्स को एक साल लगता, मैं उसे पाँच मिनट में पूरा कर सकता हूँ। उसका कहना है कि उसने मेरे समान आकर्षण किसी और व्यक्ति में नहीं देखा। इस प्रकार के अवसर को खोना बुद्धिमानी नहीं हो सकती।'

कन्ट्रोलियर आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देखता रहा। फिर उसने धीरे-धीरे अपना सिर तीन-चार बार हिलाया......आखिर उसने इस मनुष्य को ठीक कर ही दिया।

'मैंने सत्तरह आदमियों को ईसाई बना लिया है।' जिंजर टेड ने कहा।

'तुमने? मुझे नहीं मालूम था कि तुम ईसाई धर्म में विश्वास करते हो।'

'मैं नहीं जानता कि वास्तव में बात क्या थी, किन्तु जब मैंने उनसे बातें कीं तो वे भेड़ के समान आसानी से मेरे पंजों में आ गये और... लेकिन जो भी हो, इससे मेरे जीवन में एक महान् परिवर्तन आ गया है, और मैं अब भी कह सकता हूँ कि इसमें जरूर कोई न कोई बात है !'

'अगर तुम उसे बरबाद कर देते जिंजर टेड ! तो मैं तुम पर बहुत सख्ती नहीं करता—मैं तुम्हें तीन साल से ज्यादा की सजा कभी न देता—और तीन साल तो बहुत जल्दी बीत जाते हैं ।'

'इधर देखो ! कन्ट्रोलियर ! तुम यह मत सोचो कि ऐसा भाव मेरे मन में कभी नहीं आया । स्त्रियाँ भावुक होती हैं और तुम जानते हो, यदि उसे यह पता चल जाये तो वह पत्थर के समान कठोर हो जायेगी ।'

'मैं इसका अनुमान लगा रहा था कि उसकी आँखें तुम पर लगी हैं—किन्तु इसका ऐसा परिणाम होगा—यह मैं कभी नहीं सोच सका ।' कन्ट्रोलियर ने परेशानी भरे स्वर में कहा और बरामदे में इधर-उधर टहलने लगा ।

'मेरी बात सुनो जिंजर !' उसने एक क्षण सोच कर कहा, 'हम लोग बहुत समय तक एक दूसरे के साथ रहे हैं और काफी अच्छे मित्र भी हैं । तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं क्या करूँगा । मैं तुम्हें एक जहाज देता हूँ और उसमें बैठ कर तुम किसी द्वीप में जाकर छुप जाओ, जब तक कि दूसरी नाव तुम्हें लेने वहाँ न आये । और तब मैं उसे समझा दूँगा और तुम्हें वापस ले आऊँगा । तुम्हारे पास केवल एक रास्ता बाकी है और वह यह कि तुम भाग जाओ !'

जिंजरटेड ने नकारात्मक ढंग से सिर हिलाया ।

'इससे कुछ अच्छा नहीं होगा, कन्ट्रोलियर ! मैं जानता हूँ कि तुम मेरी बुराई नहीं चाहते, लेकिन मैं उससे शादी करने जा रहा हूँ और यह मेरा निश्चय है । तुम नहीं जानते कि एक पापी से पश्चात्ताप कराने

में क्या सुख मिलता है! और हे भगवान्। वह लड़की पुडिंग कितना अच्छा बनाती है—मैंने तो बचपन में सिर्फ एक बार वैसा पुडिंग खाया था।'

कन्ट्रोलियर बहुत परेशान हो गया था। यह शराबी व्यक्ति ही इस द्वीप पर उसका एकमात्र मित्र था, और उसे वह खोना नहीं चाहता था। उसे लगा कि इसके प्रति उसके मन में स्नेह उमड़ा पड़ रहा है।

दूसरे दिन वह जोन्स से मिलने गया।

'क्या यह सच है कि जिंजर टेड तुम्हारी बहन से शादी करने वाला है?' उसने उससे पूछा—'यह जीवन में सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात मैं सुन रहा हूँ।'

'लेकिन यह सच है।'

'तुम्हें इसके लिये कुछ करना चाहिये! यह पागलपन है!'

'मेरी बहन काफी बड़ी है और वह जो चाहे कर सकती है!'

'किन्तु तुम मुझे यह बताओ कि तुम इसे पसन्द करते हो। तुम जिंजर टेड को जानते हो! वह 'बम' की तरह है, इसमें सन्देह नहीं—तुमने अपनी बहन को बता दिया है कि वह कैसा खेल खेलने जा रही है? मेरा मतलब है, गलती करने वाले को पश्चात्ताप करना······यह सब बातें ठीक हैं किन्तु हर बात की एक सीमा होती है और क्या भेड़िया कभी अपनी आदत बदल सकता है?'

जीवन में पहली बार कन्ट्रोलियर ने जोन्स की आँखों में एक चमक देखी।

'मेरी बहन एक दृढ़ निश्चय वाली स्त्री है। मिस्टर ग्रूटर! उसने उत्तर दिया 'उस रात के बाद, जो उन्होंने उस निर्जन स्थान में बिताई थी, जिंजर को कभी मौका नहीं मिला!'

कन्ट्रोलियर का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

'आश्चर्य !' वह बड़बड़ाया।

और इसके पहले कि कोई कुछ कहता, मिस जोन्स ने कमरे में प्रवेश किया। वह खुश थी और अवस्था में छोटी लग रही थी। उसके कपोल गुलाबी हो रहे थे और नाक लाल थी। 'क्या आप मुझे बधाई देने आये हैं, मिस्टर ग्रूदर ?' उसने खुशी से चिल्लाकर कहा—बिल्कुल बच्चों की तरह मचल कर—'आप देखते हैं न, कि मैंने पहले कितना ठीक निर्णय किया था। हर मनुष्य में कोई न कोई अच्छाई अवश्य होती है। आपको मालूम है, इन सब मुश्किलों और मुसीबतों के दिनों में एडवर्ड कितनी अच्छी तरह रहा है, वह एक संन्यासी है! मुझे भी इस बात पर आश्चर्य हुआ था !'

'मुझे आशा है कि आप बहुत प्रसन्न रहेंगी, मिस जोन्स !'

'मैं जानती हूँ कि ऐसा ही होगा! यदि मैं इस बात पर अविश्वास करूँ तो मुझसे अधिक मूर्ख और कोई नहीं हो सकता। यह भगवान् की कृपा है कि हम एक दूसरे के इतने निकट आ गये हैं।'

'क्या तुम्हारा यही विचार है ?'

'आप क्या ऐसा नहीं सोचते ?' यदि हैजा न फैलता, तो एडवर्ड कभी मेरे समीप न आ पाता, और हम कभी एक दूसरे को समझ न पाते! मैंने भगवान् की ऐसी दया इससे पहले कभी नहीं देखी थी !'

कन्ट्रोलियर ने सोचा कि शायद इसी से छहों भोले-भाले व्यक्तियों की अकाल मृत्यु भी हो गई···किन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

'और आप शायद कभी सोच भी नहीं सकेंगे कि शादी के बाद 'हनीमून' के लिये हम कहाँ जायँगे।' मिस जोन्स ने हलके से मुस्कुरा कर कहा।

'जाना ?'

'नहीं, यदि आप हमें जहाज दे देंगे, तो हम उसी निर्जन द्वीप में जायँगे जहाँ हमने वह रात बिताई थी। इसका हमारे जीवन में बड़ा